हाहारावतन्त्रोक्त

श्रीगुह्यकालीपूजापद्धतिः

अनिमेष नागर

श्रीहाहारावतन्त्रोक्त

गुह्यकालीपूजापद्धतिः

श्रीगुह्यभैरवाश्लिष्टां सर्वमङ्गलराजिताम्।
मातरं जगतां साक्षाद्गुह्यकालीं चिदात्मिकाम्।।

॥श्रीः॥

द्वारकादास इण्डिक सीरीज़
२६

श्रीहाहारावतन्त्रोक्त

गुह्यकालीपूजापद्धतिः

अनिमेष नागर
आगमाचार्य

चौखम्भा क्लासिका
वाराणसी, भारत

श्रीहाहारावतन्त्रोक्त गुह्यकालीपूजापद्धतिः

ISBN: 978-93-91730-78-9
पृष्ठ : २२+१७८

इस ग्रन्थ का प्रकाशनाधिकार प्रकाशक के द्वारा सुरक्षित है। इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का पुनः किसी माध्यम से तैयार होना, सुधार कर आदि किसी पद्धति से संप्रेषण प्रकाशक तथा कॉपीराइट धारक की पूर्व अनुमति के बिना अवैधानिक होगा।

प्रकाशक
चौखम्भा क्लासिका
गोकुलभवन, के. 37/109, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी 221 001(भारत)
फोन न.: +91 542 2332637, मोबाईल: +91 97185 94839, 9648899881
E-mail: ichaukhambha@gmail.com

© चौखम्भा क्लासिका, वाराणसी
प्रथम संस्करण: २०२५
₹ 395/-

अन्य प्राप्ति स्थान
चौखम्भा भारती अकादमी
के. 37/109, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी 221 001 (भारत)
दूरभाष: +91 542 2330349 मोबाईल: +91 9415202472
Email: cbavns@gmail.com
Website: www.chaukhambhabooks.com

चौखम्भा विश्वभारती
गोकुलभवन, के. 37/109, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी 221 001 (भारत)
दूरभाष: +91 542 2330345 मोबाईल: +91 9839603456
Email: cvbvns@gmail.com

2 4 6 8 10 9 7 5 3 1

@iChaukhambha @iChaukhambha @iChaukhambha

मुद्रक: मित्तल ऑफसेट, वाराणसी

अनुक्रमाणिका

पुरोवाक् ७
प्राक्कथन ९
आमुख ११

सपर्याखण्डम्

१. अथगुह्यकालीपूजापद्धतिः २५
२. श्रीगुह्यकालीलघुपूजाविधिः ८४
३. गुह्यकालीपुष्पार्पणकल्पम् ८७

स्वाहाकारखण्डम्

१. संक्षिप्तगुह्यकालीहोमविधिः ९९

स्तोत्रखण्डम्

१. श्रीगुह्यकाल्युपानिषत् १०९
२. श्रीगुह्यकालीकवचम् ११७
३. विश्वमङ्गलगुह्यकालीकवचम् ११९
४. श्रीगुह्यकालीद्वादशनामस्तोत्रम् १२३
5. श्रीगुह्यकालीद्वादशनामावलिः १२४
६. श्रीगुह्यकाल्याः अष्टोत्तशतनामस्तोत्रम् १२५

७. श्रीगुह्यकालीदेव्या:अष्टोत्तशतनामावलिः १२७

८. श्रीगुह्यकालीशतनामस्तोत्रम् १३२

९. श्रीगुह्यकालीलघुसहस्रनामस्तोत्रम् १३५

१०. श्रीगुह्यकालीसहस्रनामस्तोत्रम् १३६

११. श्रीगुह्येश्वरीसहस्रनामस्तोत्रम् १५३

१२. गुह्यकाल्याः सहस्रनामस्तोत्रम् १७१

१३. श्रीगुह्येश्वरीस्तोत्रम् १८९

१४. श्रीगुह्यकालीस्तोत्रम् १९०

१५. श्रीगुह्यकालीक्रमस्तव: १९२

१६. श्रीगुह्यकालीमुक्तावलीस्तोत्रम् १९५

१७. श्रीगुह्यकाल्यामहामायास्तवम् १९७

पुरोवाक्

या सान्तकाग्निकुहरोत्थितभास्वरूपां सोमार्कवह्नित्रिपथोदरमध्यसंस्थाम् ।
चिच्वेदचित्तविषयाख्यविलीनभावां स्वाभावभावितपरां प्रणमामि कालीम् ॥

प्रिय पाठकवृन्द,

सर्वप्रथम भगवती गुह्यकाली के चरणकमल की अभ्यर्थना करता हूं जिनके अनुग्रह से इस ग्रन्थ का प्रकाशन संभव हुआ।

अपने श्रीगुरू त्रय श्रीविमलानन्दनाथ, श्रीआनन्दानन्दनाथ एवं श्रीशिवानन्दनाथ की श्रीपादुकाओं का द्वादशान्त में पुनः पुनः स्मरण करता हूं जिनके अपार अनुग्रह एवं आशीर्वाद से इस ग्रन्थ का प्रणयन हो पाया। अर्धत्र्यम्बकमत की आचार्या माता श्रीप्रभा देवी की श्रीपादुकाओं का हृदय में विमर्श करता हूं। अपने अपर गुरू श्रीकालीदासानन्दनाथ तथा स्व. पं प्रदीप मेहता जी वेदाचार्य के चरणकमलों की वन्दना करता हूं। पुरातत्त्व विषय में अपने गुरू, मार्गदर्शक एवं आचार्य प्रो. (डॉ.) धीरेन्द्र सोलंकी के चरणों में नतमस्तक हूं जिनके द्वारा अहर्निश इस कार्य में मेरा मार्गदर्शन किया गया।

मां चामुण्डा-काली के अनन्य उपासक अपने पितामाह श्रीमोहनलाल नागर (बावजी) एवं पितामही श्रीमति शकुन्तला नागर (बई) के चरणकमलों में नमस्कार करता हूं, जिनके द्वारा बाल्यकाल में ही शाक्त संस्कारों का आधान करने से मैं इस साधना मार्ग का आलम्बन कर पाया। शाक्तमार्ग का बोध करवाने वाले शिवस्वरूप पिता श्री दिलीप नागर एवं शक्ति स्वरूपा माता श्रीमति ज्योति नागर के पदकमलों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं।

अपने गुरूभाई श्रीसुन्दरवेलन् (श्रीदुर्वासानन्दनाथ) द्वारा प्रदान किये गये सहयोग के लिए कृतज्ञ हूं। अपने अग्रज एवं अनन्य मित्र श्रीविकास त्यागी (विष्णुचन्द्र आर्य) के प्रति अत्याधिक आभार प्रकट करता हूं जिनके द्वारा ग्रन्थलेखन में अहर्निश सहयोग किया गया। आपके सहयोग तथा महत्वपूर्ण सुझावों के बिना ग्रन्थ का प्रकाशन असंभव था। अग्रज एवं

मित्र श्रीशिवम तेलंग शास्त्री के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूं जिनके द्वारा कई मूल्यवान सुझाव प्रदान किये गये।

अपने अनुजद्वय चि. रजत नागर एवं चि. आराध्य नागर को इस कार्य में सहायता के लिए विशेष धन्यवाद देता हूं। मां भगवती उभय भ्राताओं पर अपना अनुग्रह करें एवं वे उत्तरोत्तर वृद्धि करें।

मैं सर्वाधिक आभारी हूं अपने प्रकाशक 'चौखम्बा क्लासिका', वाराणसी' के श्रीयुत श्रेयस गुप्ता एवं समस्त परिवार का जिनके सहयोग के बिना यह प्रकाशन कार्य असम्भव था। आपके द्वारा ग्रन्थ के प्रणयन से प्रकाशन पर्यन्त काल में विशिष्ट सहयोग प्रदान किया गया।

सुधीजनों के श्रीहस्तों में 'श्रीहाहारावतन्त्रोक्त गुह्यकालीपूजापद्धति' समर्पित है। इस पुस्तक को प्रकाशित करवाने में सहयोग प्रदान करने वाले उल्लिखितानुलिखित समस्त जनों के प्रति हृदय से साधुवाद ज्ञापित करता हूं। इस ग्रन्थ के प्रकाशन से सारस्वत-विद्वत् समाज तथा साधक समाज का उत्कर्ष हो इसी कामाना के साथ श्रीगुह्यकालीदेव्यार्पणमस्तु।।

अश्विन शुक्ल अष्टमी,
सप्तर्षि संवत् ५०९९

विदुषां वशंवद
अनिमेष नागर
संस्थापक- कालीक्रम प्रचारिणी सभा, उज्जैन

प्राक्कथन

प्राचीनकाल से भारतभूमि में शक्ति उपासना होती आई है। ताम्रष्म संस्कृति के समय की मृण्मयी मातृदेवी प्रतिमाएं प्राप्त होती हैं जो संकेतक है तत्कालीन शक्ति/मातृ उपसना की। भारत की प्राचीन सभ्यता के मूलग्रन्थ चार वेद है, इन्हीं चार वेदों में अथर्वणवेद तन्त्रागम का मूल है। ऋग्वेद का ऋषि अदिती, सरस्वती, राका, कुहु, वाक्, रात्रि आदि स्वरूपों में महाशक्ति की वन्दना करता है, खिलभाग का श्रीसूक्त तो विश्व प्रसिद्ध है ही। यजुर्वेद में रूद्रस्वसा, अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका आदि का वर्णन प्राप्त होता है। सामवेद के सामविधान ब्राह्मण का 'रात्रिसाम' सामगों में प्रसिद्ध है। अथर्वणवेद के सौभाग्यकाण्ड को शाक्तागमों का मूल माना गया है, तत्कारण शाक्तागमों का प्रामाण्य सहज ही सिद्ध होता है। अथर्वणवेद में ऐहिक तथा आमुष्मिक फलप्रदान करने वाली विविध उपासनाओं का वर्णन प्राप्त होता है।

भारतीय अवधारणा है कि जब जीव निगमोचित उपसना करने में अक्षम हो जाता है तब परमकारूणिक भगवान् परमशिव अपने पांच प्रकट तथा एक रहस्यमुख से आगमों का प्राकट्य करते हैं। इस प्रकार पंचस्रोत तथा कुलनय के आगमशास्त्रों का आविर्भाव होता है जिनका आलम्बन कर अणु शीघ्र ही भुक्ति तथा मुक्ति का लाभ करता है। आगमिक सम्प्रदाय के उत्कर्ष के साथ तन्त्रोपासना की प्रसिद्धि हुई। विविध आगमिक सम्प्रदायों में अपने-अपने इष्टदेवता के एकाक्षर से लेकर लक्षाक्षर पर्यन्त के नाना मन्त्रों का प्रचलन रहा है। विविध आगमिक सम्प्रदायों में कालीक्रम चूड़ामणि के समान स्थित है। इस सम्प्रदाय में परतत्त्व को 'काली' की अभिधा से कहा गया है।

'काली' पद से विश्वरूप में परिणीत होने हेतु भैरव में उठी प्रथम ऊर्मी अथवा आद्य स्पन्द का बोध होता है। काली वह महाशक्ति है जो विश्व को सृष्टि, स्थिति एवं संहार के क्रम से गति प्रदान करती है। अनुग्रह शक्ति के द्वारा विश्वात्मक एवं विश्वोत्तीर्ण परमतत्त्व का ज्ञान करवाती है। विश्व का क्षेपण एवं गणन कर अन्त में स्वात्म में लय कर लेती है।

कालीकुल में भगवती काली की उपासना चिन्तामणिकाली, स्पर्शमणिकाली, सन्ततिप्रदाकाली, सिद्धिकाली, दक्षिणाकाली, कामकलाकाली, हंसकाली तथा गुह्यकाली आदि स्वरूपों में की जाती है। इनमें भी भगवती का गुह्यकाली स्वरूप सर्वोत्कृष्ट है।

महाकालसंहिता के अनुसार रावण, श्रीरामचन्द्र, भरत जी, च्यवनमहर्षि, हिरण्यकशिपू, ब्रह्मा, वशिष्ट, कामदेव, पावक, आदित्य, शचि, दानव, मृत्य एवं काल, हारीत महर्षि, ऋषि जाबाल तथा दक्ष प्रजापति आदि के द्वारा भोग एवं मोक्ष की सिद्धि हेतु इनकी उपासना की गई। इनके अतिरिक्त भी कई ऋषियों, मुनियों, सिद्धजन, योगिनीगण, गीर्वाणगण तथा मानवों द्वारा भगवती की उपासना की गई है। भगवती अपने उपासक को सहज ही भुक्ति तथा मुक्ति प्रदान करती है। साधक का इहलोक तथा परलोक उभय सिद्ध होता है।

यह हर्ष का विषय है कि पण्डित अनिमेश नागर के द्वारा हाहारावतन्त्र के अनुसार माता गुह्यकाली के पूजाविधान का संकलन कर प्रकाशित किया जा रहा है। इस पद्धति ग्रन्थ में तन्त्रप्रक्रिया के अनुसार देवी गुह्यकाली का सविस्तार पूजन, गुह्यकाली यन्त्र पर षोडशावरण पूजा, बलिदान, मन्त्रजप विधान आदि दिया गया है। सुकुमार साधकों के हितार्थ लघुपूजा के विधान को भी संकलित किया गया है जो ग्रन्थ की उपादेयता बढ़ा देता है। विविध कामनाओं की पूर्ति के लिए पुष्पार्पणकल्प का वर्णन किया है।

देवी गुह्यकाली के यज्ञ को करने वाले साधकों के लिए स्पष्ट एवं सरल होमविधान का सन्निवेश किया गया है जो प्रशंसनीय है। स्तोत्रखण्ड में देवी गुह्यकाली के तीन सहस्रनाम, दो कवच एवं अनेको दुर्लभ स्तोत्रों का संकलन किया गया है। पुष्पार्चन तथा कुंकुमार्चन के लिए दशनामावलि एवं अष्टोत्तरशतनामावलि भी संकलित है। परम्परा से उपदेश प्राप्त साधकों के लिए सभी निर्देश स्पष्ट एवं सहजभाषा में दिये गये है। आपका प्रयास बहुत सुन्दर है। मेरी ओर से लेखक को शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद।

महामाहेश्वेराचार्य अभिनवगुप्त जयन्ती,
ज्येष्ठ कृष्ण दशमी,
विक्रम संवत २०७८

गुरूकृपावगाहिनी
प्रभा देवी

आमुख

प्राचीन काल से भारतभूमि पर शक्ति उपासना प्रचलित रही है। रूचिभेद के कारण साधक महाशक्ति के विविध स्वरूपों की उपासना करते है, इन्हीं स्वरूपों में मां का एक स्वरूप है- 'काली'। आप दशमहाविद्याओं में अग्रगणित है।

वैदिक वांगमय में भगवती काली का उल्लेख अथर्वणवेदीय 'मुण्डकोपनिषत्' में आया है। यहा काली को अग्नि (कालाग्निभैरव) की सप्त जिह्वाओं (शक्तियों) में संगणित किया गया है। यही मन्त्र अथर्वणवेदीय कुब्जिकोपनिषत् में भी प्राप्त होता है।

अथर्वणवेद के पंचकल्प आचार्यों ने माने है- १. नक्षत्रकल्प २. वितानकल्प(श्रौतसूत्र) ३. संहिताकल्प (ग्रह्यसूत्र) ४. अंगिरसकल्प तथा ५. शान्तिकल्प। आचार्य दारिलकेशव ने कौशिकसूत्र पर अपने व्याख्यान में उपवर्शाचार्य का उल्लेख किया है। उपवर्शाचार्य इन पांच कल्पों को श्रुति तुल्य मानते है।[1] इन्हीं पंचकल्पों में एक आंगिरसकल्प में भगवती काली, महाकाली तथा भद्रकाली के विधानों का वर्णन प्राप्त.होता है। आद्ययजुर्वेद की कठशाखा के काठकग्रह्यसूत्र में काली तथा भद्रकाली का नामोल्लेख प्राप्त होता है।[2] बौधायनग्रह्य के शेषसूत्र के तृतीय अध्याय के दुर्गाकल्प में महाकाली का नामोल्लेख प्राप्त होता है।[3] अथर्वणवेद के सौभाग्यकाण्ड के अन्तर्गत आने वाली कालिकोपनिषत्, कालीमेधादीक्षितोपनिषत्, गुह्यकाल्युपनिषत्, कुब्जिकोपनिषत्, षोढोपनिषत्, हंसषोढोपनिषत् तथा गुह्यषोढोपनिषत् में भगवती काली का सविस्तार वर्णन किया गया है। इन उपनिषदों में प्रकटरूप से श्रौत काली उपासना का वर्णन प्राप्त होता है।

१ उपवर्षाचार्येणोक्तं मीमांसायां स्मृतिपादे कल्पसूत्राधिकरणे नक्षत्रकल्पो वितानकल्पः तृतीयः संहिताकल्पश्चतुर्थों अंगिरसकल्पः शान्तिकल्पस्तु पंचमः । एते कल्पा वेदतुल्या हि इति भगवानुपवर्षाचार्येण प्रतिपादितम्। अन्ये कल्पाः स्मृतितुल्याः ।

२ अग्निं सोम वरूण मित्रमिन्द्रबृहस्पति....भगनक्षत्राणि काली षष्ठी भद्रकालीं पूषणत्वष्टार महिशिका च गन्धाहुतिभिर्यजेत् ।। काठकग्रह्यसूत्र 19.2.7

३ आर्यायै, रौद्रयै महाकाल्यै महायोगिन्यै..... । बौधायनशेषसूत्र 3.3

अभिधानिरूक्ति

भगवती की 'गुह्यकाली' अभिधा दो पदों के योग से बनी है गुह्य+काली। 'गुह्य' पद से अत्यन्त गोपनीय, गुप्ततर, रहस्य आदि अर्थो का बोध होता है। 'काली' पद √कल धातु से निर्मित है। क्रमाचार्य श्रीभूतिराज के अनुसार √कल धातु गति, क्षेप, ज्ञान, गणन, शब्दन (स्पन्दन) एवं स्वात्मलयीकरण के अर्थ में प्रयुक्त होती है। क्षेप तथा ज्ञान के सन्दर्भ में महाशक्ति को काली कहा गया है। काल का कलन करने के कारण देवी को 'काली' कहा गया है।[4]

महामाहेश्वराचार्य अभिनवगुप्त ने तन्त्रालोक के चतुर्थ आह्निक में कल √कल धातु के पंचार्थ का विस्तार से वर्णन किया है।

१. कल क्षेपे। क्षेप का अर्थ है फेंकना अर्थात् वह महाशक्ति जो अपने ही स्वरूप होकर जगत् को भिन्नरूपता से प्रकाशित करती है उसे काली की अभिधा से कहा गया है।

२. कल गतौ (ज्ञाने)। कल धातु ज्ञान के अर्थ में भी प्रयुक्त होती है। वह महाशक्ति जो अपने स्वरूप से भिन्न जगत् को भी अपनी ही अनर्गल स्वातन्त्र्यशक्ति से पुनः स्वरूपमय बोध करवाने से काली कही गयी है।

३. कल संख्याने। संख्यान का अर्थ है विकल्प करने के रूप में, कैसा विकल्प? वह शक्ति जो जागतिक पदार्थों को अपने स्वातन्त्र्य द्वारा स्वरूप से अलग ठहराकर पुनः एक दुसरे के ज्ञान से वंचन करती है। यह घट है यह घट नहीं है इत्यादि। इस प्रकार का नियामन करवाने वाली शक्ति काली कही गयी है।

४. कलगतौ (प्राप्तौ च)। कल धातु प्राप्ति के विषय में भी प्रयुक्त होती है। प्राप्ति अर्थात् रूढ़ होना या पहुचना या अनुभूत होना। वह शक्ति जो स्वात्मदर्पण में ठहरे हुए जगत् के भिन्न होने पर भी उस जगत् को स्वात्मरूपतया ही संस्थापित करती है वही भगवती काली की अभिघा से कही जाती है।

५. कल शब्दे। वह शक्ति जो निर्विकल्प तथा सविकल्प समग्र ज्ञान का परामर्श पंचकृत्यो (सृष्टि, स्थिति, संहार, भासा तथा अनाख्या) के रूप में करती है

---

४ कलनं च – गतिः, क्षेपो, ज्ञानं, गणनं, भोगीकरणं, शब्दनं स्वात्मलयीकरणं च। यदाहुः श्रीभूतिराजगुरूवः:- क्षेपाज्ज्ञानाच्च काली कलनवशतयाथ॥ तन्त्रसार 4 आह्निक, पृ.139

तदनन्तर उस सम्पूर्ण ज्ञान को अपनी ही स्वरूप परामर्शात्मिका तुरीय सत्ता में लवलीन करती है तत्कारण काली कही गयी हैं।

आथर्वणीश्रुति में भी कहा गया है "काल के कलन के कारण काली कहा गया है।"5

'काली' पद से विश्वरूप में परिणीत होने हेतु भैरव में उठी प्रथम ऊर्मी अथवा आद्य स्पन्द का बोध होता है। काली वह महाशक्ति है जो विश्व को सृष्टि, स्थिति एवं संहार के क्रम से गति प्रदान करती है। अनुग्रह शक्ति के द्वारा विश्वात्मक एवं विश्वोत्तीर्ण परमतत्त्व का ज्ञान करवाती है। विश्व का क्षेपण एवं गणन कर अन्त में स्वात्म में लय कर लेती है।

श्रीवाजसनेय शास्त्र के अनुसार वह महाशक्ति सर्वोत्कृष्ट भूमि पर अवस्थित परा, स्थूल रूप से गुप्त होकर सूक्ष्म रूप से सर्वत्र व्याप्त, समस्त प्रकार के मल से रहित निर्मला एवं परमशिव की वामा शिवा कही गयी है।

महानिर्वाणतन्त्र के अनुसार महाकाल महाप्रलय के समय समस्त पदार्थों का ग्रसन करते है। सभी भूतों के कलन के कारण इन्हें महाकाल कहा जाता है। महाकाल का भी ग्रसन करने के कारण देवी को आद्या, कालिका तथा परा कहा गया है। काल का संग्रसन करने से देवी को काली कहा गया है। सबका कालत्व होने तथा आदिभूतत्व होने से आद्या काली कही गयी हैं।6

मुण्डमालातन्त्र के अनुसार भगवती काल पर नियन्त्रण करने से काली तथा तथा काल का मर्दन करने से कराला कही गयी हैं।7

कामधेनूतन्त्र में भगवती के नाम की निरूक्ति इस प्रकार की गई है- काल का संकलन करने से, काल का ग्रास करने से देवी को काली कहा गया है।8

कालीतन्त्र के एकादशपटलानुसार काल पर नियन्त्रण करने से (शासन करने से) तथा आत्मज्ञान प्रदान करने से काली कही गयी हैं।9

५ गुह्यशोढान्यासोपनिशदे- कालसंकलनात् कालीं ॥

६ तव रूपं महाकालो जगत्संहारकारकः । महासंहारसमये कालः सर्वं ग्रसिश्यति ॥
कलनात्सर्वभूतानां महाकालः प्रकीर्तितः । महाकालस्यकलानात्त्वमाद्या कालिका परा ॥
कालसंग्रसनात्काली सर्वेशाादिरूपिणी । कालत्वादादिभूतत्वादाद्याकालीति गीयते ॥
महानिर्वाणतन्त्र 4.30-32

७ कालस्य यन्त्रणात् काली कराला कालमर्दनीम् ॥ मुण्डमालातन्त्र 34.56अ

८ कालसंकलनात् काली कालगाऽसं करोत्यतः ॥

९ कालः नियन्त्रणात् काली ज्ञानतत्त्वप्रदायिनी ॥ कालीतन्त्र 11.18अ

वाराहीतन्त्र के अनुसार ब्रह्मा से स्थावर पर्यन्त समस्त जन्तुओं का कलन (संहार) काल करता है, इस काल का भी कलन करने वाली कालिका अथवा काली कही गयी हैं।10

देव्रीपुराण के अनुसार काल के कलन तथा विश्व के संख्यन (नियामन) के कारण इन्हें काली कहा गया है।11 देवी भागवतम् के अनुसार जो रुष्ट होने पर क्षणमात्र में विश्व का संहार करने में समर्थ है, शक्ति के उसी स्वरूप को काली कहा गया है।12 महासाधक श्रीश्रीवामाखेपा के अनुसार काल के भय को दुर कर जीव की रक्षा करने से महाशक्ति को काली कहा गया है।13

कटपयादि पद्धति के अनुसार 'काली' पद का अनुशीलन करने पर १३ की संख्या का बोध होता है जो कालीनय की तेरहकालियों का संकेतक है। मातृकासंकेतपद्धति के 'काली' पद क्+आ+ल्+ई इन चार वर्णों के योग से बना है। इन वर्णों के रहस्य संकेत निम्न है-

क्रमांक	वर्ण	रहस्यार्थ
१.	क्	परब्रह्म
२.	आ	अनन्त,व्यापक,विस्तीर्ण
३.	ल्	विश्वात्मा
४.	ई	सूक्ष्म, कामकला

इस प्रकार काली पद से आद्यान्तरहित, अनन्त, व्यापक, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, तथा विश्वात्मक परमब्रह्म का बोध होता है।

भगवती काली के स्वरूपभेद

महामाया काली अपने देवताओं के कार्यों की सिद्धि के लिए तथा अपने साधकों पर अनुग्रह वर्षण के लिए विविध स्वरूपों को ग्रहण करती है। इन स्वरूपों को धारण करने के पीछे भगवती की असीम करूणा तथा अनुग्रह है। विभिन्न आगमों की परम्परा में भगवती काली के नाना स्वरूपों का वर्णन प्राप्त होता है।

---

१० आब्रह्म स्थावरान्ता च कालेन कलयन्ति च। तं कालं कलयेत् काली ततः सा कालिका स्मृताः ॥

११ ....। कलना कालसंख्या वा काली देवेशु गीयते ॥ देवीपुराण 37.4

१२ रुष्टा क्षणेन संहर्तु शक्ताविश्वं महेश्वरी । प्रधानांश स्वरूपा सा कालीकमललोचना ॥ देवीभागवतम् 9.11.87

१३ अघोरपन्थ का निरूपण, पृश्ठ 52

'पुरश्चर्यार्णव' में काली के दक्षिणाकाली, भद्रकाली, श्माशानकाली, कामकलाकाली, गुह्यकाली, धनकाली,सिद्धिकाली तथा चण्डकाली इन आठ स्वरूपों का उल्लेख आया है।

'महासम्मोहनतन्त्र' की परम्परा में स्पर्शमणिकाली, चिन्तामणिकाली, सिद्धकाली, विद्याराज्ञी, कामकलाकाली, हंसकाली तथा गुह्यकाली यह आठ स्वरूप माने गये है।

'तन्त्रान्तर' में चिन्तामणिकाली, स्पर्शमणिकाली, सन्ततिप्रदाकाली, सिद्धिकाली, दक्षिणाकाली, कामकलाकाली, हंसकाली तथा गुह्यकाली यह आठ भेद माने गये है।

'जयद्रथयामल' में काली के भाग्याधिरोहिणीकाली, मृत्युध्वजाकाली, पापान्तकारिणीकाली, कुबेरजननीकाली, स्वच्छन्दमाताकाली, ऋक्षकाली, घोरकाली, सप्तकोटेश्वरीकाली, नागकाली, मेघकाली आदि शताधिक स्वरूपों का वर्णन प्राप्त होता है।

'महाकालसंहिता' की परम्परा में दक्षिणकाली, भद्रकाली, श्मशानकाली, महाकाली, गुह्यकाली, कामकलाकाली, धनकाली, सिद्धिकाली तथा चण्डकाली इन नवकालियों की अवधारणा है।

'वडवानलतन्त्र' में सिद्धलक्ष्मी, गुह्यकाली, सिद्धिकराली, चण्डयोगेशी, कामकलाकाली, महाकाली, पंचवक्त्राकाली, तुम्बुरेश्वरी, कालसंकर्शिणी, प्रत्यंगिरा, कालरात्रि, सिद्धभैरवी, रक्तकापालिनी, चण्डकापालिनी, महाभीमसरस्वती, महाडामरेश्वरी, त्रिशक्तितारा, भद्रकाली, उग्रकाली,कालकाली, कृतान्तकाली, संहारकाली, कालान्तकाली, कल्पान्तकाली, भीमकाली, फेत्कारिणी, चण्डकुक्कुरी, जयमंगला, धूमावती, स्वर्णकोटेशी, नवकुलेशी, कापालिनी, झिण्टेशी, छिन्नमस्ता, श्मशानकाली तथा श्वेतचामुण्डा यह छत्तीस भेद उत्तराम्नाय की कालियों के कहे गये है।

'कालीकुलपंचशतिक' तथा 'देवीद्व्यर्धशतिका' में सृष्टिकाली, स्थितिकाली, संहारकाली, रक्तकाली, सुकाली, यमकाली, मृत्युकाली, भद्रकाली, परमार्ककाली, मार्तण्डकाली, कालाग्निरूद्रकाली, महाकाली तथा महाभैरवघोरचण्डकाली यह तेरह स्वरूप माने गये है।

'क्रमसद्भाव' आगम की परम्परा में सृष्टिकाली, स्थितिकाली, संहारकाली, रक्तकाली, सुकाली, यमकाली, मृत्युकाली, भद्रकाली, परमार्ककाली, मार्तण्डकाली, कालाग्निरूद्रकाली, महाकाली, कृशाकाली, सर्वान्तकाली, शिवकाली, क्रोधकाली तथा महाभैरवघोरचण्डकाली इन सत्रह स्वरूपों की अवधारणा है।

'परातन्त्र' की परम्परा में सृष्टिकाली, स्थितिकाली, संहारकाली, अनाख्याकाली तथा भासाकाली इन पंचकालियों की मान्यता है।

नेपाली तन्त्र परम्परा में गुह्येश्वरी, वज्रेश्वरी, राजेश्वरी, कंकेश्वरी, भुवनेश्वरी, मंगलेश्वरी, वत्सलेश्वरी, राजेश्वरी तथा जयावागेश्वरी यह नेपाल की नवकालियां मानी गयी हैं।

'कालीमेधादीक्षितोपनिषत्' के दीक्षाक्रम में गुह्यकाली कालीकुल की सर्वोच्चविद्या है। साधक को सर्वप्रथम स्पर्शमणिकाली की दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए, तदनन्तर चिन्तामणिकाली एवं सिद्धिकाली के मन्त्र का साधन करना चाहिए। इसके पश्चात् विद्याराज्ञी के मन्त्र का जप करना चाहिए। पुनः परारूपिणी कामकलाकाली का मन्त्र ग्रहण करना चाहिए। तत्पश्चात् चरणदीक्षारूप हंसकाली का यजन करना चाहिए। इसके पश्चात् रक्त,शुक्ल,मिश्र तथा निवार्ण यह चरणचतुष्टय ग्रहण करने चाहिए। इसके पश्चात् सर्वनिर्वाणदीक्षा ग्रहण करनी चाहिए। पुनः शाम्भवी विद्या को ग्रहण करना चाहिए। सर्वान्त में गुह्यकाली के मन्त्र को ग्रहण कर निज शिवता का अनुभव करना चाहिए। इस प्रकार हम पाते हैं कि कालीकुल के मन्त्रों में गुह्यकाली का स्थान सर्वोत्कृष्ट है।

गुह्यकाली उपासना क्रम:

भगवती गुह्यकाली- गुह्यकाली उपासना के पांच प्रधान क्रम है:

१. विश्वसारतन्त्रोक्त क्रम
२. वडवानलतन्त्रोक्त क्रम
३. हाहारावतन्त्रोक्त क्रम
४. महाकालसंहितोक्त क्रम
5. करवीरयागतन्त्रोक्तक्रम

इनमें विश्वसारतन्त्रोक्त क्रम का प्रसार गौड़ देश में था। महाकालसंहितोक्त क्रम मिथिला, नेपाल तथा गौड़देश के भाग विशेष में प्रचलित था। करवीरयागतन्त्र, हाहारावतन्त्र तथा वडवानलतन्त्र के क्रम का प्रसार नेपालदेश में था। प्रस्तुत पद्धतिग्रन्थ हाहारावतन्त्र के क्रम पर आधारित है।

गुह्यकाली का स्वरूप:

भगवती गुह्यकाली के अनेक स्वरूप तन्त्रशास्त्र में निर्दिष्ट किये गये है, इन स्वरूपों को त्रिविध वर्गीकृत किया जा सकता है।

१. निर्गुण, निर्विकार, गुणातीत, निष्प्रपञ्च स्वरूप

२. विश्वात्मक महागुह्यकाली स्वरूप

३. सगुण स्वरूप

सगुण स्वरूपों में मां गुह्यकाली के एकवक्त्रा से लेकर लक्शवक्त्रा पर्यन्त विग्रह है जो कि दो से लेकर दो लक्ष भुजाओं से शोभायमान है। महाकालसंहिता में शतशीर्शा गुह्यकाली का ध्यान प्राप्त होता है। देवी के इन विविधिं स्वरूपों में दशमुखा स्वरूप का प्राधान्य है। कुछ परम्पराओं में दश के स्थान में नवमुख माने गये है, यहां निर्वाणवक्त्र संगणित नहीं होता।

दशमुखा गुह्यकाली के विविध स्वरूपों में भी भगवती के दो प्रमुख स्वरूप है:

१. दशमुखा-अष्टभुजा गुह्यकाली

इस स्वरूप में देवी के निर्वाणमुख, सिंहमुख, फेरूमुख, कपिमुख, भल्लुकमुख, तार्क्ष्यमुख, मकरमुख, हयमुख, गजमुख तथा कालिकामुख यह दश मुख है।

देवी अपनी आठ भुजाओं में कपाल, पाश, अंकुश, अमृतबालक, त्रिशूल, वज्र, मुद्गर तथा खट्वांग धारण करती है।

देवी गुह्यकाली भैरवासन, शिवासन, सदाशिवासन, ईश्वेरासन, रूद्रासन, विश्णवासन, ब्रह्मासन इन सप्त प्रेतासनों पर शोभायमान है। इनके नीचे बीस मुण्डासन है। इनमे सर्वप्रथम कृतयुगमुण्डासन, त्रेतायुगमुण्डासन, द्वापरयुगमुण्डासन तथा कलियुगमुण्डासन, यह चार 'चतुर्युगमुण्डासन' है। इनके पश्चात् ऋग्वेदमुण्डासन, यजुर्वेदमुण्डासन, सामवेदमुण्डासन तथा अथर्ववेदमुण्डासन यह चार 'चतुर्वेदमुण्डासन' है। इनके पश्चात् इन्द्रमुण्डासन, अग्निमुण्डासन, यममुण्डासन, नैर्ऋतिमुण्डासन, वरूणमुण्डासन, वायुमुण्डासन, कुबेरमुण्डासन, ईशानमुण्डासन, ब्रह्ममुण्डासन तथ अनन्तमुण्डासन यह 'दशदिक्पालमुण्डासन' है। इनमें अतिरिक्त 'सृष्टिमुण्डासन' एवं 'संहारमुण्डासन' यह दो अपर आसन है। इस प्रकार देवी गुह्यकाली के सताईस आसन है।

२. दशमुखा-अष्टोत्तरशतार्धभुजा गुह्यकाली-

इस स्वरूप में देवी के निर्वाणमुख, सिंहमुख, फेरूमुख, कपिमुख, भल्लुकमुख, तार्क्ष्यमुख, मकरमुख, हयमुख, गजमुख तथा कालिकामुख यह दश मुख है।

देवी अपनी चौवन भुजाओं में कपाल, खड्ग, पाश, शक्ति, खट्वांग, मुण्ड, कोदण्ड,

चक्र, घण्टा, बालप्रेत, शैल, कंकाल, नकुल, सर्प, कुट्टनी, वंश, शडस्र, डोडिका, वह्निपात्र, त्रिदण्ड, सुरव, अष्टार, सिंह, वस्त्र, मुद्गर, डमरू, श्रींकार, अभय, कर्त्तिका, तर्जनी, अंकुश, दण्ड, कलश, त्रिशूल, बाण, पद्म, पुस्तक, कुन्त, पारिजात, छुरिका, तोमर, पुष्पमाला, डिंण्डिम, गृध्र, स्वस्तिक, वर्धनी, कमण्डलु, स्रुच, पांशमुष्टि, नन्द्यावर्त, कुण्डल, मांसखण्ड, फल तथा सूचि धारण करती है।

देवी गुह्यकाली भैरवासन, शिवासन, सदाशिवासन, ईश्वेरासन, रूद्रासन, विश्णवासन, ब्रह्मासन इन सप्त प्रेतासनों पर शोभायमान है। इनके नीचे बीस मुण्डासन है। इनमे सर्वप्रथम कृतयुगमुण्डासन, त्रेतायुगमुण्डासन, द्वापरयुगमुण्डासन तथा कलियुगमुण्डासन, यह चार 'चतुर्युगमुण्डासन' है। इनके पश्चात् ऋग्वेदमुण्डासन, यजुर्वेदमुण्डासन, सामवेदमुण्डासन तथा अथर्ववेदमुण्डासन यह चार 'चतुर्वेदमुण्डासन' है। इनके पश्चात् इन्द्रमुण्डासन, अग्निमुण्डासन, यममुण्डासन, नैर्ऋतिमुण्डासन, वरूणमुण्डासन, वायुमुण्डासन, कुबेरमुण्डासन, ईशानमुण्डासन, ब्रह्ममुण्डासन तथ अनन्तमुण्डासन यह 'दशदिक्पालमुण्डासन' है। इनमें अतिरिक्त 'सृष्टिमुण्डासन' एवं 'संहारमुण्डासन' यह दो अपर आसन है। इस प्रकार देवी गुह्यकाली के सताईस आसन है।

भगवती के दशमुखों से दश प्रकार के आगम निसृत होते है, इनका वर्णन निम्न तालिका में दिया गया है-

क्र.	वक्त्र	तन्त्र
१.	ज्योतिर्मयवक्त्र	विज्ञानानन्दतन्त्र
२.	सिंहमुख	सिद्धितन्त्र
३.	फेरूमुख	कालतन्त्र
४.	कपिमुख	महाकालतन्त्र
५.	भल्लुकमुख	ऋद्धितन्त्र
६.	तार्क्ष्यमुख	खेचरीतन्त्र
७.	मकरमुख	सप्तार्णवतन्त्र
८.	हयमुख	वडवानलतन्त्र
९.	गजमुख	वक्रतुण्डगणपतितन्त्र
१०.	कालिकामुख	महालिंगमुद्रातन्त्र

गुह्यकाली के भैरवः

भगवती गुह्यकाली के भैरव के विषय में आचार्यों में मतभेद है। पुरातन अक्षुण्ण परम्परा वाले आचार्य गुह्यमहाभैरव अथवा गुह्येश्वरभैरव को इनका भैरव मानते है। अपर परम्परा के आचार्य महाचण्डभैरव (अष्टभैरवों में संगणित चण्डभैरव से भिन्न) को इनका भैरव मानते है। एक अन्य परम्परा में वडवानलभैरव को इनका भैरव माना गया है।

महाकालसंहिता की परम्परा में ज्वालामाली नृसिंह को इनका भैरव माना गया है। आख्यान आता है कि कालाग्निरूद्र महेश्वर अपने सौम्यरूप में गुह्यकाली के निकट जाने में असमर्थ हुए तो इनके द्वारा नृसिंह का उग्रस्वरूप धारण किया गया। इस उग्र स्वरूप में इनका देवी से संघट्ट हुआ। यहां ध्यान रखना चाहिए कि ज्वालामाली नृसिंह वैष्णववनृसिंह मूर्ति न होकर भगवान कालाग्निरूद्र द्वारा धृत शैवनृसिंहमूर्ति है। वैष्णव नृसिंह तथा इनमें भेद है। वैष्णव नृसिंह को इनका भैरव मानना अशास्त्रीय एवं परम्परा के विरूद्ध है।

गुह्यकाली के उपासक

महाकालसंहिता में भगवती गुह्यकाली के विविध उपासकों का वर्णन प्राप्त होता है। इनमें रावण, श्रीरामचन्द्र, भरत जी, च्यवनमहर्षि, हिरण्यकशिपू, ब्रह्मा, वशिष्ट, कामदेव, पावक, आदित्य, शचि, दानव, मृत्य एवं काल, हारीत महर्षि, ऋषि जाबाल तथा दक्ष प्रजापति प्रधान है। इनके अतिरिक्त भी कई ऋषियों, मुनियों, सिद्धजन, योगिनीगण, गीर्वाणगण तथा मानवों द्वारा भगवती की उपासना की गई है। भगवती अपने उपासक को सहज ही भुक्ति तथा मुक्ति प्रदान करती है। साधक का इहलोक तथा परलोक उभय सिद्ध होता है।

गुह्यकाली के विविध मन्त्र

नाना प्रकार के साधकों के द्वारा विविध मन्त्रों का साक्षात्कार करके भगवती गुह्यकाली की उपासना की गई। भगवती गुह्यकाली के समस्त मन्त्रों में रामोपासिता विद्या तथा भरतोपासिता विद्या का प्राधान्य है। प्रस्तुत पद्धतिग्रन्थ इन्हीं दो मन्त्रों पर आधारित है।

इन दो विद्याओं के अतिरिक्त एकाक्षरमन्त्र, कामोपासित विद्या, वरूणोपासित विद्या, अनलोपासित विद्या, अर्कोपासित विद्या, शच्युपासित विद्या, दानवोपासित विद्या, मृत्युकालोपासित विद्या, च्यवनोपासित विद्या, हारीतोपासित विद्या, जाबालोपासित विद्या, दक्षोपासित विद्या, हरिण्यकशिपूपास्य मन्त्र, ब्रह्मोपासित विद्या, वसिश्ठोपासित विद्या,

विश्णुतत्त्वतन्त्र, अम्बाहृदयमन्त्र, रूद्रोपासित शोडषी, विश्वेदेवेपासित विद्या, रावणोपासित सप्तदशाक्षरी, रावणोपासित छत्तीसी मन्त्र, समयभोगविद्या, शताक्षरमन्त्र, सहस्राक्षरमन्त्र, विश्णुपासित अयुताक्षरमन्त्र, शिवोपासित अयुताक्षरमन्त्र, शाम्भवमन्त्र, महाशाम्भवमन्त्र, तुरीयमन्त्र, महातुरीयमन्त्र, निर्वाणमन्त्र तथा महानिर्वाणमन्त्र भी उपलब्ध होते है। उपरोक्त मन्त्रों में गुरूपरम्परा से यथाधिकार उपदेश ग्रहण करके साधना करनी चाहिए।

गुह्यकाली के विविध यन्त्र

महाकालसंहिता आदि ग्रन्थों में देवी गुह्यकाली के विविध यन्त्रों का विवरण प्राप्त होता है। प्रस्तुत पद्धतिग्रन्थ में हाहारावतन्त्र में कथित शोडषावरण पूजा में प्रयुक्त यन्त्र का सन्निवेश किया गया है। इस यन्त्र के लेखन का विधान पद्धति में ही दिया गया है। अन्य यन्त्रों का विवरण महाकालसंहिता में वर्णित है, उनके विषय में वहीं अवलोकन करना चाहिए।

भगवती गुह्यकाली- एक सामान्य परिचय		
क्र.	आयाम	विवरण
१.	अभिधा	गुह्यकाली, गुह्येश्वरी, गुह्यचण्डी
२.	आम्नाय	उत्तराम्नाय
३.	क्रम	कालीक्रम, गुह्यक्रम
४.	भैरव	गुह्यभैरव, महाचण्डभैरव, कालाग्निरूद्रभैरव
५.	गणपति	वक्त्रतुण्डगणपति, गुह्यगणपति, सिद्धिश्मशानमहापीठ-प्रेतपद्मनिशण शक्ति गणपति
६.	वटुक	गुह्यवटुक, हेतुकवटुक
७.	विश्णु	नरसिंह
८.	प्रधानविद्या	रामोपासिता, भरतोपासिता
९.	मुख	१०
१०.	भुजाएं	८
११.	आसन	सप्तप्रेतासन
१२.	आसनपक्ष	सप्तविंशति आसन
१३.	पीठ	नेपाल
१४.	क्षेत्रपाल	पशुपति भट्टारक
१५.	आचार	वीराचार, भैरवाचार, स्वच्छन्दाचार

१६.	विशिष्ट तिथि	कृष्णपक्ष अष्टमी एवं चतुर्दशी
१७.	विशेष वार	मंगलवार, शुक्रवार
१८.	तन्त्रागम	महाकालसंहिता, वडवानलतन्त्र, हाहारावतन्त्र, करवीरयागतन्त्र, गुह्यकालीतन्त्र आदि
१९.	माला	महाशंखमाला, स्फटिक माला
२०.	साधनास्थल	निर्जन स्थान, श्मशान

हाहारावतन्त्रोक्त गुह्यकालीपूजापद्धति की विषयवस्तु:

पद्धति के आरम्भ में बाह्यपरिवारपूजा का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् सामान्य द्वारादेवताओं के मन्त्रचक्र की पूजा का वर्णन किया गया है। पुनः पूजामण्डपशद्धि का वर्णन है। आगे आसन पर बैठने की विधि है। आसन पर विराजमान होकर साधक प्रवर को करशोधन, तत्त्वमन्त्रों से आचमन करना चाहिए। स्थूलदेह की शद्धि के लिए आगमोक्त प्राणायाम करना चाहिए। तत्पश्चात् सूक्ष्मदेह की शद्धि के लिए आगामों में वर्णित भूतशद्धि करनी चाहिए। इसके पश्चात् विनियोग का पाठ करके ऋश्यादिन्यास, करन्यास, शडंगन्यास, पंचवक्त्रन्यास, दशवक्त्रन्यास, देहन्यास, त्र्यक्षरी न्यास, अस्त्रन्यास, तथा मुण्डन्यास संपादित करने चाहिए। तत्पश्चात् मनोगुहा में भगवती गुह्यकाली का विस्तृत अथवा संक्षिप्त ध्यान कर अन्तर्यजन करना चाहिए।

अन्तर्याग के पश्चात् सरल निर्देशों के साथ पात्रासादन का वर्णन किया गया है। पात्रासादन में सामान्य नियम के अनुसार वर्धनीकुम्भ, सामान्यार्घ्य, विशेषार्घ्य तथा प्रोक्षणीपात्र की स्थापना का विधान दिया गया है। पात्रासादन के पश्चात् माता गुह्यकाली के यन्त्रलेखन का विधान दिया गया है। यन्त्र का लेखन कर साधक को द्वारपालकों का पूजन करना चाहिए। तत्पश्चात् आसनपक्ष का पूजन करना चाहिए। मूर्तिकल्पना कर देवी गुह्यकाली का विस्तृत अथवा संक्षिप्त ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात् पंचोपचारों से देवी का यथाविभवपूजन करना चाहिए। इस प्रकार पूजन कर उभय नवाक्षरी विद्याओं से बिन्दू पर देवी का यजन करना चाहिए। तत्पश्चात् रामोपासिता एवं भरतोपासिता शोडषियों से पूजन करना चाहिए। तदनन्तर गुह्यकाली के गायत्रीमन्त्र, सहस्राक्षरी विद्या, शताक्षरी विद्या, गुह्यकालीहृदयविद्या तथा गुह्यकालीमहाहृदयविद्या से बिन्दू पर यजन करना चाहिए। तदनन्तर पंचार में पंचकालियों के मन्त्रों से यजन पंचार (पंचकोण) में करना चाहिए। तत्पश्चात् षोडशावरणपूजा करनी चाहिए। सोलह आवरणों की पूजा करके

समयभोगविद्या तथा समयविद्यात्रय से पूजन करना चाहिए। तत्पश्चात् निर्वाणगुह्यकाली मन्त्र एवं महानिर्वाणगुह्यकालीमन्त्र में सभी मन्त्रों का लय कर देना चाहिए। इसके पश्चात् सामिश अथवा निरामिश बलिदान करना चाहिए। बलि प्रदान करने के उपरान्त महाशंख अथवा स्फटिक की माला पर यथाशक्ति मूलमन्त्र का जप करना चाहिए। तदनन्तर पद्धति में वर्णित विधि के अनुसार उद्वासन करना चाहिए। उद्वासन के पश्चात् यथाविधि पात्र स्वीकार कर शान्तिस्तोत्र का पाठ करना चाहिए। सिद्धमिदम्।

॥ सपर्याखण्डम् ॥

१. श्रीगुह्यकालीपूजापद्धतिः

२. श्रीगुह्यकालीलघुपूजाविधिः

३. श्रीगुह्यकालीपुष्पार्पणकल्पम्

१

॥ अथगुह्यकालीपूजापद्धतिः ॥

॥ बाह्यपरिवारपूजा ॥

निम्न मन्त्रों से बाह्यपरिवार देवताओं का पूजन जल, गन्ध तथा पुष्प से करें।

ॐ फ्रें प्रभामण्डलाय नमः ॥

ॐ फ्रें भृंगीशाय नमः ॥

ॐ फ्रें कुमाराय नमः ॥

ॐ फ्रें अम्बिकायै नमः ॥

ॐ फ्रें द्वारश्रियै नमः ॥

ॐ फ्रें लक्ष्म्यै नमः ॥

ॐ फ्रें गणपतये नमः ॥

ॐ फ्रें सरस्वत्यै नमः ॥

तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों से आकाशमातृकाओं का पूजन जल, गन्ध तथा पुष्प से करें।

ॐ फ्रें उमायै नमः ॥

ॐ फ्रें दुर्गायै नमः ॥

ॐ फ्रें भद्रकाल्यै नमः ॥

ॐ फ्रें स्वस्तये नमः ॥

ॐ फ्रें स्वाहायै नमः ॥

ॐ फ्रें शुभंकर्यै नमः ॥

ॐ फ्रें श्रियै नमः ॥

ॐ फ्रें गौर्यै नमः ॥

ॐ फ्रें लोकधात्र्यै नमः ॥

ॐ फ्रें वागीश्वर्यै नमः ॥

तत्पश्चात् श्रीमान् साधक पाप शांति हेतु निम्न मन्त्रों का पाठ करें।

ॐ फ्रें देवित्वत्प्रकृतच्चित्तंपापाक्रान्तमभून्मम।

तन्निस्सरन्तु चित्तान्मे पापं हूँफट् च ते नमः ॥

सूर्यस्सोमो यमःकालो महाभूतानि पञ्च च ।

एते शुभाऽशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥

ॐ फ्रें वज्रोदके हूँ फट् स्वाहा॥ मन्त्र से जल को अभिमंत्रित करें।

ॐ फ्रें हूँ स्वाहा॥ मन्त्र से वाम हस्त में जल लेकर आसन का प्रोक्षण करें।

ॐ फ्रें ह्रीँ विशुद्धे सर्वपापानि शमयाशेषविकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा॥

से हस्तपादप्रक्षालन करें।

ॐ फ्रें नमः॥ मन्त्र द्वारा स्वर्ण अथवा रजत से निर्मित कुलपवित्र धारण करें।

ॐ फ्रें ह्रीँ स्वाहा॥ मन्त्र से तीन बार आचमन करें।

साधक ललाट पर मूलमन्त्र से सिन्दूर बिन्दुधारण कर उसके ऊपर कुलचन्दन से निष्छिद्र त्रिपुण्ड्र करें।

ॐ फ्रें वीरभस्मने फट् स्वाहा॥ अथवा मन्त्र से केवल सिन्दूर/वीरभस्म से कुलतिलक मात्र करें।

मातृका द्वारा प्रत्यक्ष अथवा अनुकल्प विधान के अनुसार मुंडमालाधारण करें।

ॐ फ्रें अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः ॥

ॐ फ्रें मणिधरि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ मणिधरिमन्त्र से शिखा बन्धन करें।

॥ द्वारपूजा ॥

निम्न मन्त्रों से द्वारदेवताओं का पूजन जल, गन्ध तथा पुष्प से करें।

द्वारा के उपर गणपति, वामभाग की द्वार शाखाओं में क्षेत्रपाल, दक्षिणभाग की शाखा में वटुक, निम्नभाग में योगिनी, दक्षिण में गंगा, वाम में यमुना, दक्षिण में लक्ष्मी, निम्न भाग में सरस्वती, मध्यभाग में कालिका का तथा चन्द्रशिला पर अष्टमातृकाओं का पूजन जल,

गन्ध तथा पुष्प से करें।

द्वारोर्ध्वे ॐ फ्रें गाँ गणेशाय नमः ॥

वामे ॐ फ्रें क्षाँ क्षेत्रपालाय नमः ॥

दक्षे ॐ फ्रें वाँ वटुकाय नमः ॥

अधः ॐ फ्रें याँ योगिनीभ्यो नमः ॥

दक्षे ॐ फ्रें गाँ गंगायै नमः ॥

वामे ॐ फ्रें याँ यमुनाय नमः ॥

दक्षे ॐ फ्रें श्रीँ लक्ष्म्यै नमः ॥

वामे ॐ फ्रें ऐँ सरस्वत्यै नमः ॥

मध्ये ॐ फ्रें क्रीँ कालिकायै नमः ॥

देहल्याम् ॐ फ्रें ह्स्ख्फ्रें ब्रह्माण्याद्यष्टमातृभ्योनमः ॥

अपने पार्श्वभाग में विघ्नकारी सर्वभूतों का का पूजन पूजन जल, गन्ध तथा पुष्प से करें।

ॐ फ्रें सर्वेभ्योभूतेभ्यो नमः ॥

द्वारदेवताओं का यजन कर निम्न प्रार्थना करें।

ॐ फ्रें ह्रीँ हूँ मूलद्वारं मे दापय दापय सर्वविघ्नविनाशनीये हूँ फट् ॥

ॐ फ्रें द्वारदेवाश्च ये केचित्पूजिता अपूजिताः ।
द्वारन्देहि तु दीनाय मम पूजार्थकारिणे ॥

तत्पश्चात् निम्न देवताज्ञा का श्रवण करा कर साधक वामाङ्गों का संकोच करते हुए बाये पैर को आगे कर यागगृह में प्रवेश करें।

द्वारपाला द्वारदेव्यो द्वारं रक्षतु यत्नतः ।
निवार्य विघ्नसंघातमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥

भावन करें याग भूमि कल्पद्रुम में मणिमंडप में हैं। श्मशान हैं जहाँ देवता, शिवाए, मांस, अस्थि, मेद,चारों और शवमुण्ड तथा अस्थियां हैं। इस श्मशान भूमि के मध्य भगवति गुह्यकालिका शोभायमान हैं।

विघ्नों को हटाने के लिए **ॐ फ्रें स्वाहा अस्त्राय फट्॥** मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित

करके लाजा, चन्दन, श्वेतसर्शप, भस्म, दूर्वा, कुश तथा अक्षतादि विकरद्रव्यों को विघ्नोत्सादन हेतु निम्न मंत्र से फेके।

ॐ फ्रें अपः क्रामन्तु भूतानि पिशाचाःप्रेतगुह्यकाः ।
ये चानिवसंत्यन्ये देवता भुविसंस्थिताः ॥
अपःसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
ॐ फ्रें सर्वविघ्नानुत्सारयोत्सारय हूँ फट् स्वाहा ॥

मंत्र पढ़कर जल से पूजागृह का प्रोक्षण करें।

अन्दर प्रवेश कर द्वार का यवनिका से आच्छादन करें।

यागशाला की विदिशाओं में निम्नदेवताओं का पूजन करें।

ईशानकोणे ॐ फ्रें दीँ दीपनाथाय नमः ॥
नैर्ऋतकोणे ॐ फ्रें वाँ वास्तुपुरुषाय नमः ॥
आग्नेयकोणे ॐ फ्रें धाँ धात्रे नमः ॥
वायव्यकोणे ॐ फ्रें विँ विधात्रे नमः ॥
देहल्यां ॐ फ्रें दैँ देहल्यै नमः ॥

निम्न मन्त्र का पाठकर भैरवाज्ञा लेवें।

ॐ फ्रें तीक्ष्णदंष्ट्र महाकायकल्पान्तदहनोपम ।

भैरवाय नमस्तुभ्यं मनुज्ञां दातुमर्हसि॥

वेदी के समीप जाकर स्थान का शोधन करें।

ॐ फ्रें रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ मंत्र से जल द्वारा भूमि का परिशिञ्चन करें।

ॐ फ्रें स्वाहा अस्त्राय फट्॥ मन्त्र से दर्भ द्वारा ताड़न करें।

ॐ फ्रें स्त्रीँ फ्रें कवचाय हूँ॥ मन्त्र से अभ्युक्षण करें।

भूमि के अभिमन्त्रण हेतु वामहस्त से भूमि का स्पर्श कर **ॐ फ्रें पवित्रवज्रभूमे हूँ हूँ फट् स्वाहा॥** मंत्र का पाठ करें।

॥ मंडपशुद्धि ॥

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्

॥ आसनोपवेशन ॥

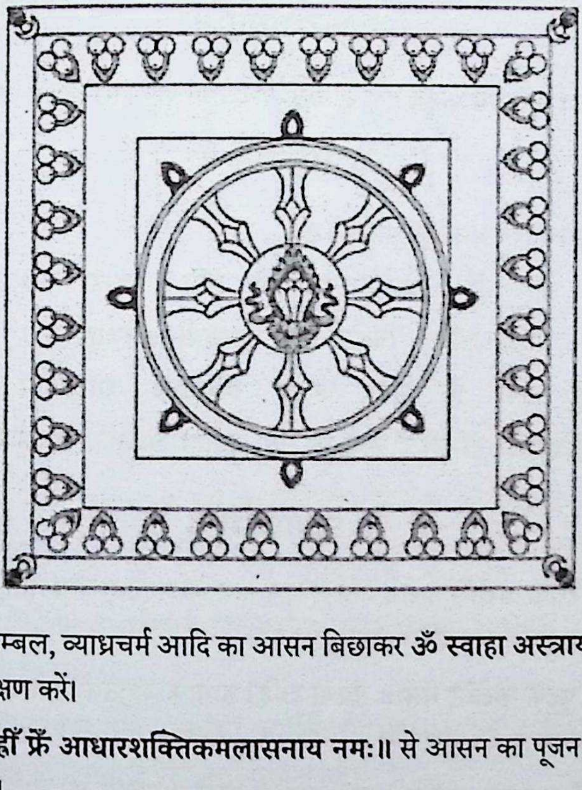

कुश, कम्बल, व्याध्रचर्म आदि का आसन बिछाकर **ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्**॥ मन्त्र से उसका प्रोक्षण करें।

ॐ फ्रें ह्रीं फ्रें आधारशक्तिकमलासनाय नमः॥ से आसन का पूजन कर वीरासन बनाकर बैठें।1

कृतांजलि होकर निम्न मन्त्रों का पाठ करें।

आसनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलञ्छन्दः कूर्मोदेवता आसनपरिग्रहे विनियोगः ॥

ॐ फ्रें पृथ्वित्वयाधृतालोका देवि त्वं व्विष्णुना धृता ।

त्वञ्च धारय मान्नित्यं पवित्रङ्कुरुचासनम् ॥

१ बाएं घुटने पर दाहिना पैर रख कर बाएं पैर के उपर दाहिना घुटना रखने से वीरासन बनता हैं।

॥ देवतानमस्कार ॥

तत्पश्चात वामकर्ण के ऊर्ध्व में **ॐ फ्रैं गुँ गुरुभ्यो नमः॥** मन्त्र से नमस्कार करें। दक्षिणकर्ण के ऊर्ध्व में **ॐ फ्रैं गँ गणपतये नमः॥** मन्त्र से नमस्कार करें। मध्य में योनिमुद्रा बनाकर **ॐ फ्रैं गुह्यकालिकायै नमः॥** मन्त्र से नमस्कार करें।

॥ करशोधन ॥

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्॥ मन्त्र से जल, गन्ध तथा पुष्प द्वारा साधक करशोधन करें।

॥ आचमन ॥

निम्न तत्त्वचतुष्टय मन्त्रों से आचमन करें।

ॐ फ्रैं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

सिद्धिकरालि विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं नमः स्वाहा शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

ॐ फ्रैं सिद्धिकरालि ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं नमः स्वाहा सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

॥ प्राणायाम ॥

ॐ फ्रैं रेचकं करोमि नमः॥ मन्त्र से बाएं हाथ के अंगुठे से वामनासापुट बन्द करके अशुद्ध प्राणवायु का रेचन दक्षिणनासापुट से करें।

ॐ ह्रीँ पूरकं करोमि नमः॥ मंत्र से दाहिने हाथ के अंगुठे से दाहिना नासापुट बन्द करके शुद्ध प्राणवायु का पूरण करें।

ॐ छ्रीँ कुम्भकं करोमि नमः॥ मंत्र से दोनों नासापुटों को दाहिने अंगूठे तथा अनामिका से बंद कर कुम्भक करें।

ॐ हूँ ऊर्ध्वरेचकं करोमि नमः॥ मंत्र से प्राणवायु हृदय, कण्ठ, तालु, भ्रूमध्य तथा ब्रह्मरन्ध्र का भेदन कर बाहर जा रहा है इस प्रकार की भावना करें।

ॐ स्त्रीँ व्योमात्मानं स्थापयामि नमः॥ मंत्र से खद्योत के समान आभा वाले आत्मा द्वारा हृदय, कण्ठ, तालु, भ्रूमध्य तथा ब्रह्मरन्ध्र का भेदन कर परतत्त्व में लोप होने की धारणा करें। शून्यशरीर का ध्यान करते हुऐ परम विश्रांति का अनुभव करें।

॥ संक्षिप्तभूतशुद्धिः ॥

ॐ फ्रें इमां तनुं शोषयामि नमः ॥

मंत्र से दाहिने पैर के अंगुष्ठ से निकलती हुए कालाग्नि की ज्वालाओं में शरीर भस्म हो गया है ऐसी भावना करें।

ॐ सिद्धिकरालि तनो उत्प्लवनं करोमि नमः॥ मंत्र से वायु द्वारा भस्म को दशो दिशाओं में उड़ा दिया गया है ऐसी ऐसी भावना करें।

ॐ ह्रीं छ्रीं हूँ तनुमाप्लावयामि नमः॥ मंत्र से द्वादशान्त से पतित होते शाक्तामृत जल से उस स्थान के क्षालित होने की भावना करें।

ॐ स्त्रीं फ्रें महाशून्यानन्दाय नमः॥ मंत्र से महाशून्यात्मक आनन्द में लय का ध्यान करें।

ॐ नमः स्वाहा दिव्यान्तनुं सञ्जीवयामि नमः॥ मंत्र से निजशिवता के बोध पूर्वक शिवात्मक दिव्यदेह की भावना करें।

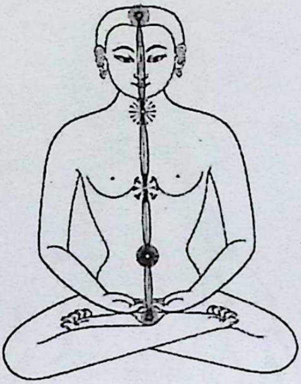

इस प्रकार भूतशुद्धि कर स्वयं का देवी के रूप में चिंतन करें। तत्पश्चात् गुह्यकाली महामन्त्र मंत्र के ऋष्यादिन्यास आदि संपादित करें।

महेश्वर को प्रसन्न कर उनसे साक्षात् मन्त्र का ज्ञान कर मन्त्र की प्रथम सिद्धि प्राप्त करने वाले मन्त्र के 'ऋषि' कहे जाते हैं। मन्त्र के आद्य गुरू होने के कारण ऋषि का न्यास मस्तक पर किया जाता है। मन्त्र के रहस्यतत्त्व को आच्छादित करने के कारण, मन्त्र का आच्छादन करने से 'छन्द' कहा गया है। अक्षरों एवं पदों के कारण इसका न्यास मुख में किया जाता है। सभी जन्तुओं के हृदय में निवास करने के कारण, जीव से अन्तरंग भाषण तथा प्रेरित करने के कारण 'देवता' का न्यास हृदय में किया जाता है। ऋष्यादि का समुचित परिज्ञान करके साधक मन्त्र सिद्धि का भागी होता है। विनियोग का ज्ञान न होने से मन्त्रफल में दुर्बलता आती है। 'बीज' ईश्वर का द्योतक है, इसका न्यास गुह्य देश में किया जाता है। ईश्वर की मायाशक्ति का द्योतक 'शक्ति' है, इसका न्यास पैरों में किया जाता है। तत्पश्चात् सभी अंगों में मन्त्रबल के रक्षणार्थ 'कीलक' का न्यास किया जाता है।2 श्रीमान् साधक सप्तदशाक्षरी विद्या के विनियोग का पाठ कर तीन बार जल छोड़े।

२ महेश्वरमुखाद् ज्ञात्वा यः साक्षात् तपसा मनुम्। संसाधयति शुद्धात्मा स तस्य ऋषिरीरितः ॥
गुरूत्वान्मस्तके चास्य न्यासस्तु परिकीर्तितः। सर्वेषां मन्त्रतत्त्वानां छादनाच्छन्द उच्यते ॥
अक्षरत्वात् पदत्त्वाच्च मुखे छन्दः समीरितम्। सर्वेषामेव जन्तूनां भाषणात् प्रेरणात् तथा ॥
हृदयाम्भोजमध्यस्था देवता तत्र तां न्यसेत्। ऋषिच्छन्दोपरिज्ञानान्न मन्त्रःफलभाग् भवेत् ॥
दौर्बल्यं याति मन्त्राणां विनियोगमजानताम्। ऋषिं न्यसेन् मूर्ध्नि देशे छन्दस्तु मुखपंकजे ॥
देवतां हृदये चैव बीजं तु गुह्यदेशके। शक्तिं तथा पादयोश्च सर्वांगे कीलकं न्यसेत् ॥
आगमरहस्यम् पृष्ठ २५४

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीगुह्यकालीमहामन्त्रस्य अथर्वा ऋषिः । जगतीच्छन्दः । श्रीगुह्यकाली देवता । छ्रीँ बीजम् । ह्रीँ शक्तिः । फ्रेँ कीलकम् । पुरुषार्थचतुष्ट्यसिद्धये विनियोगः ॥

विनियोग के पश्चात साधक को अपनी-अपनी मुद्राओं के द्वारा ऋष्यादिन्यास से मुंडासन न्यास पर्यंत के नौ न्यास करने चाहिए।

॥ ऋष्यादिन्यासः ॥

शिरसि ॐ अथर्वणऋषये नमः ॥ अंगुष्ठेन मुखे ॐ जगतीच्छन्दसे नमः ॥ मध्यमानामिकाभ्यां हृदि ॐ श्रीगुह्यकालीदेवतायै नमः ॥ अंगुष्ठरहितांगुलिभिः गुह्ये ॐ छ्रीँ बीजाय नमः ॥ तत्वमुद्रया पादयोः ॐ ह्रीँ शक्तये नमः ॥ मध्यमांगुल्या सर्वांगे ॐ फ्रेँ कीलकाय नमः ॥ हस्तद्वयतलयोः अंजलौ ॐ पुरुषार्थचतुष्ट्यसिद्धये विनियोगाय नमः ॥

जप तथा मुद्रा प्रदर्शन हेतु करों की शद्धि तथा मन्त्रशक्ति के संचार हेतु साधक को 'करन्यास' करना चाहिए। करन्यास में अंगुलियों के मूलभाग से अग्रभाग पर्यन्त का स्पर्श अंगुष्ठ से किया जाता है।

॥ करन्यासः ॥

ॐ ख्फ्राँ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ख्फ्रीँ तर्जनीभ्यां नमः ॥

ॐ ख्फ्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ ख्फ्रैँ अनामिकाभ्यां नमः ॥

ॐ ख्फ्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ख्फ्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

पूर्वाचार्यों द्वारा चिदात्मक हृदात्मा (इष्टदेवता) हृदय में ईज्यमान (पूजित) होता है अतः साधकों द्वारा 'हृदयमन्त्र' से उसे हृदय में स्थापित करते हैं। सर्वज्ञादि गुणों से सर्वश्रेष्ठ ज्ञान रूप परमात्मा में सुधीजन 'शिरोमन्त्र' से विषयाहार करते हैं, अतः हृदय एवं शिररूप चिद् धाम में अपने शरीर के द्वारा 'शिखामन्त्र' से ईष्टदेवता की दृढ़ भावना संयत की जाती है। मन्त्रात्मक देह के मन्त्रवाच्य तेज (मन्त्रवीर्य) से 'कवचमन्त्र' द्वारा देह की रक्षा की जाती है। स्वप्रत्यभिज्ञान प्रदान करने वाला जो संविद् रूप तेज है वह 'नेत्रमन्त्र' की संज्ञा से कहा गया है, जो साधक को आध्यात्मिक तेज प्रदान करता है। अविद्या के कारण उत्पन्न हुए अज्ञान का नाश करने वाला परमतेज 'अस्त्रमन्त्र' की अभिधा से कहा जाता है।

अपनी-अपनी मुद्रा तथा जातियों के साथ 'हृदयादिन्यास' करना चाहिए। तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका को फैलाकर हृदय पर स्पर्श करने से 'हृदयन्यास' की मुद्रा बनती है। तर्जनी एवं मध्यमा अथवा मध्यमा व अनामिका द्वारा शिरोभाग का स्पर्श करने से 'शिरोन्यास' की मुद्रा बनती है। केवल अंगुष्ठ के प्रसार से शिखादेश को स्पर्श करने से 'शिखान्यास' की मुद्रा बनती है। दश अंगुलियों द्वारा भुजाओं का स्पर्श करने से 'कवचन्यास' की मुद्रा बनती है। तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका द्वारा नेत्रत्रय के स्पर्श से 'नेत्रन्यास' की मुद्रा बनती है। तर्जनी और मध्यमा द्वारा वामकरतल पर तीन बार ताल करने से अस्त्रमुद्रा की सिद्धि होती है।3

॥ षडङ्गन्यासः ॥

ॐ ॐ फ्रें हृदयाय नमः ॥ ॐ सिद्धिकरालि शिरसे स्वाहा ॥
ॐ ह्रीँ छ्रीँ हूँ शिखायै वषट् ॥ ॐ स्त्रीँ फ्रें कवचाय हूँ ॥
ॐ नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥

'वक्त्रन्यास' में देवता के वक्त्रों का न्यास अपने शिरोभाग में किया जाता है। इस न्यास को करने से विभिन्न प्रकार की विद्याओं का ज्ञान साधक को स्वतः प्राप्त होता है।

॥ पञ्चमूलवक्त्रन्यासः ॥

ॐ फ्रें सिद्धिकरालि दक्षिणवक्त्राय नमः ॥
ॐ ह्रीँ छ्रीँ हूँ वामवक्त्राय नमः ॥
ॐ स्त्रीँ फ्रें नमः पश्चिमवक्त्राय नमः ॥
ॐ स्वाहा पूर्ववक्त्राय नमः ॥
ॐ ख्फ्रें महाचण्डयोगेश्वरि ऊर्द्धवक्त्राय नमः ॥

॥ दशवक्त्रन्यासः ॥

ॐ ख्फ्रें खँ ज्योतिर्मयवक्त्राय नमः ॥ सहस्रदले
ॐ ख्फ्रें ह्रीँ सिंहवक्त्राय नमः ॥ ब्रह्मरन्ध्रे
ॐ ख्फ्रें श्रीँ फ्रें फेरुवक्त्राय नमः ॥ भ्रुवौ

३ हृद्यंगुलीत्रयं न्यस्येत् तर्जन्यादिद्वयं तु के। शिखाप्रदेशेथांगुष्ठं दशांगुल्यस्तु वर्मणि ॥ हृद्वन्नेत्रं पूर्वमस्त्रं शक्तेरंगस्य मुद्रिका। .... ॥ आगमरहस्यम् पृ. २५८

ॐ खफ्रें हूँ कपिवक्त्राय नमः ॥ वामनेत्रे
ॐखफ्रेंश्रींब्लूँक्रॅंभल्लुकवक्त्रायनमः॥दक्षनेत्रे
ॐखफ्रेंक्लींताक्ष्र्यवक्त्रायनमः॥वामनासापुटे
ॐ खफ्रें स्त्रीं मकरवक्त्राय नमः ॥ दक्षनासपुटे
ॐ खफ्रें छ्रीं हयवक्त्रवक्त्राय नमः ॥ वामकर्णे
ॐ खफ्रें प्लूँ गजवक्त्राय नमः ॥ दक्षकर्णे
ॐ खफ्रें ह्स्खफ्रें कालिकावक्त्राय नमः ॥ मुखे

॥ देहन्यासः ॥

ॐ ॐ फ्रें ॐ ब्रह्मरंध्रे नमः ॥
ॐ फ्रें ॐ फ्रें शिखास्थाने नमः ॥
ॐ फ्रें फ्रें फ्रें हृदयाय नमः ॥
ॐ फ्रें सिं फ्रें नाभौ नमः ॥
ॐ फ्रें द्धिं फ्रें दक्षिणनेत्राय नमः ॥
ॐ फ्रें कँ फ्रें वामनेत्राय नमः ॥
ॐ फ्रें राँ फ्रें वामनासापुटाय नमः ॥
ॐ फ्रें लिं फ्रें दक्षिणनासापुटाय नमः ॥
ॐ फ्रें हीं फ्रें वामकर्णे नमः ॥
ॐ फ्रें छ्रीं फ्रें दक्षकर्णे नमः ॥
ॐ फ्रें हूँ फ्रें लिङ्गे नमः ॥
ॐ फ्रें स्त्रीं फ्रें गुह्ये नमः ॥
ॐ फ्रें फ्रें फ्रें भ्रुमध्ये नमः ॥
ॐ फ्रें नँ फ्रें ब्रह्मरन्ध्रे नमः ॥
ॐ फ्रें मः फ्रें ललाटादि हृदयान्तं नमः ॥
ॐ फ्रें स्वाँ फ्रें मस्तकादि पादान्तं नमः ॥
ॐ फ्रें हाँ फ्रें पादादि मस्तकान्तं नमः ॥

॥ त्र्यक्षरीन्यासः ॥

ॐ नाभौ नमः ॥

ह्रीँ हृदयाय नमः ॥

फ्रेँ बिन्दौ नमः ॥

॥ अस्त्रन्यासः ॥

ॐ फ्रेँ ह्रीँ कपाल विश्वं पूरय पूरय स्वाहा ॥ वामहस्ताग्रे

ॐ फ्रेँ आँ पाशेन मम शत्रून् कट्ट कट्ट स्वाहा ॥ वाममणिबन्धे

ॐ फ्रेँ क्रोँ अंकुशेन कट्ट कट्ट स्वाहा ॥ वामकर्पूरे

ॐ फ्रेँ हूँ अमृतबालेन मोहय मोहय स्वाहा ॥ वामस्कंधे

ॐ फ्रेँ श्रीँ त्रिशूलेन घातय घातय स्वाहा ॥ दक्षहस्ताग्रे

ॐ फ्रेँ ल्त्रीँ वज्रेन ताडय ताडय स्वाहा ॥ दक्षमणिबन्धे

ॐ फ्रेँ स्त्रीँ मुद्गरेन चूर्णय चूर्णय स्वाहा ॥ दक्षकर्पूरे

ॐ फ्रेँ हूँ खट्वाङ्गेन प्राणान् हन हन स्वाहा ॥दक्षस्कंधे

॥ मुण्डासनन्यासः ॥

ॐ फ्रेँ फ्रेँ कृतयुगमुण्डासनाय नमः ॥ वामपादतले

ॐ फ्रेँ फ्रेँ त्रेतायुगमुण्डासनाय नमः ॥ वामपादांगुलौ

ॐ फ्रेँ फ्रेँ द्वापरयुगमुण्डासनाय नमः ॥ वामपादांगुलिनखे

ॐ फ्रेँ फ्रेँ कलियुगमुण्डासनाय नमः ॥ वामपादोपरि

ॐ फ्रेँ फ्रेँ ऋग्वेदमुण्डासनाय नमः ॥ दक्षपादतले

ॐ फ्रेँ फ्रेँ यजुर्वेदमुण्डासनाय नमः ॥ दक्षपादगुल्फे

ॐ फ्रेँ फ्रेँ सामवेदमुण्डासनाय नमः ॥ दक्षपादांगुलिनखे

ॐ फ्रेँ फ्रेँ अथर्ववेदमुण्डासनाय नमः ॥ दक्षपादोपरि

ॐ फ्रेँ फ्रेँ इन्द्रमुण्डासनाय नमः ॥ वामगुल्फे

ॐ फ्रेँ फ्रेँ वह्निमुण्डासनाय नमः ॥ दक्षगुल्फे

ॐ फ्रँ फ्रँ यममुण्डासनाय नमः ॥ वामपार्ष्णौ
ॐ फ्रँ फ्रँ नैर्ऋत्यमुण्डासनाय नमः ॥ दक्षपार्ष्णिषु
ॐ फ्रँ फ्रँ वरुणमुण्डासनाय नमः ॥ वामजङ्घे
ॐ फ्रँ फ्रँ वायुमुण्डासनाय नमः ॥ दक्षजङ्घे
ॐ फ्रँ फ्रँ धनदमुण्डासनाय नमः ॥ वामजङ्घोपरि
ॐ फ्रँ फ्रँ ईशानमुण्डासनाय नमः ॥ दक्षजङ्घोपरि
ॐ फ्रँ फ्रँ अनन्तमुण्डासनाय नमः ॥ वामजानुनि
ॐ फ्रँ फ्रँ ब्रह्ममुण्डासनाय नमः ॥ वामजानवोपरि
ॐ फ्रँ फ्रँ सृष्टिमुण्डासनाय नमः ॥ वामोरु
ॐ फ्रँ फ्रँ प्रलयमुण्डासनाय नमः ॥ दक्षोरु
ॐ फ्रँ फ्रँ ब्रह्मप्रेतासनाय नमः ॥ वामकट्यां
ॐ फ्रँ फ्रँ विष्णुप्रेतासनाय नमः ॥ दक्षकट्यां
ॐ फ्रँ फ्रँ रुद्रप्रेतासनाय नमः ॥ वामपार्श्वे
ॐ फ्रँ फ्रँ ईश्वरप्रेतासनाय नमः ॥ दक्षपार्श्वे
ॐ फ्रँ फ्रँ सदाशिवप्रेतासनाय नमः ॥ स्कन्धे
ॐ फ्रँ फ्रँ भैरवप्रेतासनाय नमः ॥ मूलाधारे
ॐ फ्रँ फ्रँ श्रीँ हूँ फ्रँ फ्रँ महाशिवासनाय नमः ॥ नाभौ

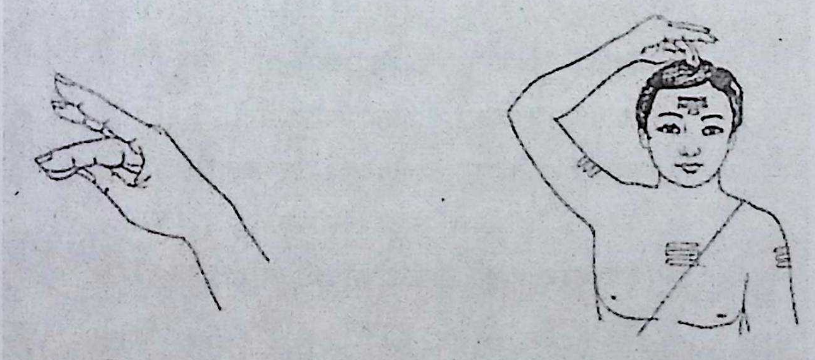

॥ अन्तर्यागविधानम् ॥

देवता के स्वरूप का वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो तथा समरूपता की सिद्धि हो इसी भाव के साथ देवता का सगुणध्यान किया जाता है। अपने हाथों में जल, गन्ध तथा पुष्प लेकर हृदय के सम्मुख कूर्ममुद्रा बनाकर ध्यान श्लोकों का पाठ करना चाहिए।

ध्यान श्लोकों के माध्यम से देवता के सगुण-साकार स्वरूप का ज्ञान होता है। स्वरूप का ज्ञान होने से शनैः-शनैः देवता में सहज ही अनुरक्ति प्रकट होने लगती है। जो अन्त में देवता के साथ अद्वयभाव की सिद्धि में सहायक होती है।

ध्यान करने के पश्चात् अपनी-अपनी मुद्राओं एवं मन्त्रों का पाठ कर मानसोपचार समर्पित करने चाहिए। मानसोपचार सभी उपचारों में सहज तथा विशुद्ध कहे गये हैं। वस्तुतः मानसोपचारों द्वारा देवता की पूजा पंचमहाभूतों द्वारा देवता का यजन है। अद्वयवादी दृष्टि से देखें तो यह विश्वात्मक परतत्त्व द्वारा विश्वोत्तीर्ण परतत्त्व के यजन की प्रक्रिया है। विभिन्न परम्पराओं में मानसोपचार की संख्या पर मतभेद है। कुछ आचार्य पंचमहाभूत के प्रतिनिधि रूप पांच उपचार ही मानते हैं। वहीं अपर परम्पराओं में छः उपचारों की मान्यता है।

साधक मुण्डासनन्यास संपादित कर अपने देह की देवी के आसन रूप में भावना करें। तत्पश्चात् कूर्ममुद्रा बनाकर देवी गुह्यकाली का कल्पोक्त ध्यान करें।

नीलोत्पलदलश्यामा नीलरत्नाविनिर्मिता ।
ज्ञानलक्ष्मीच्छटाटोपज्योतिर्मण्डलसंभवा ॥१॥
दशवक्त्रा गुह्यकाली सप्तविंशतिलोचना ।
अष्टोत्तरशतार्द्धं च भुजादण्डै नरानना ॥२॥
दीपकं ऊर्द्धकं वक्त्रं चण्डयोगेश्वरी मतम् ।
ज्योतिर्मयमहावक्त्रं निर्वाणपददायिनी ॥३॥
तदधः सिंहवदनं श्वेतवर्णं सुभास्वरम् ।
फेरुवक्त्रं च तदधः कृष्णं त्रैलोक्यडामरम् ॥४॥
कपीन्द्रस्य मुखं वामे रक्तवर्णं महोल्वणम् ।
कोलवक्त्रं भवेद्दक्षं धूम्रवर्णं भयानकम् ॥५॥
तार्क्ष्यवक्त्रं च वामञ्च पिंगवर्णसचुञ्चुकम् ।

दक्षिणे मकरास्यं च हरिताभं प्रकीर्तितम् ॥६॥
गजास्यं वामके प्रोक्तं गौरवर्णं महोल्वणम् ।
हयास्यं दक्षिणे काल्या श्यामवर्णं विचिन्तयेत् ॥७॥
सर्वदंष्ट्रा कराला च त्रिनेत्रा भीमनादिनी ।
भ्रभङ्गकुटिला भीमा कालास्य श्रीमुखोत्तमा ॥८॥
पिङ्गलोर्ध्वजटाटोपचन्द्रार्द्धकृतशेखरा ।
नानारत्नैश्च घटिका श्वेतकाद्यालिमालिनी ॥९॥
सप्तविंशतिमुण्डैश्च रक्तविप्लुषसंयुता ।
वज्राणि पुष्पसंयुक्तं शिरोमाला प्रकीर्तिताः ॥१०॥
चिद्रत्नवटिका काद्यं खड्गपाशं च शक्तिकम् ।
खट्वाङ्गमुण्डधनुषं चक्रं घण्टा च सुस्वनः ॥११॥
बालप्रेतञ्च शैलञ्च कङ्कालनकुलं तथा ।
सर्पं च कुट्टनीवंशषडम्रं ओविका पुनः ॥१२॥
वह्निपात्रञ्च दण्डञ्च सुवमष्टादकेशरी ।
वस्त्रमुद्गरडमरु विभ्रती बाणबाहुभिः ॥१३॥
चिद्रत्नवटिकाकर्तृतर्जन्यं कुशदण्डकम् ।
रत्नपूर्णं च कलशं त्रिशूलं दुष्टनाशनम् ॥१४॥
पञ्चपशुपता वाणं पद्मद्वीपमनागतम् ।
कुन्तञ्च पाणिजातञ्च फणिका तोमरं तथा ॥१५॥
पुष्पमाला डिण्डिमं च गृद्धं स्वस्तिकवर्द्धनी ।
कमण्डलुश्रुवाञ्चैव पशुपुष्टिभयापहम् ॥१६॥
नन्द्यावर्तं कुण्डलं च मांसखण्डसुशोभनम् ।
वीजपूरफलं शूची विभ्रती दक्षबाहुभिः ॥१७॥
व्याघ्रचर्मपरीधानां कालचर्मोत्तरीयकाम् ।
किंकिणीजालशोभाढ्यांवीरघण्टानिनादिनीम् ॥१८॥

नौपुरारावनिर्घोषा घर्घरारावभीषणा ।
कनकाङ्गदकेयूरा महास्थिकृतशोभना ॥१९॥
मुण्डमालागले देव्या आपादान्तविलम्बिनी ।
रक्तपद्ममयीमालां शुष्ककाद्यलिकास्तथा ॥२०॥
काञ्चीकट्टारकोपेतां कटि देव्या विराजितां ।
ब्रह्मसूत्रोज्वलत्कण्ठाद्योगपट्टोत्तरीयका ॥२१॥
सौम्याग्रभूषणैर्युक्ता नागराजाद्यलंकृता ।
रक्तकुण्डलकर्णं श्रीपञ्चकालासनस्थिता ॥२२॥
शिवासनं तदूर्ध्वं च नीलं नादोर्ध्वलांछनम् ।
महार्घरत्नमांसञ्च कृष्णवर्णं चतुर्भुजम् ॥२३॥
एकवक्त्रं त्रिनयनं भैरवाभरणान्वितम् ।
कर्तृकपालहस्तं च डमरुखट्वाङ्गधारिणम् ॥२४॥
एवं भैरवपीठन्तु देव्या आसनमुत्तमम् ।
पञ्चप्रेतं च तदधः ब्रह्माद्याः पञ्चकारणाः ॥२५॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
पीतश्यामं रक्तधूम्रं श्वेताभावं च कारणाः ॥२६॥
दण्डचक्रशक्तिशूलखट्वाङ्गायुधधारकाः ।
तर्जनीमुखनिःक्षिप्ता शिवधस्था त्रिलोचना ॥२७॥
पिङ्गरक्तत्रिगुण्याभिहेतुत्कारणभीषणा ।
वज्रदंष्ट्रा नखस्पर्शा पद्मपृष्ठे शिवोत्तमा ॥२८॥
शचीपत्यादिरन्तं च दिगवर्णं सवर्णकम् ।
इन्द्रं पीताभवज्रं च वह्निं रक्तं सशक्तिकम् ॥२९॥
यमं कृष्णं च दंडं च धूम्रं नैर्ऋत्यखड्गकम् ।
वरुणं पाशशुभ्रास्य वायुः श्यामांकुशध्वजम् ॥३०॥
कुबेरं कुंकुमगदां शुभ्रमीशानशूलकम् ।

दिगष्टपतये ज्ञेयमासनं परिकीर्तितम् ॥३१॥
शुक्लं कृतयुगं ज्ञेयं पीतं त्रेतायुगं स्मृतम् ।
द्वापरं चारुणं वर्णं श्यामं चैव कलि स्मृतम् ॥३२॥
ऋग्वेदं शुक्लवर्णं च यजुर्वेदं सुवर्णवत् ।
सामं रक्तमिति ख्यातं कृष्णाथर्वणमुच्यते ॥३३॥
उपवेदस्तथावर्णा नवमासनमुच्यते ।
सहस्रसूर्यज्वालाग्रमासनं परिकीर्तितम् ॥३४॥
पद्मोपरिस्थिता देवी नृत्यमाना सदोदिता ।
अथवा सुख चासीनं सर्वदेवाधियन्त्रिता ॥३५॥
सहस्रसूर्यप्रतिभां दुर्निराक्षा दुरासदाम् ।
सर्वदेवाश्रयी नित्या मालिनी जयमङ्गला ॥३६॥
मुक्तहूंकारजिह्वाग्रलालयन्तं विचिंतयेत् ।
प्रत्यालीढपदा वापि नृत्यमानापि च स्मरेत् ॥३७॥
सर्वमन्त्रमयी धीरा सर्वलक्ष्मी जयेश्वरी ।
एवं ध्याया गुह्यकालीमभीन्ननवयौवना ॥३८॥

पूजासंकोच अथवा समयभाव में निम्न संक्षिप्त ध्यानश्लोक का पाठ किया जा सकता है।

ब्रह्मादिपंचकयुगश्रुतिदिक्पतिनां मुण्डेषु भैरवशिवाप्रलयानलेषु तस्योर्ध्वगे दशशतछदविद्रुमाभेपद्मेस्थितां भगवति परमा दशास्याम् । सिंहकोलकपिऋक्ष्यतुरङ्गताक्ष्र्ययोगेश्वरीमकरमानवपंक्तिवक्त्रां धृतशूलाङ्कुशपरशुमुद्गरपाशपात्रङ्खटवांग बालकशिरोङ्कितपाणिपद्माम् ॥

मां गुह्यकाली का ध्यान कर पंचोपचार की मुद्राएं बनाकर इन्हें समर्पित करें।

ॐ फ्रें मँ पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि नमः ॥

ॐ फ्रें खँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः ॥

ॐ फ्रें फँ वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः ॥

ॐ फ्रें रँ अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः ॥

ॐ फ्रें एँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः ॥

अथवा मानसिक षोडशोपचार से पूजन करें। नैवेद्य के अवसर पर अन्तर्यजन करें। मूलाधार मे आत्मा, अंतरात्मा तथा ज्ञानात्मा इन आत्मत्रयात्मक चित्कुण्ड जिसकी आनन्दमेखला तथा अर्धमात्रायोनि है, ऐसे कुण्ड में वासनारूपी इन्धन को जलाती हुईं स्वेष्टदेवीस्वरूपिणी कुलकुण्डल्यात्मक अग्नि का ध्यान करें। मन तथा उन्मनी रूप स्रुक्-स्रुवा द्वारा निम्न मंत्रों से होम करें।

ॐ फ्रें ह्रीँ अहन्तां जुहोमि स्वाहा ॥

ॐ फ्रें ह्रीँ असत्यं जुहोमि स्वाहा ॥

ॐ फ्रें ह्रीँ पैशुन्यं जुहोमि स्वाहा ॥

ॐ फ्रें ह्रीँ कामं जुहोमि स्वाहा ॥

ॐ फ्रें ह्रीँ क्रोधं जुहोमि स्वाहा ॥

ॐ फ्रें ह्रीँ लोभं जुहोमि स्वाहा ॥

ॐ फ्रें ह्रीँ मोहं जुहोमि स्वाहा ॥

ॐ फ्रें ह्रीँ मदं जुहोमि स्वाहा ॥

निम्न मंत्रों से तीन पूर्णाहुति देवें।

ॐ फ्रें ह्रीँ धर्माऽधर्म हविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुवा ।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तिर्जुहोम्यहं स्वाहा ॥
मूलं प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योमनीस्रुचम् ।
धर्माऽधर्मकलास्नेह पूर्णां वह्नौ जुहोम्यहं स्वाहा ॥

ॐ फ्रें ह्रीँ अन्तर्निरन्तरनिरन्धन मेघमाने मायान्धकार परिपन्थिनि संविदग्नौ । कस्याचिदद्भुतविकासि मरीचि भूमौ विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानं स्वाहा ॥

पुनः स्वहृदय में भगवती का ध्यान कर आपोशानादि उपचारों से समाराधन करें।

वर्णमाला अथवा करमाला पर अष्टोत्तरशत अथवा यथाशक्ति मानसिक जप करें। निम्न मंत्र से जप समर्पित करें।

ॐ फ्रैं ह्रीँ गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरी ॥

अन्तर्याग की सिद्धि तथा पूर्णता के लिए श्रीगुरुनाथ को प्रणाम करें।

ॐ फ्रैं ह्रीँ देवनाथगुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ॥

अन्तर्याग करने के पश्चात पात्रों का स्थापन करें। श्रीहाहारावतन्त्र में पात्रस्थापन का विधान प्राप्त नहीं होता है अंतः यहां श्रीमदुत्तरनिर्वाणसंहिता के अनुसार लिखा गया है। साधक तन्त्रान्तर अथवा अपने गुरुक्रम के अनुसार भी इनका स्थापन कर सकतें हैं।

॥ वर्धनीकुम्भस्थापनविधिः ॥ [4]

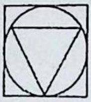

अपने वामभाग मे त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र-मण्डल का लेखन करें।

ॐ फ्रें व्यापकमण्डलाय नमः॥ से पूजन करें।

ॐ फ्रें सिद्धिकरालि ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रेँ नमः स्वाहा॥ मन्त्र से कुंभ स्थापित करें।

अंकुश मुद्रा बनाकर निम्न मंत्र से उसमें तीर्थों का आवाहन करें।

ॐ फ्रें गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिङ्कुरु ॥
गङ्गाद्याः सरितस्सर्वा समुद्राश्च सरांसि च ।
सर्वेसमुद्राः सरितः सरांसि जलदा नदाः ॥
ह्रदाः प्रस्रवणाः पुण्याः स्वर्गपातालभूषिताः ।
सर्वतीर्थानि पुण्यानि घटे कुर्वन्तु सन्निधिम् ॥

धेनुमुद्रा बनाकर निम्न गायत्री से आठ बार कुम्भ का अभिमंत्रण करें।

ॐ फ्रें चण्डकपालिन्यै विद्महे गुह्यकाल्यै
धीमहि तन्नो सुधा प्रचोदयात् ॥

कुम्भमुद्रा; धेनुमुद्रा, लिंग मुद्रा तथा योनिमुद्रा प्रर्दशित करें।

ॐफ्रेंसिद्धिकरालिह्रीँछ्रीँहूँस्त्रीँफ्रेँनमःस्वाहा॥

मंत्र से जल, गंध तथा पुष्प से कुंभ की पूजा करें।

५ श्रीमदुत्तरनिर्वाणसंहिता के ग्यारहवें पटल में वर्धनीकुंभ के स्थापन का विधान दिया गया है।

॥ सामान्यार्घ्यस्थापनविधिः ॥[5]

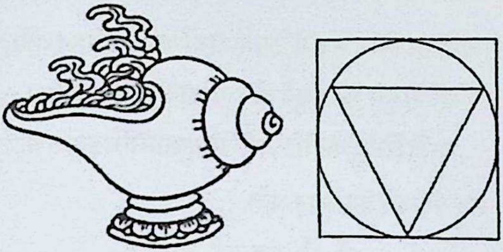

साधक अपने वामभाग में सामान्यार्घपात्र का स्थापन करें। भूमि पर जल अथवा गन्ध से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र-मण्डल का निर्माण करें। इसके मध्य में ह्रीँ बीज का लेखन करें। मत्स्यमुद्रा प्रर्दशित करें।

ॐ फ्रें श्रीगुह्यकालीसामान्यार्घ्यव्यापकमण्डलाय नमः॥ मंत्र से पुष्प द्वारा पूजन करें।

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्॥ मन्त्र से त्रिपदिका का क्षालन करें।

ॐ फ्रें श्रीगुह्यकालीसामान्यार्घ्यत्रिपादिकां स्थापयामि नमः॥ मन्त्र से त्रिपादिका मण्डल पर स्थापित करें।

ॐ फ्रें रँ धूम्रादिदशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः॥ मन्त्र से त्रिपादिका का पूजन करें।

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्॥ मन्त्र से शङ्ख का क्षालन् करें।

ॐ फ्रें महाशंखमुखी कालिकायै नमः॥ मन्त्र से तीन बार शंख को मण्डल के ऊपर आकाश में घुमावें।

ॐ फ्रें श्रीगुह्यकालीसामान्यार्घ्यपात्रं स्थापयामि नमः॥ मन्त्र से शंख त्रिपादिका पर स्थापित करें।

ॐ फ्रें अँ सिद्धिप्रदतपिन्यादिद्वादशकलात्मने अर्कमण्डलाय नमः॥ से सामान्याऽर्घ्यपात्र की पूजा करें।

---

५ श्रीमदुत्तरनिर्वाणसंहिता के बारहवें पटल में सामान्यार्घ्य तथा प्रोक्षणीपात्र के स्थापन का विधान दिया गया है।

ॐ फ्रें सिद्धिकरालि ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा॥ मंत्र से वामामृत अथवा जल द्वारा पूरित करें।

अङ्कुशमुद्रा बनाकर निम्न मंत्र से उसमें तीर्थों का आवाहन करें।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिङ्कुरु ॥

अक्षत द्वारा सप्त गंगाओं का पूजन करें।

ॐ फ्रें गङ्गायै नमः ॥
ॐ फ्रें यमुनायै नमः ॥
ॐ फ्रें गोदावर्यै नमः ॥
ॐ फ्रें सरस्वत्यै नमः ॥
ॐ फ्रें नर्म्मदायै नमः ॥
ॐ फ्रें सिन्धवे नमः ॥
ॐ फ्रें कावेर्यै नमः ॥

ॐ फ्रें श्फ्रें महाशंखमुखी कालिकायै नमः॥ मन्त्र से बिल्वपत्र, अक्षत, दूर्वा आदि का निक्षेप करें।

ॐ फ्रें सौं कामप्रदामृतादिषोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः॥ मन्त्र से सामान्याऽर्घ्यपात्र में स्थित जल की गन्धपुष्पाक्षत से पूजा करें। ,

जल के मध्य त्रिकोण कल्पित कर उसके मध्य **व्फ्रें** बीज का लेखन करें। निम्न मंत्र का पाठ करें।

शंखमूले स्थिता ब्राह्मी ब्रह्मणा सहसंस्थिता ।
शंखमध्ये महालक्ष्मीविष्णुना सह संस्थिता ।
शंखाग्रे शांकरी नित्यं शंकरेणेव संस्थिता ॥

धेनुमुद्रा बनाकर वँ बीज का अष्टबार जप करें।

मत्स्यमुद्राद्वारा आच्छादित कर मूलमन्त्र से दशबार अभिमन्त्रित करें। शङ्खमुद्रा, धेनुमुद्रा तथा योनिमुद्रा प्रदर्शित करें। अर्घ्यपात्र में से थोडा सा जल वर्धनी कुम्भ तथा प्रोक्षणीपात्र में डालें।

प्रोक्षणीपात्रस्थ जल द्वारा निम्न मंत्र से अपने शरीर एवं पूजा के उपकरणों का प्रोक्षण करें। कालिकार्चनकाले तु यानि यानीह सांप्रतम्। वस्तूनि सौरभेयानि पवित्राणीह सिद्धये॥

इस प्रकार सामान्यार्घ्य तथा प्रोक्षणीपात्र की स्थापन करें।

(पूजा में प्रोक्षणीपात्र चलितपात्र होता है अतः इसे सामान्यार्घ्यपात्र के पास अथवा साधक अपनी सुविधा के अनुरूप अन्यत्र भी रख सकते हैं।)

॥ विशेषार्घ्यस्थापनविधिः ॥[6]

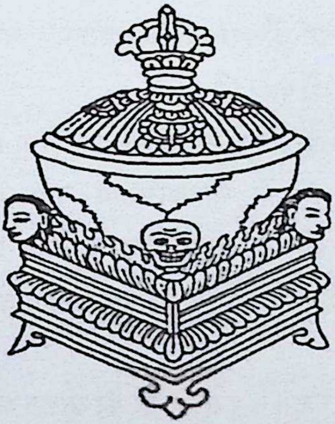

साधक अपने तथा इष्टदेवता के मध्य विशेषार्घ्यपात्र का स्थापन करें। साधक भूमि पर सामान्यार्घ्यजल अथवा गन्ध से त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्र-मण्डल का निर्माण करें। इसके मध्य में फ्रैं बीज का लेखन करें। मत्स्यमुद्रा प्रदर्शित करें। मंडल के चतुरस्र में षडङ्गमंत्रों से पूजन करें।

ॐ फ्रैं हृदयाय नमः ॥

आग्नेयेसिद्धिकरालिशिरसेस्वाहा॥

ईशाने ह्रीं छ्रीं हूँ शिखायै वषट् ॥

नैर्ऋत्ये स्त्रीं फ्रैं कवचाय हूँ ॥

वायव्ये नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥

---

६ श्रीमदुत्तरनिर्वाणसंहिता के तेरहवें पटल में विशेषार्घ्य, शक्तिपात्र, गुरुपात्र तथा भोगपात्र के स्थापन का विधान दिया गया है।

मध्ये स्वाहा अस्त्राय फट् ॥

पूर्व से प्रारम्भ कर मंडल के षट्कोण में आसनमंत्रों से पूजन करें।

ॐ फ्रैं कृतयुगादिमुण्डासनेभ्यो नमः ॥

ॐ फ्रैं ऋग्वेदादिमुण्डासनेभ्यो नमः ॥

ॐ फ्रैं सृष्ट्यादिमुण्डासनेभ्यो नमः ॥

ॐ फ्रैं इन्द्रादिदशदिग्पालमुण्डासनेभ्यो नमः ॥

ॐ फ्रैं पंचप्रेतासनेभ्यो नमः ॥

ॐ फ्रैं अशेषमन्त्रतन्त्रमुद्रासनाय नमः ॥

त्रिकोण में निम्न मंत्रों से पूजन करें।

ॐ श्रीगुह्यकाल्यात्मासनाय नमः ॥

ॐ फ्रैं श्रीचक्रासनाय नमः ॥

ॐ फ्रैं उड्डियाणपीठाय नमः ॥

ॐ फ्रैं श्रीगुह्यकालीविशेषार्घ्यपात्रमण्डलाशेषशक्तिकमलासनाय नमः॥ मन्त्र से बिन्दु का पूजन करें।

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्॥ मन्त्र से आधार का क्षालन करें।

ॐ फ्रैं त्रीँ श्रीगुह्यकालीविशेषार्घ्यपात्राधारं स्थापयामि नमः॥ मन्त्र से आधार स्थापित करें।

ॐ फ्रैं रँ धूम्रादिदशकलात्मने वह्निमण्डलाय विशेषार्घ्यपात्रसनाय नमः॥ मन्त्र से आधार का पूजन करें।

ॐ फ्रैं ह्रीँ विशेषार्घ्यपात्रं शोधयामि नमः॥ मन्त्र से नरकपाल, विश्वामित्रकपाल अथवा सुवर्ण, रजत ताम्रादि धातु से निर्मित विशेषार्घ्यपात्र का शोधन करें।

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्॥ मन्त्र से विशेषार्घ्यपात्र का क्षालन करें।

ॐ धूँ धूँ धूमावति धूपय धूपय श्रीपात्रं धूँ नमः॥ मन्त्र से विशेषार्घ्यपात्र का धूपन करें।

ॐ फ्रैं ह्रीँ श्रीँ श्रीगुह्यकालीविशेषार्घ्यपात्रे ब्रह्माण्डं भावयामि नमः॥ मन्त्र से पात्र के ब्रह्माण्डाकार होने की भावना करें।

ॐ ब्रँ ब्रह्माण्डकपालिनि भ्रम भ्रम नमः॥ मन्त्र से तीन बार पात्र को मण्डल के ऊपर आकाश में घुमावें।

ॐ फ्रँ ह्रीँ श्रीँ श्रीगुह्यकालीविशेषार्घ्यपात्रं स्थापयामि नमः॥ मन्त्र से पात्र को आधार पर स्थापित करें।

ॐ फ्रँ अँ सिद्धिप्रदतपिन्यादिद्वादशकलात्मने अर्कमण्डलाय नमः॥ मन्त्र से विशेषार्घ्यपात्र की पूजा करें।

ॐ फ्रँ श्रीँ ह्रीँ महावारुणी विद्महे महालक्ष्मी धीमही तन्नो सम्वित् प्रचोदयात् ॥

ॐ फ्रँ ह्रीँ श्रीँ श्रीगुह्यकालीविशेषार्घ्यपात्रं पूरयामि नमः॥ मंत्र से कुम्भ के जल अथवा कारण द्वारा पूरित करें।

गङ्गेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्वति। नर्मदेसिन्धुकावेरिजलेस्मिन्सन्निधिङ्कुरु॥ मंत्र से उसमें तीर्थों का आवाहन अङ्कुशमुद्रा बनाकर करें।

श्रीपात्र को स्पर्श कर निम्न पांच मन्त्रों से अभिमन्त्रित करें।

ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतपीयूषसमतावह ।
आपूरित महापात्रं पीयूषरसमावह ॥
अखण्डैक रसानन्दकरे परसुधात्मके ।
अधिष्ठानं स्वके पात्रे निधेहि कुलरूपिणि ॥
अकुलस्थामृताकारे सिद्धि ज्ञान करे परे ।
अमृतत्वंनिधेह्यस्मिन्वस्तूनिक्लिन्नरूपिणी॥
तद्रूपेणैकरस्यं च दत्त्वार्घ्ये तत्स्वरूपिणि ।
भूत्वा परामृताकारं मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥
अहन्तापात्रभरितं इदन्तापरमामृतम् ।
पराहन्तामये वह्नौ होमस्वीकारलक्षणम् ॥

ॐ फ्रँ सौँ कामप्रदामृतादिषोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः॥ बोलकर विशेषार्घ्यपात्रस्थजल की पूजा गन्धपुष्पाक्षत से करें।

ॐ फ्रँ सिद्धिकरालि ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रँ नमः स्वाहा॥ मन्त्र से बिल्वपत्र, अक्षत, दूर्वा, कर्पूर, स्वयंभूपुष्प आदि का निक्षेप करें।

निम्न मन्त्रों द्वारा पञ्चरत्नो की पूजा करें।

ॐ ग्लूँ गगनरत्नेभ्यो नमः ॥ पूर्वे

ॐ स्लूँ स्वर्गरत्नेभ्यो नमः ॥ दक्षिणे

ॐ प्लूँ पातालरत्नेभ्यो नमः ॥ पश्चिमे

ॐ म्लूँ मर्त्यरत्नेभ्यो नमः ॥ उत्तरे

ॐ न्लूँ नागरत्नेभ्यो नमः ॥मध्ये

पात्रस्थद्रव्य के मध्य मे दक्षिणावर्तक्रम से निम्न शक्तिचक्र का लेखन करें।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः ॥

कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ ॥

थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ ॥

चक्र के मध्य हँ ळँ क्षँ का लेखन करें।

पात्र के मध्य में अमृतेश्वरी का ध्यान निम्न मंत्रों से करें।

गुह्यकामकलामृतेश्वरि वराभयपद्मद्वये सुधाकुम्भद्वय जीवितमत्स्यशंखधराम् । रक्तपद्मसनस्थां नानारत्नालंकारभूषितां सोममण्डलाद्दिव्यामृतं स्रावयन्तीम् ॥

ॐ फ्रें हसक्षमलवरयूँ हसक्षमलवरयीं श्रीं ह्रीं ह्रीं अमृतयोगेश्वर्य्यै फ्रें नमःस्वाहा॥ मन्त्र से सुधा का पूजन पात्र में करें।

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी सुधाकाली अमृतं स्रावय स्रावय सौँ जूँ अमृतेश्वर्य्यै नमः॥ मंत्र से पांच बार अमृतमुद्रा बनाकर अभिमंत्रित करें। साधक आनन्दभैरव तथा आनन्दभैरवी का ध्यान करें।

आनन्दभैरवींचापिसामरस्यमुपागताम्। सूर्यकोटिप्रतीकाशंचन्द्रकोटिसुशीतलम् ॥१॥
अष्टदशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम् । अमृतार्णवमध्यस्थश्वेतपद्मोपरिस्थितम् ॥२॥
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम् । कपालखट्वांगधरं घण्टाडमरूवादिनम् ॥३॥
पाशांकुशधरं देवं गदमुसलधारिणम् । खड्गखेटक चक्रर्ष्टिपर्शुमुद्गरशूलिनम् ॥४॥
भुशुण्डिधारिणं घोरं वरदभयपाणिनम् । लोहितं देवदेवेशं भावयेद् भैरवीयुतम् ॥५॥

ॐ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवाय वषट्॥ मंत्र से गंध तथा पुष्प द्वारा आनन्दभैरव का पूजन करें। आनन्दभैरवी का ध्यान करें।

समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीराब्धौ सागरोत्तमे ।
तत्रोत्पन्नां सुरां देवीं कुमारीरूपधारिणीम् ॥१॥
भावयेच्च सुरां देवीं चन्द्रकोट्यमृतप्रभाम् ।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥१॥
अष्टदशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम् ।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सन्मुखीम् ॥२॥

ॐ सहक्षमलवरयीँ सुरादेव्यै वौषट्॥ मंत्र से गंध तथा पुष्प द्वारा आनन्दभैरवी का पूजन करें।

ॐ फ्रैं हृदयाय नमः॥ मंत्र से पात्र के ऊपर पद्ममुद्रा प्रदर्शित करें।

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्॥ मंत्र से पात्र के ऊपर चक्रमुद्रा प्रदर्शित करें।

ॐ स्त्रीँ फ्रैं कवचाय हूँ॥ मंत्र से पात्र के ऊपर अवगुंठनी मुद्रा प्रदर्शित करें।

ॐ नमः नेत्रत्रयाय वौषट्॥ मंत्र से दिव्य दृष्टि से पात्र का निरीक्षण करें।

धेनुमुद्रा बनाकर वँ बीज का अष्टबार जप करें।

विशेषार्घ्यपात्रका षडङ्गमंत्रों से पूजन करें।

ॐ फ्रैं हृदयाय नमः ॥ आग्नेये
सिद्धिकरालि शिरसे स्वाहा ॥ ईशाने
ह्रीँ छ्रीँ हूँ शिखायै वषट् ॥ नैर्ऋत्ये
स्त्रीँ फ्रैं कवचाय हूँ ॥ वायव्ये
नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ मध्ये
स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ चतुर्दिक्षुः
ऐँ बीज से पात्र का संदीपन करें।

मत्स्यमुद्राद्वारा आच्छादित कर निम्न मन्त्र से दश बार अभिमन्त्रित करें।

स्फ्रैं एह्येहि अमृते अमृतोद्भवे अमृतयोगेश्वरी अमृतं स्रावय स्रावय द्रावय द्रावय अमृतं कुरु कुरु सुवासं गृह्ण गृह्ण दोषं मुञ्च मुञ्च द्राँ द्रीँ द्रूँ द्रैँ द्रौँ द्रः मृत्युञ्जयामृतगुह्यकाल्यै द्रः सोऽहं सः स्वाहा ॥

शङ्खमुद्रा, धेनुमुद्रा, लिंगमुद्रा तथा योनिमुद्रा प्रदर्शित करें।

ॐ फ्रें गँ गुह्यकालीविशेषार्घ्यपात्राय गन्धाक्षतं निवेदयामि नमः॥ मंत्र से गंधाक्षत व पुष्प द्वारा पात्र का पूजन करें।

ॐ धूँ धूँ श्रीँ गुह्यकालीविशेषार्घ्यपात्राय धूपं निवेदयामि नमः॥ मंत्र से धूप दिखावें।

ॐ फ्रें दाँ गुह्यकालीविशेषार्घ्यपात्राय दीपं निवेदयामि नमः॥ मंत्र से धूप दिखावें।

तत्पश्चात गुरुचतुष्टय, आनन्दयामल तथा इष्टदेवता का तर्पण अपने देह पर करें।

श्रीपात्र के दक्षिण में समान्यार्घ्यपात्रस्थापन की विधि से क्रमशः शक्तिपात्र, गुरुपात्र, तथा भोगपात्र को स्थापित करें।

॥ आत्मपूजा ॥

तत्पश्चात् साधक आत्मपूजा करें।

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें नमः॥ मंत्र से अपने मस्तक पर जल का सिंचन करें।

ॐ फ्रें ह्रीँ चन्दनं नमः॥ मंत्र से अपने ललाट पर चन्दन लगावें।

ॐ छ्रीँ हूँ वीरभस्मसिन्दूरं नमः॥ मंत्र से सिन्दूर की त्रिन्दू अथवा तिलक धारण करें।

ॐ ख्फ्रें पुष्पं नमः॥ मंत्र से शिरोभाग पर पुष्प धारण करें।

ॐ स्त्रीँ फ्रें अक्षतं नमः॥ मंत्र से अक्षत धारण करें।

॥ श्रीगुह्यकालीयन्त्रलेखनविधानम् ॥

श्री हाहारावतन्त्र में वर्णित श्री गुह्यकाली यन्त्र के लेखन के विधान का वर्णन किया जाता है। यहां सृष्टिक्रम के अनुसार यन्त्र के लेखन का वर्णन किया गया है। श्रीमान् साधक सर्वप्रथम बिन्दु का लेखन करें। तत्पश्चात समान भुजाओं वाले त्रिकोण की रचना करें। इसके बाह्य भाग में पंचकोण (पंचार) का अंकन करें। पंचकोण के बाहर नवकोण (नवयोनियों) का निर्माण करें। इसके बाह्य स्थान पर अष्टकोण की रचना करें। अष्टकोण के बाद मर्यादावृत्त बनाकर अष्टदल का अंकन करें। अष्टदल के अग्रभाग में मर्यादावृत्त बनाकर द्वादशदलों का निर्माण करें।

द्वादशदलाग्र में पुनः मर्यादावृत्त बनाकर षोडशदलों का अंकन करें। इसके बाह्यभाग

में चारों दिशाओं में कबंध प्राकार (मुंड से अंकित भूपुर) का निर्माण करें। प्राकार (भूपुर) के ईशान आदि चार कोनों में आठ त्रिशूलों का अंकन करें। शूल के बाह्यभाग में ५४ मुण्ड की माला अंकित करें। समस्त कामनाओं की पूर्ति हेतु इसके बाहर अष्ट श्मशानों का अंकन करें। अष्ट श्मशानों में प्रज्वलित चिताग्नि, जलते शव, सियार, उल्लू, भैरव, कौआ, वेताल, अष्ट चैत्यों तथा अष्ट लिंगों का अंकन करना चाहिए। अष्ट दिशाओं में चिता आदि का अंकन करनें से समस्तप्रकार के महापातकों का नाश होता हैं।

यहां वर्णित ५४ मुण्ड की माला, ८ श्मशान आदि का अंकन सम्भव हो तो अष्टत्रिशूल के बाद करना चाहिए। अशक्त होने पर बिंदु से अष्टत्रिशूल पर्यन्त के यंत्र का लेखन कर उसके बाह्यभाग में इनकी कल्पना करने से भी काम चल सकता है। 7

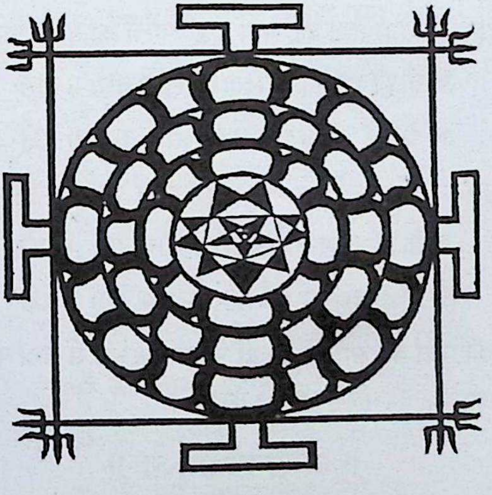

(गुह्यकालीयन्त्रम्)

७ श्रीहाहारावतंत्रे पूजापटले-

बिन्दुत्रिकोण पंचार नवकोणं पुनर्लिखेत्। अष्टारं चाष्टदलकं दशद्वादशक तथा ॥
षोडशं दलं संलिख्य मुण्डप्राकारं संलिखेत्। चतुःपंचाशकं देवीकबंधं समुदाहृतम् ॥
त्रिशूलाग्रे मुण्डमाला चतुःपंचाशके लिखेत् । अष्टदिक्षुश्मशानाष्टं विलिखेत्कामदायकम् ॥
ज्वलिताग्नौ दग्धशवं शृंगालोलूकभैरवम्। काकवेतालचौत्यं च लिंगाश्चाष्टश्मशानके ॥
चिताष्टदिक्षु प्रलिखे महापातकनाशनम् ॥
तत्र बिन्दु त्रिकोण पंचकोण नवकोण अष्टकोण अष्टदल द्वादशदल षोडशदल कवन्ध प्रकाराः ४ शूलाष्टकं ८ अष्टश्मशानं चक्रं लिखित्वा देवीं स्मरेत् ॥

॥ द्वारपालपूजा ॥

अपने सम्मुख के पूर्व यन्त्रद्वार पर वाम तथा दक्ष भाग में द्वारपालों का पूजन निम्न मन्त्रों से करें।

ॐ फ्रैं ह्रीँ श्रीँ कालाक्षद्वारपालाय नमः ॥ वामे

ॐ फ्रैं ह्रीँ श्रीँ कालरात्रद्वारपालाय नमः ॥ दक्षे

पश्चिमं के यन्त्रद्वार पर वांम तथा दक्ष भाग में द्वारपालों का पूजन निम्न मन्त्रों करें।

ॐ फ्रैं ह्रीँ श्रीँ मृत्युध्वजद्वारपालाय नमः ॥ वामे

ॐ फ्रैं ह्रीँ श्रीँ वामध्वजद्वारपालाय नमः ॥ दक्षे

उत्तर के यन्त्रद्वार पर वाम तथा दक्ष भाग में द्वारपालों का पूजंन निम्न मन्त्रों करें।

ॐ फ्रैं ह्रीँ श्रीँ कङ्कालद्वारपालाय नमः ॥ वामे

ॐ फ्रैं ह्रीँ श्रीँ महाश्वद्वारपालाय नमः ॥ दक्षे

दक्षिण यन्त्रद्वार पर वाम तथा दक्ष भाग में द्वारपालों का पूजन निम्न मन्त्रों करें।

ॐ फ्रैं ह्रीँ श्रीँ महाचण्डद्वारपालाय नमः ॥ वामे

ॐ फ्रैं ह्रीँ श्रीँ चण्डेश्वरद्वारपालाय नमः ॥ दक्षे

द्वारपालको की पूजा कर साधक **ॐ ह्रीँ फ्रैं नमः॥** मंत्र से यन्त्र पर पुष्पांजलि प्रंदान करें। तत्पश्चात आसनपक्ष का पूजन आरम्भ करें।

॥ आसनपक्षपूजा ॥

सर्वप्रथम आधारशक्ति से लेकर पद्म पर्यंत के अष्टपुष्टिकासनों का यजन करें।

ॐ ह्रीँ आधारशक्त्यै नमः ॥१॥

ॐ अँ अनन्ताय नमः ॥२॥

ॐ प्रीँ पृथिव्यै नमः ॥३॥

ॐ क्ष्लीँ शोणितार्वाय नमः ॥४॥

ॐ पौँ पोताय नमः ॥५॥

ॐ कँ कन्दाय नमः ॥६॥

ॐ नाँ नालाय नमः ॥७॥
ॐ पँ पद्मासनाय नमः ॥८॥

तत्पश्चात् २० मुण्डासनों की पूजा करें।

ॐ फ्रँ कृतयुगमुण्डासनाय नमः ॥१॥
ॐ फ्रँ त्रेतायुगमुण्डासनाय नमः ॥२॥
ॐ फ्रँ द्वापरयुगमुण्डासनाय नमः ॥३॥
ॐ फ्रँ कलियुगमुण्डासनाय नमः ॥४॥
ॐ फ्रँ ऋग्वेदमुण्डासनाय नमः ॥५॥
ॐ फ्रँ यजुर्वेदमुण्डासनाय नमः ॥६॥
ॐ फ्रँ सामवेदमुण्डासनाय नमः ॥७॥
ॐ फ्रँ अथर्ववेदमुण्डासनाय नमः ॥८॥
ॐ फ्रँ इन्द्रमुण्डासनाय नमः ॥९॥
ॐ फ्रँ वह्निमुण्डासनाय नमः ॥१०॥
ॐ फ्रँ यममुण्डासनाय नमः ॥११॥
ॐ फ्रँ नैर्ऋत्यमुण्डासनाय नमः ॥१२॥
ॐ फ्रँ वरुणमुण्डासनाय नमः ॥१३॥
ॐ फ्रँ वायुमुण्डासनाय नमः ॥१४॥
ॐ फ्रँ धनदमुण्डासनाय नमः ॥१५॥
ॐ फ्रँ ईशानमुण्डासनाय नमः ॥१६॥
ॐ फ्रँ अनन्तमुण्डासनाय नमः ॥१७॥
ॐ फ्रँ ब्रह्ममुण्डासनाय नमः ॥१८॥
ॐ फ्रँ सृष्टिमुण्डासनाय नमः ॥१९॥
ॐ फ्रँ प्रलयमुण्डासनाय नमः ॥२०॥

पुनः सप्त प्रेतासनों का यजन करें।

ॐ फ्रँ ब्रह्मप्रेतासनाय नमः ॥१॥

ॐ फ्रें विष्णुप्रेतासनाय नमः ॥२॥

ॐ फ्रें रुद्रप्रेतासनाय नमः ॥३॥

ॐ फ्रें ईश्वरप्रेतासनाय नमः ॥४॥

ॐ फ्रें सदाशिवप्रेतासनाय नमः ॥५॥

ॐ हूँ भैरवप्रेतासनाय नमः ॥६॥

ॐ फ्रें श्रीं हूँ फ्रें महाशिवासनाय नमः ॥७॥

इस प्रकार साधक भगवती गुह्यकाली के सताइस आसन देवताओं का यजन करें। समयाभाव या पूजासङ्कोच में साधक अष्ट पुष्टिकासनों की पूजा कर केवल निम्न मंत्र से एकतन्त्रेण इन सताइस आसनों का पूजन कर सकते हैं।

ॐ फ्रें सप्तविंशतिमुण्डासनाय नमः ॥

॥ श्रीगुह्यकालीध्यानम् ॥

हाथ में जवा, बिल्व, रक्तकरवीर आदि पुष्प लेकर कूर्ममुद्रा बनावें। कुलकुण्डलिनी सुशुम्नामार्ग मार्ग से क्रमशः मूलाधारचक्र, मणिपूरचक्र, स्वाधिष्ठानचक्र, अनाहतचक्र, विशद्धिचक्र, आज्ञाचक्र का भेदन करते हुए सहस्रार में परमशिव से संयोग कर रही है, ऐसा ध्यान कर चन्द्रमण्डल से निर्झरित रक्तामृतपान करावें। ध्यान श्लोकों का पाठ कर कुलकुण्डलिनी का गुह्यकाली रूप में ध्यान करें।

नीलोत्पलदलश्यामा नीलरत्नाविनिर्मिता ।
ज्ञानलक्ष्मीच्छटाटोपज्योतिर्मण्डलसंभवा ॥१॥
दशवक्त्रा गुह्यकाली सप्तविंशतिलोचना ।
अष्टोत्तरशतार्द्धं च भुजादण्डै नरानना ॥२॥
दीपकं ऊर्द्धकं वक्त्रं चण्डयोगेश्वरी मतम् ।
ज्योतिर्मयमहावक्त्रं निर्वाणपददायिनी ॥३॥
तदधः सिंहवदनं श्वेतवर्णं सुभास्वरम् ।
फेरुवक्त्रं च तदधः कृष्णं त्रैलोक्यडामरम् ॥४॥
कपीन्द्रस्य मुखं वामे रक्तवर्णं महोल्वणम् ।

कोलवक्त्रं भवेद्दक्षं धूम्रवर्णं भयानकम् ॥५॥
ताक्ष्यर्वक्त्रं च वामञ्च पिंगवर्णसचुञ्चुकम् ।
दक्षिणे मकरास्यं च हरिताभं प्रकीर्तितम् ॥६॥
गजास्यं वामके प्रोक्तं गौरवर्णं महोल्वणम् ।
हयास्यं दक्षिणे काल्या श्यामवर्णं विचिन्तयेत् ॥७॥
सर्वदंष्ट्रा कराला च त्रिनेत्रा भीमनादिनी ।
भ्रूभङ्गकुटिला भीमा कालास्य श्रीमुखोत्तमा ॥८॥
पिङ्गलोर्ध्वजटाटोपचन्द्रार्द्धकृतशेखरा ।
नानारत्नैश्च घटिका श्वेतकाद्यालिमालिनी ॥९॥
सप्तविंशतिमुण्डैश्च रक्तविप्लुषसंयुता ।
वज्राणि पुष्पसंयुक्तं शिरोमाला प्रकीर्तिताः ॥१०॥
चिद्रत्नवटिका काद्यं खड्गपाशं च शक्तिकम् ।
खट्वाङ्गमुण्डधनुषं चक्रं घण्टा च सुस्वनः ॥११॥
बालप्रेतञ्च शैलञ्च कङ्कालनकुलं तथा ।
सर्पं च कुट्टनीवंशषडम्रं ओविका पुनः ॥१२॥
वह्निपात्रञ्च दण्डञ्च सुवमष्टादकेशरी ।
वस्त्रमुद्गरडमरुं विभ्रती बाणबाहुभिः ॥१३॥
चिद्रत्नवटिकाकर्तृतर्जन्यं कुशदण्डकम् ।
रत्नपूर्णं च कलशं त्रिशूलं दुष्टनाशनम् ॥१४॥
पञ्चपशुपता वाणं पद्मद्वीपमनागतम् ।
कुन्तञ्च पाणिजातञ्च फणिका तोमरं तथा ॥१५॥
पुष्पमाला डिण्डिमं च गृद्धं स्वस्तिकवर्द्धनी ।
कमण्डलुश्रुवाञ्चैव पशुपुष्टिभयापहम् ॥१६॥
नन्द्यावर्तं कुण्डलं च मांसखण्डसुशोभनम् ।
वीजपूरफलं शूची विभ्रती दक्षबाहुभिः ॥१७॥

व्याघ्रचर्मपरीधानां कालचर्मोत्तरीयकाम् ।
किंकिणीजालशोभाढ्यां वीरघण्टानिनादिनीम् ॥१८॥
नौपुरारावनिर्घोषा घर्घरारावभीषणा ।
कनकाङ्गदकेयूरा महास्थिकृतशोभना ॥१९॥
मुण्डमालागले देव्या आपादान्तविलम्बिनी ।
रक्तपद्ममयीमालां शुष्ककाद्यलिकास्तथा ॥२०॥
काञ्चीकट्टारकोपेतां कटि देव्या विराजितां ।
ब्रह्मसूत्रोज्वलत्कण्ठाद्योगपट्टोत्तरीयका ॥२१॥
सौम्याग्रभूषणैर्युक्ता नागराजाद्यलंकृता ।
रक्तकुण्डलकर्णं श्रीपञ्चकालासनस्थिता ॥२२॥
शिवासनं तदूर्ध्वं च नीलं नादोर्ध्वलांछनम् ।
महार्घरत्नमांसञ्च कृष्णवर्णं चतुर्भुजम् ॥२३॥
एकवक्त्रं त्रिनयनं भैरवाभरणान्वितम् ।
कर्तृकपालहस्तं च डमरुखट्वाङ्गधारिणम् ॥२४॥
एवं भैरवपीठन्तु देव्या आसनमुत्तमम् ।
पञ्चप्रेतं च तदधः ब्रह्माद्याः पञ्चकारणाः ॥२५॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
पीतश्यामं रक्तधूम्रं श्वेताभावं च कारणाः ॥२६॥
दण्डचक्रशक्तिशूलखट्वाङ्गायुधधारकाः ।
तर्जनीमुखनिःक्षिप्ता शिवधस्था त्रिलोचना ॥२७॥
पिङ्गरक्तत्रिगुण्याभिहेतुत्कारणभीषणा ।
वज्रदंष्ट्रा नखस्पर्शा पद्मपृष्ठे शिवोत्तमा ॥२८॥
शचीपत्यादिरन्तं च दिगवर्णं सवर्णकम् ।
इन्द्रं पीताभवज्रं च वह्निं रक्तं सशक्तिकम् ॥२९॥
यमं कृष्णं च दंडं च धूम्रं नैर्ऋत्यखड्गकम् ।

वरुणं पाशशुभ्रास्य वायुः श्यामांकुशध्वजम् ॥३०॥
कुबेरं कुंकुमगदां शुभ्रमीशानशूलकम् ।
दिगष्टपतये ज्ञेयमासनं परिकीर्तितम् ॥३१॥
शुक्लं कृतयुगं ज्ञेयं पीतं त्रेतायुगं स्मृतम् ।
द्वापरं चारुणं वर्णं श्यामं चैव कलि स्मृतम् ॥३२॥
ऋग्वेदं शुक्लवर्णं च यजुर्वेदं सुवर्णवत् ।
सामं रक्तमिति ख्यातं कृष्णाथर्वणमुच्यते ॥३३॥
उपवेदस्तथावर्णा नवमासनमुच्यते ।
सहस्रसूर्यज्वालाग्रमासनं परिकीर्तितम् ॥३४॥
पद्मोपरिस्थिता देवी नृत्यमाना सदोदिता ।
अथवा सुख चासीनं सर्वदेवाधियन्त्रिता ॥३५॥
सहस्रसूर्यप्रतिभां दुर्निराक्षा दुरासदाम् ।
सर्वदेवाश्रयी नित्या मालिनी जयमङ्गला ॥३६॥
मुक्तहूंकारजिह्वाग्रलालयन्तं विचिंतयेत् ।
प्रत्यालीढपदा वापि नृत्यमानापि च स्मरेत् ॥३७॥
सर्वमन्त्रमयी धीरा सर्वलक्ष्मी जयेश्वरी ।
एवंध्यायागुह्यकालीमभीन्ननवयौवना ॥३८॥

पूजासंकोच अथवा समयभाव में निम्न संक्षिप्त ध्यानश्लोक का पाठ किया जा सकता है।

ब्रह्मादिपंचकयुगश्रुतिदिक्पतिनां मुण्डेषु भैरवशिवाप्रलयानलेषु तस्योर्ध्वगे दशशतछदविद्रुमाभेपद्मेस्थितां भगवति परमा दशास्याम् । सिंहकोलकपित्रऋक्ष्यतुरङ्गतार्क्ष्य योगेश्वरीमकरमानवपंक्तिवक्त्रां धृतशूलाङ्कुशपर शुमुद्गरपाशपात्रङ्खट्वांग बालकशिरोङ्कितपाणिपद्माम् ॥

इस प्रकार मां गुह्यकाली का ध्यान करें। स्वयं तथा देवी गुह्यकाली में अद्वयभावना कर फ्रैं खफ्रैं फ्रैं॥ मंत्र से अपने सिर पर पुष्प से देवी का पूजन करें। इस पुष्प को देवी चैतन्य से युक्त भावना कर यन्त्र (मण्डल) पर स्थापित करें।

ॐ फेत्काररावसंलीनांचित्कलाखस्वरूपिणी।

निरालम्बा निराकारा निर्वाणेशि परेश्वरी ।

सर्वाम्नायेश्वरी नित्या सानिध्यं कुरु मण्डले॥ मंत्र से देवी का आवाहन करें।

फ्रैं ऐं ह्रीं महायोनिमुद्रायै नमः॥ मंत्र से महायोनि मुद्रा प्रदर्शित करें।

ॐ फ्रैं ॐ ख्फ्रैं ॐ ह्स्ख्फ्रैं नमः श्रीगुह्यभैरवसहिते श्रीगुह्यकालिके फ्रैं इहागच्छ इहागच्छ ।

ह्रीं इह तिष्ठ इह तिष्ठ ।

छ्रीं इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि ।

हूँ इह सन्निरुध्यस्व इह सन्निरुध्यस्व ।

स्त्रीं इह सन्मुखी भव इह सन्मुखी भव ।

फ्रैं अत्राधिष्ठानं कुरु कुरु ।

नमः मम सर्वोपचारसहित पूजां गृहाण गृहाण स्वाहा॥ मन्त्र से आवाहनादि की छः मुद्राएं प्रदर्शित करें।

षडङ्गमन्त्रों से सकलीकरण करें।

ॐ फ्रैं हृदयाय नमः ॥

सिद्धिकरालि शिरसे स्वाहा ॥

ह्रीं छ्रीं हूँ शिखायै वषट् ॥

स्त्रीं फ्रैं कवचाय हूँ ॥

नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥

स्वाहा अस्त्राय फट् ॥

अवगुण्ठनी मुद्रा बनाकर **स्त्रीं फ्रैं कवचाय हूँ॥** से अवगुण्ठन करें।

अमृतिकरण के लिए धेनुमुद्रा बनाकर वँ बीज का अष्टबार जप करें।

ॐ फ्रैं सिद्धिकराली ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं नमः स्वाहा॥ मन्त्र से परमीकरणमुद्रा बनाकर परमीकरण करें।

मूलमन्त्र द्वारा सामन्याघ्योंदक से देवी का तीन बार संप्रोक्षण करें।

मूलमंत्र से देवी के हृदय में अङ्गुष्ठ से जीव स्थापित करें।

लेलिहानमुद्रा का बन्धन हूँ बीज से कर हृदय का स्पर्श करते हुए प्राणप्रतिष्ठा करें। निम्न मन्त्रों की तीन बार आवृत्ति करें।

ॐ फ्रें ह्रीं आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हौं हँसः श्रीगुह्यकालिकायाः प्राणा इह प्राणाः ॥

ॐ फ्रें ह्रीं आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हौं हँसः श्रीगुह्यकालिकाया जीव इह स्थितः ॥

ॐ फ्रें ह्रीं आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हौं हँसः श्रीगुह्यकालिकायाः सर्वेन्द्रियाणि इहस्थितानि ॥

ॐ फ्रें ह्रीं आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हौं हँसः श्रीगुह्यकालिकाया वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्यसुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

प्रणव तथा मूलमन्त्र की १६ आवृत्ति करें।

ॐ अनेन यन्त्रस्था श्रीगुह्यकालिकायाः गर्भादानादि षोडशसंस्कारान्संपादयामि ॥

तत्पश्चात् त्रिशूलमुद्रा, अङ्कुशमुद्रा, परशुमुद्रा, मुद्गरमुद्रा, पाशमुद्रा, पात्रमुद्रा, खट्वांगमुद्रा, मुण्डमुद्रा तथा योनिमुद्रा प्रदर्शित करें। इन मुद्राओं के प्रदर्शन में असमर्थ होने पर साधक केवल योनिमुद्रा प्रदर्शित करें।

तत्पश्चात् निम्न मंत्रों से पाद, जानु, नाभि, हृदय तथा मस्तक पर पञ्च पुष्पाञ्जलि देवें।

रिश्वगेयोड चंहाम खफ्रें ॥ पादौ

डचं हाम खफ्रें रिश्वगेयो ॥ जानवे

डचं हाम खफ्रें योगेश्वरि ॥ नाभौ

योगेश्वरि खफ्रें महाचण्ड ॥ हृदये

खफ्रें महाचण्डयोगेश्वरि ॥ मस्तके

ॐ फ्रें फ्रें खफ्रें फ्रें फ्रें ॐ स्त्रीं ह्रीं श्रीं महामंगलाकालीं तर्पयामि स्वाहा॥ मंत्र से यन्त्र के बिन्दु पर १०८/५४/२७/१०/५ बार अर्घ्यजल से तर्पण करें।

देवी के पूजन के पहले जल, गन्ध, तथा पुष्प से गुह्येश्वरभैरव का यजन निम्न मन्त्र से करें।

ॐ फ्रें ह्रीँ हूँ हसक्षमलवरयूँ गुह्येश्वरभैरवाय नमः श्रीगुह्यमहाभैरव पादुकां पूजयामि॥

तत्पश्चात् गुह्यकाली देवी का पंचोपचार पूजन करें।

॥ गन्ध ॥

मध्यमा+अनामिका+अङ्गुष्ठ से गन्ध देवें।

ॐ ह्रीँ हूँ फ्रें ज्वलत्पावकलोचनी ज्वल ज्वल सुगन्धमालामालिनी गुह्यकालिके गन्धं समर्पयामि नमः ॥१॥

॥ पुष्प ॥

गुह्यकाली पूजा हेतु रक्त, नील, कृष्ण तथा श्वेत पुष्प प्रशस्त हैं। जवापुष्प, करवीर, तगर, मालती, जाती, पाटल, सेवन्ती, धतूरा, वकुल, कृष्णापराजिता, चंपक, बर्बरा, रक्तपद्मादि पुष्प तथा बिल्वादिपत्र उत्तम हैं। पूजा में दूर्वा, अपामार्ग, तुलसी तथा भृङ्गराज निशिद्ध है। समस्त विहितपुष्प तथा पत्र तर्जनी+अङ्गुष्ठ से ऊर्ध्वमुख देवें।

ॐ ह्रीँ हूँ फ्रें उग्रज्वालाकालिके प्रज्वल प्रज्वल पारिजातपुष्पमाला-लङ्कृतशरीरिणी गुह्यकालिके पुष्पं समर्पयामि वौषट् ॥२॥

॥ धूप ॥

धूपपात्र को अपने सम्मुख स्थापित कर **स्वाहा अस्त्राय फट्**॥ मन्त्र से सामन्यार्घ्योदक द्वारा प्रोक्षण करें।

ॐ फ्रें हृदयाय नमः॥ मन्त्र से पूजन करें। धूपपात्र को वामतर्जनी से स्पर्श करें।

ॐ ह्रीँ हूँ फ्रें धूपज्वालाप्रज्वलितमहाश्मशानवासिनी गर्ज गर्ज चन्दनागुरुकर्पूरकस्तूरीगोरोचनादिज्वालामालाप्रज्वलित महाधूपधूपितशरीरिणी गुह्यकालिके धूपं समर्पयामि नमः॥३॥ मंत्र द्वारा अर्घ्यजल से देवी गुह्यकाली को निवेदित करें।

खफ्रें जयध्वनिमंत्रमातः स्वाहा॥ से घण्टा पूजन करें।

वामहस्त से वादन करते हुए मध्यमा+अनामिका+अंगुष्ठ द्वारा धूपपात्र लेकर इष्टगायत्री तथा मूलमंत्र का तीन बार जप कर देवी को नासिकापर्यन्त धुपदान करें। धूपपात्र देवी के वामभाग में स्थापित करें।

॥ दीप ॥

सम्मुख तिल के तेल का रक्तवर्ति युक्त अथवा सर्शप तेल का श्वेतवर्ति युक्त दीपपात्र को अपने सम्मुख स्थापित करें।

स्वाहा अस्त्राय फट्॥ मन्त्र से सामन्याघ्योंदक द्वारा प्रोक्षण करें।

ॐ फ्रैं हृदयाय नमः॥ से पूजन करें। वाममध्यमा द्वारा स्पर्श करें।

ॐ ह्रीँ हूँ फ्रैं दिव्यामृतकर्दमभूषित कर्पूरपरिलिप्त प्रलयाग्निज्वालादीपमण्डित महामन्दिरभयङ्करी नर्त नर्त गुह्यकालिके दीपं समर्पयामि नमः॥ मंत्र से अर्घ्यजल द्वारा निवेदित करें।

वामहस्त से घण्टावादन करते हुए मध्यमा+अनामिका+अंगुष्ठ से दीप को देवी की दृष्टि तक तीन बार इष्टगायत्री तथा मूलमंत्र से प्रदर्शित करें। देवी के दक्षिणभाग में दीप को स्थापित करें।

॥ नैवेद्य ॥

तदन्तर नैवेद्य अर्पित करें। देवी के दक्षिण में त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र-मण्डल लिखे। **ह्रीँ आधारशक्त्यै नमः॥** से मण्डल का पूजन करें।

विभिन्न प्रकार के नैवेद्यों को स्वर्णादि के पात्र में रख कर मण्डल पर स्थापित करें। मूलमंत्र द्वारा वीक्षण करें।

स्वाहा अस्त्राय फट्॥ से सामान्यार्घ्य द्वारा प्रोक्षण करें।

स्वाहा अस्त्राय फट्॥ से चक्रमुद्रा बनाकर संरक्षण करें।

स्त्रीँ फ्रैं कवचाय हूँ॥ से अवगुण्ठनमुद्रा बनाकर अवगुण्ठन करें।

बाएं हाथ का तलवा दाएं हाथ के पृष्ठ पर स्थापित कर वायुबीज **यँ** से १२ बार अभिमन्त्रित कर शोषण करें।

दाएं हाथ का तलवा बाएं हाथ के पृष्ठ पर स्थापित कर वह्निबीज **रँ** से १२ बार अभिमन्त्रित कर दहन करें।

धेनुमुद्रा बनाकर **वँ** बीज का अष्टबार जप कर अमृतिकरण करें।

ॐ फ्रैं हृदयाय नमः॥ से नैवेद्यपात्र का पूजन करें।

मूलमन्त्र से अष्टबार अभिमन्त्रित करें। वामांगुष्ठ से पात्र का स्पर्श करें। निम्न मन्त्र से नैवेद्य निवेदित करें।

ॐ ह्रीँ हूँ फ्रें मधूमत्स्यमाहिषाजमहामांसवराहामेषादि ज्वालामालाप्रज्वलित मधुमांसोपेतदिव्यान्ननैवेद्यभक्षिणी मम शत्रुन् खाहि खाहि गुह्यकालिके नैवेद्यं समर्पयामि नमः ॥५॥

इस प्रकार नैवेद्य निवेदित कर प्रथम तथा अंतिम मन्त्र से जल देवें। शेष पंच मंत्रों का पाठ कर वामहस्त से ग्रासमुद्रा तथा दक्षिण हस्त से ५ प्राणादि मुद्राएं प्रदर्शित करें।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा॥ मन्त्र से जल देवें।

कनिष्ठिका+अनामिका+अङ्गुष्ठ **ॐ प्राणाय स्वाहा॥**

मध्यमा+तर्जनी+अङ्गुष्ठ **ॐ अपानाय स्वाहा॥**

अनामिका+मध्यमा+अङ्गुष्ठ **ॐ व्यानाय स्वाहा॥**

तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+अङ्गुष्ठ+ ॐ समानाय स्वाहा॥

सर्वांगुली+अङ्गुष्ठ **ॐ उदानाय स्वाहा॥**

ॐ अमृतपिधानमसि स्वाहा॥ मन्त्र से जल देवें। पुनः पानीय जल निवेदित करें।

पंचोपचार पूजन के पश्चात दोनों नवाक्षरी मंत्रों से ३/५/९ बार बिन्दु पर पूजन करें।

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें नमःश्रीगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥

खफ्रें महाचण्डयोगेश्वरि श्रीगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥

तत्पश्चात रामोपासित तथा भरतोपासित षोडशाक्षरी मंत्रों से से ३/५/९ बार बिन्दु पर पूजन करें।

ॐ फ्रें सिद्धिकरालि ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें नमः स्वाहा श्रीगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥

ॐ खफ्रें सिद्धिकरालि ह्रीँ छ्रीँ हूँ त्रीँ फ्रें फट् स्वाहा नमः श्रीगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥

खफ्रें कालरात्र्यै विद्महे कालसङ्कर्षिण्यै धीमहि तन्नो काली प्रचोदयात्॥ गुह्यकाली गायत्री से ३/५/९ बार बिन्दु पर पूजन करें।

ॐ फ्रैं सिद्धि म्लीँ महाचण्डकापालिनी हूँ फ्रैं करालि ह्रीँ हूँ महाकालि छ्रीँ स्त्रीँ निर्वाणेश्वरी ॐ नमः पराशक्तिकाली हूँ पञ्चचक्रेश्वरी खफ्रैं महाकालरात्री स्त्राँ ह्स्त्राँ ह्स्फ्रैं न्हीँ क्ष्त्रीँ मङ्गला परमहंसिनी थ्रीँ ध्रीँ ठ्रीँ फ्राँ सृष्टि फ्रीँ स्थिति फ्रैं संहार फ्रौँ आनाख्या फट् भासा खफ्रैं ह्स्खफ्रैं गुह्यकाली फट् फट् फट् नमः स्वाहा श्रीगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥ शताक्षरीविद्या द्वारा ३/५/९ बार बिन्दु पर पूजन करें।

ॐ खफ्रैं ह्स्खफ्रैं खफ्रैं ह्रीँ श्रीगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि॥ श्रीगुह्यकाली की हृदयविद्या से ३/५/९ बार बिन्दु पर पूजन करें।

ॐ ह्रीँ खफ्रैं ह्स्खफ्रैं खफ्रैं ह्रीँ श्रीगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि॥ श्रीगुह्यकाली की महाहृदयविद्या से ३/५/९ बार बिन्दु पर पूजन करें।

ॐ नमो भगवति चामुण्डे हूँ हूँ हूँ स्वरूपिणी इच्छे चित्ते त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ गुह्यकालिके सर्वकर्मकरी क्ष्रौँ क्ष्रौँ क्ष्रौँ फ्रौँ फ्रौँ फ्रौँ हूँ हूँ हूँ क्रीँ क्रीँ क्रीँ फट् हूँ फट् ॐ फट् प्रचण्डे किलि किलि किचि किचि मोहय मोहय जंभय जंभय हन हन कव कव किरि किरि ग्रस ग्रस हस हस छ्रीँ स्त्रीँ त्रीँ त्रीँ त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ भ्रामय भ्रामय घूर्णय घूर्णय निद्रावय निद्रावय प्राणान् हन हन प्राणहारि जीवहारी हर हर मारय मारय आनय आनय खाद खाद ॐ गृह्ण गृह्ण हूँ फ्रैं मारय मारय क्षँ क्षँ फ्रैं फ्रैं हूँ हूँ क्रँ क्रँ मार मार हर हर क्षः क्षः हूँ हूँ जूँ सूँ छूँ हूँ हूँ हूँ जः जः खः खः हाँ हाँ जलभीषणी भैरवी फ्रैं मर्मछेदनी फट् ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ कह कह रौद्र हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ फट् फट् फट् फट् फट् छ्रीँ छ्रीँ छ्रीँ जूँ जूँ जूँ फ्रैं फ्रैं फ्रैं मर्ममर्माभिघाते हन हन हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ फट् फट् फट् फट् फट् नमः स्वाहा श्रीगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥ गुह्यकाली हृदयमालामंत्र से ३/५/९ बार बिन्दु पर पूजन करें।

तदोपरांत पंचकोण में पंचकालिकाओं का पूजन निम्न मंत्रों से करें। ॐ आँ खफ्रैं फ्राँ फ्रीँ रिश्वगेयोड चंहाम खफ्रैं महासृष्टिकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥ ॐ आँ खफ्रैं फ्राँ फ्रीँ डचं हाम खफ्रैं रिश्वगेयो महास्थितिकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥ ॐ आँ खफ्रैं फ्राँ फ्रीँ डचं हाम खफ्रैं योगेश्वरि महासंहारकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥ ॐ आँ खफ्रैं फ्राँ फ्रीँ योगेश्वरि खफ्रैं महाचण्ड महानाख्याकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥ ॐ आँ खफ्रैं फ्राँ फ्रीँ खफ्रैं महाचण्डयोगेश्वरि महाभासाकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥ ॐ आँ खफ्रैं फ्राँ फ्रीँ सृष्टिस्थितिसंहारानाख्याभासाकालिकाम्बापादुकां पूजयामि ॥ मंत्र से इनका समिष्टि पूजन करें।

कृताञ्जलि होकर भगवति गुह्यकाली से आवरण पूजा की आज्ञा मांगे।

संव्विन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये ।
अनुज्ञां कालिके देहि परिवारार्च्चनाय मे ॥

१

श्रीमान् साधक गुह्यकाली यन्त्र में सर्वप्रथम रक्त से परिपूर्ण समुद्र का पूजन करें।

ॐ हूँ क्ष्लीँ क्लीँ फ्रँ शोणितार्ण्णवाय नमः ॥१॥

२

तत्पश्चात आठों दिशाओं में वामावर्त अष्टश्मशानों की पूजा करें।

पूर्वे ॐ ह्रीँ हूँ छ्रीँ फ्रँ करवीरश्मशानाय नमः ॥१॥
दक्षिणे ॐ ह्रीँ हूँ छ्रीँ फ्रँ जयावहश्मशानाय नमः ॥२॥
पश्चिमे ॐ ह्रीँ हूँ छ्रीँ फ्रँ कालदण्डश्मशानाय नमः ॥ ३॥
उत्तरे ॐ ह्रीँ हूँ छ्रीँ फ्रँ कालपाशश्मशानाय नमः ॥४॥
आग्नेये ॐ ह्रीँ हूँ छ्रीँ फ्रँ लक्ष्मीवनश्मशानाय नमः ॥५॥
नैर्ऋत्ये ॐ ह्रीँ हूँ छ्रीँ फ्रँ धूमाकुलश्मशानाय नमः ॥६॥
वायव्ये ॐ ह्रीँ हूँ छ्रीँ फ्रँ असिपत्रश्मशानाय नमः ॥७॥
ईशाने ॐ ह्रीँ हूँ छ्रीँ फ्रँ भूतावासश्मशानाय नमः ॥८॥

३

पूर्वदिशा के मुंडप्राकार पर शूल पर्यन्त चौबीस कालियों का पूजन करें।

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ महामंत्रदंष्ट्रिनी काली अम्बा पाद हूँ फ्रँ नमः ॥१॥
ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ धूम्राकाली अम्बा पाद हूँ फ्रँ नमः ॥२॥
ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ ज्वालिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रँ नमः ॥३॥
ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ गंधारिणीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रँ नमः ॥४॥
ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ गणेश्वरीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रँ नमः ॥५॥
ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ मायाकाली अम्बा पाद हूँ फ्रँ नमः ॥६॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ शांताकाली अम्बां पाद हूँ फ्रैं नमः ॥७॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ नित्याकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥८॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ विद्याकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥९॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ कामनन्दिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१०॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ उमानन्दिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥११॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ श्रियानन्दिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१२॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ सुभगानन्दिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१३॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ पुरानंदिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१४॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ महालक्ष्मीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१५॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ इठामरीरिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१६॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ सर्वगाकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१७॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ विद्याकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१८॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ मीनजाकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१९॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ अमृताकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥२०॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ चंडिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥२१॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ अंतरिक्षकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥२२॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ सिद्धियोनिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥२३॥

ॐ छ्रीँ ब्लूँ हूँ श्रीँ विद्याधरीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥२४॥

४

दक्षिणदिशा के मुंड प्राकार पर शूल पर्यन्त अठाईस कालियों का पूजन करें।

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ महासुखमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ शीलमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ सूर्यमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥३॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ सोममूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥४॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ आनन्दमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥५॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रभामूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥६॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ नभोमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥७॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ क्षीरमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥८॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ अर्च्चिषामूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥९॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ केतुमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१०॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ कुलिशमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥११॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रहरणमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ मण्डलमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१३॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ महातापकीमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१४॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ रासवीमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१५॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ ऋक्षमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१६॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ शवमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१७॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ रावमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१८॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ भीषणमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१९॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ ज्ञानमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥२०॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ ज्योतिमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥२१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ तत्त्वमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥२२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ वीरमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥२३॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ कालनलमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥२४॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ महाज्ञानमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥२५॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ महाघोरमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥२६॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ त्रासकीमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥२७॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ राक्षसीमूर्तिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः ॥२८॥

५

पश्चिमदिशा के मुंड प्राकार पर शूल पर्यन्त पन्द्रह कालियों का पूजन करें।

ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ व्योमवामेश्वरी अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः॥१॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ खेचरी अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥२॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ दिग्चरी अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥३॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ गोचरी अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥४॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ भूचरी अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥५॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ रसचरी अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥६॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ हंसमती अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥७॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ विमलमती अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥८॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ विष्णुमती अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥९॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ सिंहमती अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥१०॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ खण्डमती अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥११॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ वीरचक्रमती अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥१२॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ अहीमति अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥१३॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ आदिराममती अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥१४॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ हूँ भैरवसिंहमती अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥१५॥

६

उत्तर दिशा के मुंडप्राकार पर गुरुओं के क्रम का पूजन करें।

ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रेँ श्रीकण्ठनाथ श्रीपाद हूँ फ्रेँ नमः॥१॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रेँ दुर्वासानाथ श्रीपाद हूँ फ्रेँ नमः ॥२॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रेँ व्योमेशनाथ श्रीपाद हूँ फ्रेँ नमः ॥३॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रेँ वशिष्ठनाथ श्रीपाद हूँ फ्रेँ नमः ॥४॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रेँ अन्धकनाथ श्रीपाद हूँ फ्रेँ नमः ॥५॥

ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ दशकंधरनाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥६॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ मीननाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥७॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ हयग्रीवनाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥८॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ गर्भानन्दनाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥९॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ भद्रागौरेश्वरनाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१०॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ गणनाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥११॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ महेन्द्रनाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१२॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ व्योमननाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१३॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ जयद्रथनाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१४॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ खेचरीनाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१५॥
ॐ ह्रीँ हूँ ह्सैँ फ्रैँ सिद्धनाथ श्रीपाद हूँ फ्रैँ नमः ॥१६॥

७

तत्पश्चात षोडशदल पर वामावर्त क्रम से सोलह कालियों का यजन श्रीमान साधक करें।

ॐ ह्रीँ हँसः महाज्ञानमूर्तिकालि अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥१॥
ॐ ह्रीँ हँसः अग्निकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥२॥
ॐ ह्रीँ हँसः सूर्यकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥३॥
ॐ ह्रीँ हँसः सोमकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥४॥
ॐ ह्रीँ हँसः आनन्दकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥५॥
ॐ ह्रीँ हँसः प्रभाकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥६॥
ॐ ह्रीँ हँसः नभकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥७॥
ॐ ह्रीँ हँसः क्षीरकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥८॥
ॐ ह्रीँ हँसः उमच्चिकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥९॥
ॐ ह्रीँ हँसः ज्ञानप्रभाकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥१०॥
ॐ ह्रीँ हँसः समकुलाशप्रहरणकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥११॥
ॐ ह्रीँ हँसः ज्ञानपाण्डरकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैँ नमः॥१२॥

ॐ ह्रीँ हँसः तापकीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥१३॥
ॐ ह्रीँ हँसः नराशयीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥१४॥
ॐ ह्रीँ हँसः ऋक्षकालीअम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥१५॥
ॐ ह्रीँ हँसः सहस्रमुखकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥१६॥

८

तत्पश्चात् द्वादशदल पर वामावर्त क्रम से बारह कालियों का पूजन करें।

ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् महामेलापकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥१॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् मार्जरीमुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥२॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् उल्कामुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥३॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् प्रचण्डमुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥४॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् भीममुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥५॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् राक्षसमुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥६॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् त्रैलोक्यमुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥७॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् अनंगमुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥८॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् मोहनमुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥९॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् विद्यावरमुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥१०॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् मनतीमुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥११॥
ॐ हूँ ह्रीँ श्रीँ फट् विद्याधरमुखीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः॥१२॥

९

पुनः साधक अष्टदल पर वामावर्त क्रम से अष्टमातृकाकालियों अर्चन करें।

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रैं असितांगभैरवासनाय अष्टाष्टकयोगिनीसहिताय ब्रह्मवती काली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥१॥
ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रैं रुरुभैरवासनाय अष्टाष्टकयोगिनीसहिताय रुद्रवतीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥२॥
ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रैं चण्डभैरवासनाय अष्टाष्टकयोगिनीसहिताय कुमारवतीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥३॥
ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रैं क्रोधभैरवासनाय अष्टाष्टकयोगिनीसहिताय विष्णुवतीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रैं नमः ॥४॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ उन्मत्तभैरवासनाय अष्टाष्टकयोगिनीसहिताय घोरवतीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥५॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ कपालभैरवासनाय अष्टाष्टकयोगिनीसहिताय माहेंद्रवतीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥६॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ भीषणभैरवासनाय अष्टाष्टकयोगिनीसहिताय चर्चिकावतीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥७॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ संहारभैरवासनाय अष्टाष्टकयोगिनीसहिताय महालक्ष्मीवतीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥८॥

१०

तत्पश्चात् अष्टार पर वामावर्तक्रम से अष्टकालियों का अर्चन करें।

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ मुण्डिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥१॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ मुद्गलाकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥२॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ दंष्ट्रिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥३॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ शृंगारकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥४॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ शूलिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥५॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ वज्रिणीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥६॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ पाशिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥७॥

ॐ ह्रीँ हूँ च्छ्रीँ फ्रेँ अंकुशिनीकाली अम्बा पाद हूँ फ्रेँ नमः ॥८॥

११

निम्न मंत्रों से नवयोनि के नवकोणों में नवकालियों का पूजन करें।

ॐ फ्रेँ ख्फ्रेँ ह्रीँ श्वेतकालिकायै छ्रीँ ह्रीँ हूँ फ्रेँ नमः ॥१॥

ॐ फ्रेँ ख्फ्रेँ ह्रीँ रक्तकालिकायै छ्रीँ ह्रीँ हूँ फ्रेँ नमः ॥२॥

ॐ फ्रेँ ख्फ्रेँ ह्रीँ झंकारकालिकायै छ्रीँ ह्रीँ हूँ फ्रेँ नमः ॥३॥

ॐ फ्रेँ ख्फ्रेँ ह्रीँ सुवर्ण्णकोटिकालिकायै छ्रीँ ह्रीँ हूँ फ्रेँ नमः ॥४॥

ॐ फ्रेँ ख्फ्रेँ ह्रीँ राजराजेश्वरीकालिकायै छ्रीँ ह्रीँ हूँ फ्रेँ नमः ॥५॥

ॐ फ्रें खफ्रें ह्रीं सिद्धिपद्माकालिकायै छ्रीं ह्रीं हूं फ्रें नमः ॥६॥

ॐ फ्रें खफ्रें ह्रीं गुह्यकुब्जाकालिकायै छ्रीं ह्रीं हूं फ्रें नमः ॥७॥

ॐ फ्रें खफ्रें ह्रीं वज्रकालिकायै छ्रीं ह्रीं हूं फ्रें नमः ॥८॥

ॐ फ्रें खफ्रें ह्रीं सुन्दरीकालिकायै छ्रीं ह्रीं हूं फ्रें नमः ॥९॥

१२

पुनः साधक पंचकोणों में पंचकालियों का यजन करें ।

ॐ आँ खफ्रें फाँ फीँ सृष्टिकाली अम्बा पाद हूं फ्रें नमः ॥१॥

ॐ आँ खफ्रें फाँ फीँ स्थितिकाली अम्बा पाद हूं फ्रें नमः ॥२॥

ॐ आँ खफ्रें फाँ फीँ संहारकाली अम्बा पाद हूं फ्रें नमः ॥३॥

ॐ आँ खफ्रें फाँ फीँ अनाख्याकाली अम्बा पाद हूं फ्रें नमः ॥४॥

ॐ आँ खफ्रें फाँ फीँ भासाकाली अम्बा पाद हूं फ्रें नमः ॥५॥

१३

तत्पश्चात् पंचकोण के मध्य षडङ्ग देवताओं का पूजन करें।

ईशाने खफ्राँ फ्राँ ह्राँ हृदयाय सर्वज्ञताशक्त्यै नमः ॥१॥

आग्नेये खफ्रीँ फ्रीँ ह्रीँ शिरसे नित्यतृप्तिताशक्त्यै स्वाहा ॥२॥

वायव्ये खफ्रूँ फ्रूँ हूँ शिखायै अनादिबोधिनीशक्त्यै वषट् ॥३॥

नैर्ऋत्ये खफ्रैँ फ्रैँ ह्रैँ कवचाय स्वतंत्रताशक्त्यै हूँ ॥४॥

मध्ये खफ्रौँ फ्रौँ ह्रौँ नेत्रत्रयाय नित्यालुप्तशक्त्यै वौषट् ॥५॥

चतुर्दिक्षुः खफ्रः फ्रः ह्रः अनन्तशक्त्यै फट् ॥६॥

१४

पुनः बिन्दु पर मुंडासनों का पूजन करें।

ॐ फ्रें चतुर्युगमुण्डासनाय नमः ॥

ॐ फ्रें चतुर्व्वेदमुण्डासनाय नमः ॥

ॐ फ्रैं दशदिग्पतिमुण्डासनाय नमः ॥

ॐ फ्रैं सृष्टिसंहारमुण्डासनाय नमः ॥

ॐ फ्रैं ब्रह्माविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिवायपंचभूतात्मककालासनाय नमः ॥

ॐ हूँ महाभैरवप्रेतासनाय नमः ॥

ॐ फ्रैं श्रीँ हूँ फ्रैं महाशिवासनाय नमः ॥

१५

तत्पश्चात् देवी के द्वारा दक्षिण तथा वाम हस्त में धारण किए गए अष्ट आयुधों का पूजन करें। दक्षिणहस्ते :

ॐ सौँ त्रिशूलाय नमः ॥

ॐ क्रौँ अंकुशाय नमः ॥

ॐ ख्फ्रैं परशवे नमः ॥

ॐ भ्राँ मुद्गराय नमः ॥

वामहस्ते -

ॐक्षौँखट्वाङ्गायनमः॥

ॐ आँ पाशाय नमः॥

ॐ सः कपालाय नमः॥

ॐ फ्रैं मुण्डाय नमः॥

१६

तत्पश्चात् बिन्दु पर माता गुह्यकाली के ज्योतिर्मयनिर्वाणमुख सहित नवमुखों का पूजन करें।

ख्फ्रैं ह्रीँ महाचण्डयोगेश्वरी ठ्रीँ ध्रीँ थ्रीँ फट् फट् फट् फट् फट् फट् चण्डयोगेश्वरी उर्द्ध्ववक्त्र निर्व्वाणकालिकादेव्यै नमः ॥०॥

ख्फ्रैं चण्डकापालिनी महाकाली सिद्धिकाली सिंहवक्त्रायै सिद्धिकालिकादेव्यै नमः ॥१॥

आँ खफ्रें हारिश्वगेयोडचंहाम शिवावक्त्रायै कालसङ्कर्षिणीदेव्यै नमः ॥२॥
स्क्ष्रीँ ह्स्फ्रें खफ्रें डचंमहायोगेश्वरी कोलवक्त्रायै डामरेश्वरी देव्यै नमः ॥३॥
ह्राँ ह्रीँ श्रीँ खफ्रें डचं महायोगेश्वरी कपिवक्त्रायै कुब्जिकादेव्यै नमः ॥४॥
स्क्ल्हीं ह्स्फ्रीं खफ्रें योगेश्वरीचण्डमहा तार्क्ष्यवक्त्रायै श्रीसुन्दरी देव्यै नमः ॥५॥
ज्झ्रीँ खफ्रें हूँ स्त्रीँ महाचण्डरिश्वगेयो मकरवक्त्रायै झङ्कारिणी देव्यै नमः ॥६॥
क्लीँ स्त्रीँ छ्रीँ ह्रीँ खफ्रें डचं योगेश्वरी हाम गजवक्त्रायै प्रत्यंगिरा देव्यै नमः ॥७॥
हाँछ्रीँख्रँख्राँख्रँगेयोरिश्वमहाचण्डहसक्षमलवरयूँहयवक्त्रायैसिद्धियोगेश्वरीदेव्यैनमः ॥८॥
ॐफ्रेंसिद्धिकरालीमहाचण्डठ्रीँध्रीँश्रीँकालग्रासनीनरवक्त्रायैगुह्यकालीदेव्यैनमः ॥९॥

इस प्रकार साधक मां गुह्यकाली के षोडश आवरणों का यथाशक्ति यजन करें।

आवरणपूजा के पश्चात समस्त दोषों की निवृत्ति के लिए समयभोगविद्या से ३/५/९ बार बिन्दु पर पूजन करें।

ॐ नमो महामाये रुद्रायै हूँ फ्रें त्रैलोक्यत्राणकारिणी छ्रीँ छ्रीँ सिद्धि सिद्धि ह्रीँ ह्रीँ धारय धारय पुत्रधनधान्यरत्न सुवर्ण हिरण्य दारा कुटुम्ब महानिधि सिद्धिं द द द द महागौरी स्मृति महामेधा यशास्त्र राज्यसौभाग्यसर्वान् दिशन्तु सर्वकर्मकरि सिद्धिचामुण्डे पूरय पूरय ह्रीँ सर्वमनोरथान् सर्वसम्पदान् वर्ष वर्ष वर्षापय वर्षापय पातय पातय महानिधिं द द द द अष्टैश्वर्यं द द द द गृह धन आयु सौभाग्यं निधानं धान्यं हिरण्यं द द द द सतत सर्वसिद्धिं कुरु कुरु धर धर ह्रीँ ह्रीँ स्त्रीँ स्त्रीँ फ्रें रत्नमयं वर्ष द द द द सर्वयक्षान् आदेशय आदेशय आज्ञापय आज्ञापय श्रियं राज्यं द द द द अविघ्नं कुरु कुरु नमो महा्यक्षराजाराधितायै ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ छ्रीँ छ्रीँ छ्रीँ स्त्रीँ महाधनं द द द द मम सर्वधनं प्रयच्छ प्रयच्छ सिद्धिगौरी हूँ हूँ नमः ठः ठः ठः स्वाहा श्रीसमयभोगगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥

समस्त दोषों के शमन के लिए तीन समयविद्याओं का बार बिन्दु पर पूजन करें।

ॐ नमः श्री चामुण्डे प्रचण्डे फेत्कारिणी दुहि दुहि फट् जालन्धरे महालक्ष्मी चरित्रे वाराही नगरे चरित्रे दुर्वासिनी कर्णकुब्जे महाकर्णी अष्टमातरी माहेश्वरी ब्रह्माणी वैष्णवी इन्द्राणी कौमारी वाराही माहेन्द्री चामुण्डा महालक्ष्मी श्रीसिद्धलक्ष्मी भैरवी गुह्यश्रीमहाकाली माये महामाये सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसंसारतारिणी देवीकोटकामरूपवासिनी श्मशानभैरवप्रिये समरसाद्वैताचारप्रिये ह्रीँ हूँ फट् स्वाहा श्रीगुह्यसमयाम्बा पादुकां पूजयामि ॥१॥

ऐँ फ्रैँ हूँ ह्रीँ वूँ श्रीँ किचि किचि किलि किलि हन हन दह दह ग्रस ग्रस हेँ हेँ फ्रैँ सिद्धभैरवी सर्वयोगिनीनां समरसकारिणी त्रिलोकवासिनी सर्वगते विषम दुर्गवनपर्वतवासिनी संग्रामवासिनी जयविजयप्रदे पथे पथोपवासिनी वृक्षवृक्षोपवासिनी सर्वे सर्वगते जये जयति अजिते अपराजिते छ्रीँ स्त्रीँ तारणी पूरिणी ह्रीँ नमः समसमयति द्विप्रभवति प्रविशति ख्फ्रैँ ख्फ्रैँ छ्रीँ स्त्रीँ जूँ फ्रैँ नमः स्वाहा श्रीगुह्यसमयाम्बा पादुकां पूजयामि ॥२॥

हूँ भैरवसहितं त्रैलोक्यमाते हेँ वेँ छ्रूँ नमः स्वाहा श्रीगुह्यसमयाम्बा पादुकां पूजयामि ॥३॥

अन्त में निर्वाणगुह्यकाली तथा महानिर्वाणगुह्यकाली के मंत्रों से बिंदु पर ३/५/९ बार पूजन करें।

ॐ फ्रें ह्स्ख्फ्रें ख्फ्रें निर्वाणगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥

ॐ खँ महानिर्वाणगुह्यकालिकाम्बा पादुकां पूजयामि ॥

निर्वाणपूजन के पश्चात कालीक्रम के समस्त देवताओं तथा मंत्रों का लय भगवती के ज्योर्तिमय, निर्गुण निराकार स्वरूप में होने की भावना करें।

तत्पश्चात निम्न मंत्र से ३/५/९ बार देवी को पुष्पांजलि अर्पित करें।

ॐ ह्रीँ हूँ फ्रैँ चण्डप्रचण्डी चल चल रक्ताकारप्रज्वलितकरवीरादिपुष्पमालिनी इमां पुष्पाञ्जलिं गृह्ण गृह्ण मम शत्रुन् हन हन मां रक्ष रक्ष गुह्यकालिके हूँ फट् नमः स्वाहा ॥

॥ बलिदानविधिः ॥

आवरणपूजा कर साधक बलिकर्म का संपादन करें। नित्यपूजा में मात्र मूल देवता को बलि प्रदान करने से काम चल जाता है। पर्वपूजा तथा विशिष्टपूजा के अवसर पर बटुक, योगिनी, क्षेत्रपाल, गणपति, क्षेत्रपाल, गुह्यभैरव तथा सर्वभूतों को बलि प्रदान करनी चाहिए। उत्तम पक्ष तो यह है कि नित्य ही अष्टदेवताओं को बलि प्रदान करें। अलग-अलग बलि प्रदान करने में असमर्थ साधक एक ही बड़े पात्र में अष्टबलि देवें।

अपने के दक्षिणभागमे त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डल लिखें।

ॐ फ्रैँ बलिपात्राधारमण्डलाय नमः॥ गन्धपुष्प से मण्डल की पूजा करें। सामिष अथवा निरामिष बलिद्रव्यों से पूर्ण कर बलिपात्र को मण्डल पर स्थापित करें।

ॐ फ्रैँ ख्फ्रैँ ह्स्ख्फ्रैँ बलिद्रव्याय नमः॥ मन्त्र से गन्धपुष्प द्वारा बलिद्रव्य का पूजन करें।

गंधपुष्पाक्षत से एकतंत्रेण श्रीगुह्यकाली का पूजन करें। **ॐ फ्रें साङ्गायै सायुधायै सावरणायै सपरिवारायै श्रीगुह्यभैरवयुतायै श्रीगुह्यकालिकायै नमः॥**

निम्न मंत्र से दक्षिणहस्त में अर्घ्यजल लेकर तथा वाम अङ्गुष्ठ+अनामिका से बलि उत्सर्ग मुद्रा बनाकर श्री गुह्यकाली को बलि देवें।

ॐ ह्रीँ हूँ फ्रें चण्डज्वालाप्रज्वलित महाश्मशानगुह्यकाली ज्वल ज्वल आगच्छागच्छ नर्त नर्त तिष्ठ तिष्ठ मम शत्रुन् भक्षय भक्षय ज्वालाचण्ड महाकाली नररुधिरमांसभक्षिणी नरलोकं मोहय मोहय ममाभीष्टं देहि देहि मधूमत्स्यमांसाद्योपकल्पितसमयाचारपूजा बलिं इमां अवलोकयावलोकय तुभ्यं निवेदयामि गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष हूँ फट् नमः स्वाहा ॥

(मांस, मत्स्य, मधु आदि कुलद्रव्यों की बलि में निम्न मंत्र का प्रयोग करें।)

ॐ फ्रें फ्रें फ्रें ह्स्ख्फ्राँ ह्स्ख्फ्रीँ ह्स्ख्फ्रेँ हसक्षमलवरयूँ सहक्षमलवरयीँ रजक्षमरयूँ महाचण्डयोगेश्वरि ख्फ्रेँ पञ्चतत्वात्मके सृष्टिस्थितिसंहारानाख्याभासानिलये पञ्चशतपञ्चकालीस्वामिनी नवपञ्चचक्रेश्वरि महायोगिनि फ्रें ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ स्त्रीँ गुह्यकालिके अलिपलल पूजाबलिं गृह्ण गृह्ण हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा ॥

(पायस, अन्न, कदली, नारिकेल, बिजौरा निम्बू आदि से बलि देने पर इस मंत्र का प्रयोग करें।)

तत्पश्चात् दक्षिणहस्त से जल को त्यागें।

निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देकर नमस्कार करें।

कालरात्रि गुह्यकाली कालिके घोरनिःस्वने ।

गृहाणेमं बलिं मातर्देहि सिद्धिमनुत्तमाम्॥

॥ मन्त्रजपविधिः ॥

बलि देकर रहस्यमाला पर मूलमंत्र का यथाशक्ति जप करें। महाशङ्खमाला की पूजा निम्न मंत्र से करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्स्ख्फ्रेँ ह्सौँ ह्रीँ रँ अघोरे ह्रीँ सौः अघोरायै ह्रीँ रँ परमघोरे हूँ ह्सौः परमघोरायै ह्रीँ रँ घोररूपे हँ ह्सौः घोररूपायै ह्रीँ रँ घोरामुखी स्हौँ घोरामुख्यै ह्रीँ हूँ फट् ह्सौँ भीमे भीमायै ह्रीँ हूँ भीषणी भीषणायै ह्रीँ हूँ ह्सँ ह्सौँ वामनायै ह्रीँ फट् पिबहे स्हौँ पिबनायै महामालायै शोधनायै पादुकां पूजयामि ॥

अथवा अनुकल्प से स्फटिकमाला पर गुह्यकाली मंत्र का जप करें। स्फटिकमाला की पूजा निम्न मंत्र से करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्स्ख्फ्रेँ ह्सौँ ह्लींनफह्लीँ नफमलवरयूँ श्रीमालिनीभट्टारिका पादुकां पूजयामि स्फटिकमालां शोधयामि नमः ॥

शरीर मे कामकला का ध्यान, शिर मे गुरु का ध्यान, हृदय मे देवि का ध्यान तथा जिह्वा पर मन्त्रदीप का ध्यान कर जिह्वा को दीपज्योति रूपिणी भावना कर, प्रणव का उच्चारण कर मानसिक अथवा उपांशु जप संस्कृत माला पर १०८ अथवा १००८ जप करें। जप समाप्त होने पर पुनः प्रणव का उच्चारण कर निम्न मन्त्र से माला को शिर पर धारण करें।

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मता ।
शुभङ्कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यञ्च सर्वदा ॥
ॐ ह्रीँ छ्रीँ फ्रेँ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः ॥

पुनः प्राणायाम तथा ऋष्यादिन्यास करके सामान्यार्घ्योदक से देवी के वाम हस्त में निम्न मंत्र से तेजोरूप जप समर्पित करें।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरी ॥

मन्त्र से देवी को एक या पञ्च पुष्पाञ्जलि देकर **ॐ ह्रीँ छ्रीँ फ्रेँ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः ॥**

से माला का पूजन कर माला को गोपित कर यथास्थान रखें।

तत्पश्चात् गुह्यकालीद्वादशनामस्तोत्र, गुह्यकालीशतनामस्तोत्र, गुह्यकालीकवच, गुह्यकालीसहस्रनाम आदि का पाठ करें।

पुनः उत्तरपूजा कर मूलमंत्र से प्रसन्न पुष्पाञ्जलि करें।

॥ उद्वासनविधिः ॥

निम्न मंत्रों से कृतांजलि वरयाचना करें।

कालि महाकालि कालिके पापहारिणि ।
धर्ममोक्षप्रदे देवि गुह्यकालि नमोऽस्तुते ॥१॥

संग्रामे विजयं देहि धनं देहि सदागृहे ।
धर्मकामार्थसम्पत्तिंदेहिकालिनमोऽस्तुते॥२॥
उल्कामुखि ललज्जिह्वे घोररावे भगप्रिये ।
श्मशानवासिनि प्रेते शवमांसप्रियेऽनघे ॥३॥
अरण्यचारिणि शिवे कुलद्रव्यमयीश्वरि ।
प्रसन्ना भव देवेशि भक्तस्य मम कालिके ॥४॥

निम्न मंत्र से श्रीदेवी की दण्डवत त्रिकोण प्रदक्षिणा करें।

काली विदध्यान्मम जीवरक्षां तथा कराली मम देहरक्षाम् ।
दुर्गाऽट्टहासैर्मम शत्रुनाशं करोतु तारा विदधातु राज्यम् ॥

निम्न मंत्र से अष्टांग नमस्कार करें।

सर्वशक्तिक्रमोद्भूतिप्रभिन्नामहमात्मिकाम् ।
देवस्य देवतां कांचित् संवित्सुखमयीं श्रये ॥

निम्न मंत्र से क्षमाप्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं छ्रीं फ्रें साङ्गायै सायुधायै सावरणायै सपरिवारायै श्रीमंगलायै त्रैलोक्यजनन्यै श्रीचक्रचक्रेश्वर्यै पूजयामि क्षमस्व क्षमस्व नमः स्वाहा ॥

सामान्यार्घ्योदक को लेकर निम्न मंत्र से देवि के चरणों में समर्पित करें।

ॐ ह्रीं छ्रीं फ्रें इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा पद्भ्यामुदरेणशिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं यत् कृतं तत् सर्वं श्रीगुह्यकालीदेव्यार्पण भवतु स्वाहा ॥

कृतांजली होकर पुष्प लेकर निम्न मंत्रों का पाठ करें।

यद् दत्तं भक्तिमात्रेण पुष्पं पत्रं फलं जलम् ।
निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणानुकम्पया ॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि ॥२॥
कर्मणा मनसा वाचा नास्ति वान्या गतिर्मम ।

अन्तश्चारेण भूतानां रक्ष त्वं परमेश्वरि ॥३॥

मातर्योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यम् ।

तेषु तेष्वच्युता भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि ॥४॥

देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत् ।

देवी जयति सर्वत्र या देवी सोऽहमेव हि ॥५॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्गतम् ।

क्षन्तुमर्हसि देवेशि कस्य न स्खलितं मनः ॥६॥

क्षमस्व देवदेवेशि गुह्यकाली महेश्वरि ।

तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥७॥

योनिमुद्रा बनाकर प्रणाम करें।

निम्न मंत्र से सामान्यार्घ्यपात्र को उठाकर देवि के ऊपर तीन बार भ्रमण करें।

साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ।

तत् सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम ॥

निम्न मंत्र से भगवती गुह्यकाली के वामहस्त में जल देकर यथास्थान स्थापित करें।

**ॐ फ्रें सिद्धिकरालि ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं
फ्रें नमः स्वाहा श्रीगुह्यभैरवसहिते
श्रीगुह्यकालिके पराङ्मुखार्घ्यं स्वाहा ॥**

सामान्यार्घ्योदक के कुछ जल को वामहस्त में ग्रहण कर सप्तवार अभिमंत्रित कर अपना तथा उपस्थित जनों का प्रोक्षण करें।

निम्न मन्त्रों को पढ़कर देवि के विसर्जन हेतु पुष्पांजलि देवें।

गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि ।

यत्र ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम् ॥

**ॐ फ्रें सिद्धिकरालि ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं
फ्रें नमः स्वाहा श्रीगुह्यभैरवसहिते
श्रीगुह्यकालिके पूजितासि प्रसीद प्रसीद
क्षमस्व क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ गच्छ ॥**

इस प्रकार विसर्जन कर संहारमुद्रा से यंत्र पर चढ़ा हुआ पुष्प उठाकर पूरक द्वारा सूंघे। भावना करें की देवी चैतन्य पुष्प के माध्यम से पुनःहृदय में प्रविष्ट हो चुका हैं। पुनः पूर्वोक्त स्वरूप का ध्यान करें।

निम्न मंत्र से हृदय में स्थापित करें। तिष्ठ तिष्ठ परे स्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि। यत्र ब्रह्मादयः सर्वे सुरास्तिष्ठन्ति मे हृदि॥

पुनः उस तेज को कुण्डलिनीरूप में ध्यान कर मूलाधार में स्थापित करें।

देवी का निर्माल्य उठाकर ॐ ह्रीँ चण्डेश्वर्यै नमः ॥ से पूजन करें।

यागमण्डप के ईशानकोण में बिन्दुत्रिकोणवृत्त चतुरस्र मण्डल का निर्माण करें। उस पर एक पात्र स्थापित करें।

निम्न मंत्र से नैवेद्य के शतांश तथा निर्माल्यपुष्प की बलि देवें।

ॐ फ्रेँ ह्रीँ श्रीगुह्यकालि श्रीमन्निर्म्माल्यचक्रपीठस्थे निर्माल्यवासिनि उत्तिष्ठोत्तिष्ठ श्रीगुह्यकालि श्रीमन्महामंगलनिर्माल्य वह वह धर धर गृह्ण गृह्ण निर्माल्य चण्डयोगिनी तुभ्यं समर्पयामि गृहाण गृहाण ह्स्फ्रेँ नमः स्वाहा ॥

तालत्रय से निर्माल्यवासिनी का विसर्जन करें।

निम्न मंत्र से गुरुदेव को प्रणाम करें।

देव नाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ॥

श्रीपात्र को उठाकर अपने शिर पर धारण करें।

निम्न मन्त्र से गुरुदेव का ध्यान कर श्रीपात्र समर्पित करें।

ॐ फ्रेँ ह्रीँ श्रीअमुकानन्दनाथ पात्रामृतं कृपया गृहाण नमः ॥

पुनः श्रीपात्र को अपने दक्षिणहस्त में त्रिखण्डमुद्रा से धारण कर वाम हस्त की तत्वमुद्रा से गुरुपादुकामन्त्र द्वारा शिर पर तीन बार तर्पण करें। पुनः पात्र को अपने स्थान पर स्थापित करें।

अन्यपात्र में श्रीपात्रामृत उद्धृत कर निम्न मन्त्रों से अभिमंत्रित करें।

ॐ १ आत्मतत्त्वाय नमः ॥

ॐ २ विद्यातत्त्वाय नमः ॥

ॐ ३ शिवतत्त्वाय नमः ॥

ॐ मूलंसर्वतत्त्वायनमः ॥

वामहस्त में पात्र ग्रहण कर निम्न मन्त्रों से दक्षिणहस्त द्वारा चुलुक चतुष्टय स्वीकार करें।

ॐ प्रकृतिबुद्ध्यहङ्कारमनःश्रोत्रत्वक् ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः ॐ मूलं आत्मतत्त्वात्मकाशुद्धचतुर्विंशतितत्त्वसहितं स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा ॥१॥

ॐ मायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मक झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ फ्रैं मूलं विद्यातत्त्वात्मकं सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा ॥२॥

ॐ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यादिपञ्चतत्त्वसहितं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ह्रीं मूलं शिवतत्त्वात्मकं परदेहं शोधयामि स्वाहा ॥३॥

ॐ शिवादिषट्त्रिंशत्तत्त्वसहितं अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ फ्रैं ह्रीं मूलं सर्वतत्त्वस्थूलसूक्ष्मपराख्यदेहरूपाभिमानिनं जीवात्मानं शोधयामि स्वाहा ॥४॥

पात्र को दोनों हाथों से लेकर निम्न मन्त्रों से पात्र के समस्तामृत द्वारा पूर्णाहुति देवें।

मूलम् ॥

गुरुपादुका ॥

प्रकाशाकाशहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनीस्रुचम्।
धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णां वह्नौ जुहोम्यहं स्वाहा ॥

षट्त्रिंशत्तत्त्वात्मकता की भावना कर दोनों हाथों द्वारा मूर्धादिपादान्त व्यापक न्यास करें। तत्पश्चात् शान्तिस्तोत्र का पाठ करें।

॥ शान्तिस्तोत्रम् ॥

योगिनीचक्रमध्यस्थं मातृमण्डलवेष्टितम् ।
नमामि शिरसा नाथं भैरवं भैरवीप्रियम् ॥१॥
अनादिघोरसंसारव्याधिध्वंसैकहेतवे ।
नमः श्रीनाथवैद्याय कुलौषधिप्रदायिने ॥२॥

शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥३॥
नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः ।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥४॥
संपूजकानां परिपालकानां यतीन्द्रयोगीन्द्रतपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ॥५॥

स्वगुरूपदिष्टविधि से शेषकृत्य का समापन करें।

ताम्रादि पात्र में गन्धपुष्पाक्षतायुक्त जल का पुरण कर निम्न मंत्र से भगवान कुलमार्तण्ड को अच्छिद्राार्घ्य देवें।

नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे ।
जगत्पवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने ॥
ह्राँ ह्रीँ सः प्रकाशशक्तिसहिताय
मार्तण्डभैरवाय इदमर्घ्यं स्वाहा ॥
यज्ञश्छिद्रं तपःच्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम ।
अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं भास्करस्य प्रसादतः॥ मन्त्र से प्रार्थना करें।

यदि महानिशाकाल मे सपर्या करें तो कुलेंदु को निम्न मन्त्र से अच्छिद्रार्घ्य देवें।

क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव ।
गृहाणार्घ्यं शशाङ्केदं रोहिण्या सहितो मम ॥
साँ सीँ सः रोहिणीशक्तिसहिताय
कुलेन्दवे इदमर्घ्यं स्वाहा ॥
यज्ञश्छिद्रं तपःच्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम ।
अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं शशाङ्कस्य प्रसादतः॥ मन्त्र से प्रार्थना करें।

मूलमंत्र से चन्दनादिलेप तथा पुष्प धारण करें।

श्रीगुह्यकालीदेवी के चरणोदक को ग्रहण करें।

देवी उपासकों में प्रसाद का वितरण करें।

सुहृद्बान्धवजन के साथ प्रसाद स्वीकार कर यथा सुख से विहार करें।

२

॥ श्रीगुह्यकालीलघुपूजाविधिः ॥

समयाभाव, द्रव्याभाव तथा ज्ञानाभाव से ग्रस्त सुकुमार साधकों के हितार्थ देवी गुह्यकाली की लघुपूजाविधि को लिखा जाता है। माता गुह्यकाली के चित्रपट, प्रतिमा शास्त्रविहित खड्ग, दर्पण, कट्टारिका तथा अमूर्तपीठ पर इनकी पूजा की जा सकती है। वह साधक जो विस्तार से देवी का पूजन करने में असमर्थ हो, वे निम्न विधि का आलम्बन कर गुह्यकाली की लघु पूजा संपादित करें।

सर्वप्रथम पूर्व में कहे विधान के अनुसार आचमन तथा प्राणायाम करें। तत्पश्चात् संकल्प वाक्य का पाठ करें।

अपने आसन की पूजा **ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः॥** मन्त्र से गन्धाक्षतपुष्प द्वारा करें। निम्न मन्त्रों से गुरू,गणपति तथा इष्टदेवी को वामभाग, दक्षिणभाग तथा मध्यभाग में प्रणाम करें।

वामे ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः॥

दक्षे ॐ गणपतये नमः॥

मध्ये ॐ गुह्यकालिकायैनमः॥

द्वारदेवताओं का एकतन्त्रेण पूजन **ॐ द्वारदेवताभ्यो नमः॥** गन्धाक्षतपुष्प से करें।

तत्पश्चात् पूर्व में कहे गये ऋष्यादिन्यास, करन्यास तथा षडंगन्यास संपादित करें। जलपात्र स्थापित करें।

ॐ फ्रें सप्तविंशतिमुण्डासनाय नमः॥ मन्त्र से एकतन्त्रेण देवी के आसनों का पूजन करें।

ॐ गुह्यकालीमूर्तये नमः॥ मन्त्र से देवी की मूर्तिकल्पना करें।

कूर्ममुद्रा बनाकर निम्न ध्यान श्लोक का पाठ करें।

ब्रह्मादिपंचकयुगश्रुतिदिक्पतिनां मुण्डेषु भैरवशिवाप्रलयानलेषु तस्योर्ध्वगे दशशतछदविद्रुमाभेपद्मेस्थितां भगवति परमा दशास्याम् ।

सिंहकोलकपिऋक्ष्यतुरङ्गताक्ष्‍र्य योगेश्वरीमकरमानवपंक्तिवक्त्रां धृतशूलाङ्कुशपरशुमुद्गरपाशपात्रङ्खट्वांग बालकशिरोङ्कितपाणिपद्माम् ॥

ॐ ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि॥ मन्त्र से आवहन करें। निम्न मन्त्रों से षोडशोपचार पूजन करें।

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः पाद्योरू पाद्यं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः मुखे मधुपर्कं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः नानालङ्कारान्निवेदयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः गन्धं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः कुङ्कुमं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः हरिद्रां समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः अक्षतं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः रक्तपुष्पं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः धूपमाघ्रापयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः दीपं दर्शयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः नैवेद्यं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः पानीयजलं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः ऋतुफलं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः ताम्बूलं समर्पयामि ॥

ॐ फ्रेँ गुह्यकालिकायै नमः कृतायाः पूजायाः षाड्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥

इस प्रकार षोडशोपचार पूजा कर साधक को स्फटिक अथवा रहस्यमाला पर मूलमन्त्र का यथाशक्ति जप करना चाहिए।

जप को देवी के वामकर में समर्पित करना चाहिए।

ॐ फ्रेँ गुह्यकालिकायै नमः नमस्कारं करोमि॥ मन्त्र से भगवती को नमस्कार करें।

ॐ फ्रेँ गुह्यकालिकायै नमः उद्वास्यामि॥ मन्त्र से देवी का विसर्जन करें।

ॐ निर्माल्यधारिण्यै नमः॥ मन्त्र से निर्माल्यदेवता को देवी का निर्माल्य समर्पित करें। तत्पश्चात् पूर्व में वर्णित शान्तिस्तोत्र का पाठ कर पूजा का समापन करें।

॥ श्रीगुह्यकालीलघुपूजाविधानं सम्पूर्णम् ॥

३

॥ गुह्यकालीपुष्पार्पणकल्पम् ॥

पुष्पचन्तामणि, त्रिदशडामर, कालानलतन्त्र आदि ग्रन्थों के अनुसार भगवती गुह्यकाली को अर्पित किये जाने योग्य पुष्पों का वर्णन दिया जा रहा है। शान्ति, पुष्टि, तुष्टि आदि कामना वाले साधक को श्वेतवर्ण के पुष्प अर्पित करने चाहिए। शत्रुबाधा तथा वशीकरण के विषय में रक्तवर्ण के पुष्प प्रयुक्त होते हैं। मोहन, स्त्रीलाभ के लिए पीतवर्ण के पुष्प चढ़ाने चाहिए। मारण तथा विद्वेषण के लिए कृष्णवर्ण के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

क्र.	पुष्प का रंग	कामना
१	श्वेतवर्ण	तुष्टि, पुष्टि, शान्ति
२	रक्तवर्ण	शत्रुसंहार, वशीकरण
३	पीतवर्ण	मोहन, स्त्रीलाभ
४	कृष्णवर्ण	मारण, विद्वेषण

भगवती की पूजा में तुलसी, अर्क, मन्दार तथा सिन्दूरपुष्प का प्रयोग नहीं करना चाहिए। आगमों के अनुसार हटाना है। इनका प्रयोगं निषिद्ध है।

१. समस्त प्रकार के पुष्पों से देवी के पूजन से उत्पन्न पुण्य में शतगुणित वृद्धि के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से चम्पा के पुष्प अर्पित करने चाहिए ।

ॐ अद्य० इतरपुष्पकरणदेवीपूजनजन्यपुण्यशतगुणा वृद्धिकाम एभिश्चचम्पकपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि चम्पकपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२. दिव्य प्रकार के पट्टवस्त्र आदि के लाभ के लिए तथा ब्रह्महत्या आदि पापों से मुक्ति की कामना वाले साधक को संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से रक्तजपाकुसुम अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० पट्टवस्त्रादिलाभब्रह्महत्यादिपापमुक्तिकामएभिर्ज्जवापुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं एतानि जवापुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

३. वागीशत्व की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से मालती पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० वागीशत्वप्राप्तिकाम एभिर्मालतीपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं एतानि मालतीपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

४. राजा अथवा राजनेता को अपने अनुकूल (वश) में करने के लिए संकल्पवाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से जातिपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० महीपालवशप्राप्तिकाम एभिर्जातिपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं एतानि जातीपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

५. मेधाशक्ति के विकास तथा बुद्धि विवर्धन के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से युथिका के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० मेधात्वफलप्राप्तिकाम एभिर्युथिकापुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं एतानि यूथिकापुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

६. राजपद की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से नागकेसर के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० नृपत्वफलप्राप्तिकाम एभिर्नागकेसरपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं एतानि नागकेसरपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

७. स्वर्ण के लाभ तथा धन की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से चम्पा के श्वेतपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० हेमलाभर्फलप्राप्तिकाम एभिश्चम्पकपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं एतानि चम्पकपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

८. साम्राज्य की कामना के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से माधवी (महुआ) के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० महीपालत्वफलप्राप्तिकाम एभिर्माधवीपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि माधवीपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

९. बुद्धि विवर्धन के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से अतिमुक्ता के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० बुद्धिवृद्धिप्राप्तिकाम एभिरतिमुक्तपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि अतिमुक्तपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१०. धन प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से मल्लिका पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० धनप्राप्तिकाम एभिर्मल्लिकापुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि मल्लिकापुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

११. कीर्ति (प्रसिद्धि) के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से कुन्द के श्वेतपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० कीर्तिफलप्राप्तिकाम एभिः कुन्दपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि कुन्दपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१२. बन्धुओं में प्रियता तथा बान्धवों में सौहार्द्र के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से बन्धुक के रक्तपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० बान्धवप्रियफलप्राप्तिकाम एभिर्बन्धुकपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि बन्धुकपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१३. शत्रुनाश के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से जवाकुसुम के रक्तपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० शत्रुक्षयफलप्राप्तिकाम एभिर्जवापुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि जवापुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१४. आयुष्य में वृद्धि के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से कमलपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० आयुवृद्धिफलप्राप्तिकाम एभिः पद्मपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि पद्मपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१५. कवित्व की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से कुमुदपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० कवित्वफलप्राप्तिकाम एभिः कुमुदपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि कुमुदपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१६. समस्त व्याधियों के नाश के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से कदम्बपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० व्याधिनाशप्राप्तिकाम एभिः कदम्बपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि कदम्बपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१७. सर्वत्र में जय के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से मरूएं के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० जयफलप्राप्तिकाम एभिर्मरुवकपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि मरुवकपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१८. गजलाभ (वाहन प्राप्ति) के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से कुरूण्टक (चौजाई, राजगिरा) के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐअद्य०गजलाभफलप्राप्तिकामएभिःकुरुण्टकपुष्पैःश्रीगुह्यकालीदेवीमहंपूजयिष्ये॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि कुरुण्टपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१९. देह के सौन्दर्य के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से अपराजिता के नीलें पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० सर्वाङ्गसुन्दरफलप्राप्तिकाम एभिरपराजितापुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि अपराजितापुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२०. पुत्रप्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से शेफाली के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० पुत्रलाभप्राप्तिकाम एभिश्शेफालीपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें एतानि शेफालीपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२१. शोक व अवसाद के नाश के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से अशोक के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० शोकहानिफलप्राप्तिकाम एभिरशोकपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें एतानि अशोकपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२२. धन, धान्य तथा समृद्धि के लिए संकल्पवाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से दूर्वादल अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० धनधान्यादिफलप्राप्तिकाम एभिर्दूर्वादलैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें एतानि दूर्वादलानि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२३. शत्रुओं के नाश के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से शाल्मली के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० शत्रुक्षयप्राप्तिकाम एभिश्शाल्मलीपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें एतानि शाल्मलीपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२४. विविध प्रकार के अन्नलाभ के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से द्रोणपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० अन्नलाभफलप्राप्तिकाम एभिर्द्रोणपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें एतानि द्रोणपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२५. जरा के नाश के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से बकपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० जरानाशफलप्राप्तिकाम एभिर्बकपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें एतानि बकपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२६. राज्य की प्राप्ति के लिए लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से पुन्नाग पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० राज्यलाभफलप्राप्तिकाम एभिः पुन्नागपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि पुन्नागपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२७. दीर्घायुष्य की प्राप्ति के लिए लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से गुलाब के रक्तपुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० दीर्घायुत्वफलप्राप्तिकाम एभिःपाटलपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि पाटलपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२८. सर्वमान्यता तथा सर्वस्वीकार्यता की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से तगर के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० मान्यताफलप्राप्तिकाम एभिस्तगरपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि तगरपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२९. गुणशालिनी स्त्री की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से शिरीश पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० प्रमदास्त्रीफलप्राप्तिकाम एभिश्शिरीषपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि शिरीषपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

३०. लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से जयन्ति के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० श्रीफलप्राप्तिकाम एभिर्जयन्तिपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि जयन्तिपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

३१. परमगति की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से बिल्वपत्र अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० पराङ्गतिफलप्राप्तिकाम एभिर्बिल्वपत्रैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि बिल्वपत्राणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

यहां तक काम्य प्रयोगों का वर्णन किया गया है। साधक अपनी एक या एक से अधिक कामना के अनुसार विशिष्ट प्रकार के पुष्प से अर्चन कर सकतें हैं। अगले प्रकरण में बारह मास तथा इन मासों में अर्पित किये जाने वाले पुष्पों का वर्णन किया गया है।

साधक यदि विशेष अनुग्रह की कामना रखता हो तो उसे द्वाद्वश मास में नित्य अथवा पर्व पर कल्प में कहे विशिष्ट पुष्प का उपयोग अपनी साधना में करना चाहिए।

अथ नैमैत्तिके

१. चैत्र मास में कलि के प्रभाव को न्यून करने के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से अशोक पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० चैत्रमासि कलिकालविनाशनप्राप्तिकाम एभिरशोकपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि अशोकपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

२. वैशाख मास में संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से बकुल पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० वैशाखमासि एभिर्बकुलपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि बकुलपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

३. ज्येष्ठ मास में संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से नागकेसर पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० ज्येष्ठमासि एभिर्नागकेशरपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि नागकेशरपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

४. आषाढ़ मास में संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से करवीर पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० आषाढमासि एभिः करवीरपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि करवीरपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

५. श्रावण मास में संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से चम्पक पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० श्रावणमासि एभिश्चम्पकपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि चम्पकपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

६. भाद्रपद मास में संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से लोध्र के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० भाद्रपदमासि एभिर्ल्लोंध्रपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि लोध्रपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

७. आश्विन मास में संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से लोध्र के पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० आश्विनमासि एभिर्बन्धुकपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि बन्धुकपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

८. कार्तिक मास में संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से अगस्ति पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० कार्तिकमासि एभिरागस्तिपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि अगस्तिपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

९. मार्गशीर्ष मास में संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से बिल्व पत्र अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० मार्गशीर्षमासि एभिर्बिल्वपत्रैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि बिल्वपत्राणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१०. पौष मास में अनन्त फल की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से दूर्वादल अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० पौषमासि अनन्तफलप्राप्तिकाम एभिर्दूर्वाङ्कुरे श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि दूर्वादलानि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

११. माघ मास में सभी प्रकार के कल्याण की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से कुन्द पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य०माघमासि सर्वकल्याणफलप्राप्तिकाम एभिःकुन्दपुष्पैः श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि कुन्दपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

१२. फाल्गुन मास में सभी प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति के लिए संकल्प वाक्य का पाठ कर निम्न मन्त्र से माधवी पुष्प अर्पित करने चाहिए।

ॐ अद्य० फाल्गुनमासि सर्वसिद्धिफलप्राप्तिकाम एभिर्माधवी श्रीगुह्यकालीदेवीमहं पूजयिष्ये ॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें एतानि माधवीपुष्पाणि श्रीगुह्यकालीदेव्यै वौषट् ॥

॥ गुह्यकालीपुष्पार्पणकल्पं सम्पूर्णम् ॥

॥ स्वाहाकारखण्डम् ॥

१. संक्षिप्तगुह्यकालीहोमविधिः

१

॥ संक्षिप्तगुह्यकालीहोमविधिः ॥

निम्न तत्त्वचतुष्टय मन्त्रों से आचमन करें।

ॐ फ्रैं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

सिद्धिकरालि विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं नमः स्वाहा शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

ॐ फ्रैं सिद्धिकरालि ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं नमः स्वाहा सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

तत्पश्चात निम्न मन्त्र से हस्तप्रक्षालन करें।

नमः स्वाहा अस्त्राय फट्॥

तत्पश्चात पूर्व में वर्णित विधान के अनुसार प्राणायाम करें।

॥ सङ्कल्प ॥

साधक निम्न सङ्कल्प वाक्य का पाठ करें।

ॐ फ्रैं अद्याऽमुकमासे ऽमुकपक्षे ऽमुकतिथौ ऽमुकवासरे ऽमुकवेलायां उत्तराम्नायशक्तिसाधकेषुस्थिते गुह्यकालीमन्त्रस्यहोममहङ्करिष्ये ॥

सदस्य/दूती/अन्य साधक निम्न वाक्य कहें- **ॐ फ्रैं कार्यस्व ॥**

॥ विघ्नोत्सारण ॥

ॐ फ्रैं ह्रीं विघ्नोत्सारिण्यै नमः॥ मंत्र से अक्षत/जल क्षेपित करें।

॥ स्थण्डिलसंस्कार ॥

एक हाथ लम्बा चौड़ा तथा एक वितस्ती ऊंचा रेत या मृतिका का स्थण्डिल बनावें। ॐ फ्रैं नमः॥ मन्त्र से प्रोक्षण करें। सिन्दूर/कुंकुम/जल से स्थण्डिल पर त्रिकोण का निर्माण करें।

॥ अग्निस्थापन ॥

ॐ ॐ फ्रें हृदयाय नमः॥ मन्त्र से भैरवाग्नि स्थापित करें।

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥

मन्त्र से क्रव्यादांष दूर करें।

ॐ फ्रें फट् परिषिंचामि॥ मंत्र से तीन बार भैरवाग्नि का परिशेचन करें।

ॐ फ्रें फट् प्रोक्षामि॥ मंत्र से तीन बार भैरवाग्नि का संप्रोक्षण करें।

ॐ फ्रें फट् यज्ञस्यसन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्ततैस्तृणामि॥ मन्त्र का प्रयोग करते हुए पूर्व में तीन, दक्षिण में पांच, उत्तर में पांच तथा पष्चिम में तीन कुषाओं से परिस्तरण करें।

ॐ फ्रें रँ रँ रँ भैरवाग्निं प्रज्वालयामि॥ मंत्र से भैरवाग्नि को प्रज्वलित करें।

ॐ फ्रें ह्रीँ श्रीँ रँ ह्रीँ सः विश्वान्तक महाभैरवाग्ने त्रिनेत्र ज्वालामुख एह्येहि इह सन्निधिं कुरु कुरु ह्रीँ सः स्वाहा॥ मन्त्र से भैरवाग्नि का आवाहन करें।

निम्न मंत्रों से भैरवाग्नि की पंचोपचार पूजा करें।

ॐ फ्रें इदं पाद्यं गृहाण नमः॥

ॐ फ्रें एषो अर्घ्यं गृहाण स्वाहा॥

ॐ फ्रें इदमाचमनीयं गृहाण स्वधा॥

ॐ फ्रें एष गन्धं गृहाण नमः॥

ॐ फ्रें ह्रीँ एतानि पुष्पाणि गृहाण वौषट्॥

॥ स्रुकस्रुवासंस्कार ॥

यह संस्कार आज्यहोम के विषय में है। अधोमुख स्रुक्-स्रुवा को **ॐ स्त्रीँ फ्रें कवचाय हूँ॥** मंत्र से अवगुंठित करें। धेनुमुद्रा बनाकर अमृतीकरण करें। अग्नि में तपाकर स्रुक्-स्रुवा को ऊर्ध्वमुख स्थापित करें। निम्न मंत्रों से स्रुक्-स्रुवा का पूजन करें।

ॐ हूँ गुह्यभैरवाय नमः॥

ॐ फ्रें गुह्यकालिकायै नमः॥

पुनः मूलमंत्र से स्रुक्-स्रुवा पूजन करें।

॥ आज्यसंस्कार ॥

घृत को स्थाली में लेकर अग्नि पर तपावें। कवच मंत्र से अवगुंठित करें। धेनुमुद्रा बनाकर अमृतीकरण करें। सम्मुख स्थापित करें। मूलमंत्र से पूजन करें। शडंगों की पूजा करें। निम्न मंत्रों से आज्यदर्शन करें।

आज्यं तेजः समुद्दिष्टं आज्यं पापहरं परम् ।

आज्यंसुराणामाहारःआज्येलोकःप्रतिष्ठिताः॥

दिव्यन्तरिक्षेभूमौर्यत्ते किल्विषमागतम् ।

तत्सर्वं आज्यं स्पर्शेन विनाशमुपगच्छति ॥

ॐ फ्रें आत्मनोवाङ्गमनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं दिव्यन्तरिक्षेभू मौपापनिवारणार्थं श्रीगुह्यकाली प्रीत्यर्थं इदमाज्यं समर्पयामि नमः ॥

॥ होमद्रव्यसंस्कार ॥

मूलमंत्र से होमद्रव्य का प्रोक्षण करें। धेनुमुद्रा बनाकर आठ बार अमृतबीज का जप करें। यह हस्तहोम का विधान है।

॥ अग्निमन्त्रहोम ॥

ॐ फ्रें ह्रीं वह्नये जातवेदसे हरितपिङ्गलरूपाय भैरवाग्नये हूँ फट् स्वाहा॥ मन्त्र से तीन आहुति भैरवाग्नि को देवें।

॥ पीठहोम ॥

निम्न मंत्र से एकतन्त्रेण पीठहोम करें। **ॐ फ्रें सप्तविंशतिमुण्डासनाय स्वाहा॥** तत्पश्चात देवी का ध्यान करें।

॥ ध्यानम् ॥

ब्रह्मादिपंचकयुगश्रुतिदिक्पतिनां मुण्डेषु भैरवशिवाप्रलयानलेषु तस्योर्ध्वगे दशशतछदविद्रुमाभेपद्मेस्थितां भगवति परमा दशास्याम् । सिंहकोलकपित्रृक्ष्यतुरङ्गताक्ष्र्य योगेश्वरीमकरमानवपंक्तिवक्त्रां धृतशूलाङ्कुशपर शुमुद्गरपाशपात्रङ्खट्वांग बालकशिरोङ्कितपाणिपद्माम् ॥

इस प्रकार ध्यान कर निम्न मंत्रो से भैरवाग्नि के मध्य देवी गुह्यकाली का आवाहन करें।

ॐ फ्रैं देवीसर्वजगन्मातायावत्होमावसानकम्।
तावत्त्वंप्रीतिभावेनअग्निमध्येसन्निधिङ्कुरु॥
जगद्धात्रि महामाये सर्वशत्रुक्षयङ्करि ।
कुलद्रव्यङ्गृहाणाम्ब वह्नयास्येन महेश्वरि ॥
तत्पश्चात मानसोपचारों से देवी की पूजा करें।

॥ मानसोपचार ॥

ॐ फ्रैं मँ पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि नमः ॥
ॐ फ्रैं खँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः ॥
ॐ फ्रैं फँ वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः ॥
ॐ फ्रैं रँ अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः ॥
ॐ फ्रैं एँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः ॥

॥ प्राणाहुति ॥

तत्पश्चात् निम्न पांच मंत्रों से पंचप्राणाहुति देवें।
ॐ फ्रैं खँ प्राणाय स्वाहा॥
ॐ फ्रैं फँ अपानाय स्वाहा ॥
ॐ फ्रैं रँ व्यानाय स्वाहा ॥
ॐ फ्रैं एँ समानाय स्वाहा ॥
ॐ फ्रैं मँ उदानाय स्वाहा ॥

॥ षडङ्गहोम ॥

तदनन्तर निम्न छः मन्त्रों से शडंगहोम करें।
ॐ ॐ फ्रैं हृदयाय नमः स्वाहा ॥
ॐ सिद्धिकरालि शिरसे स्वाहा स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं छ्रीं हूँ शिखायै वषट् स्वाहा ॥

ॐ स्त्रीं फ्रैं कवचाय हूँ स्वाहा ॥

ॐ नमः नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ॥

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् स्वाहा ॥

॥ प्रधानहोम ॥

ॐ फ्रैं सिद्धिकरालि ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रैं नमः स्वाहा स्वाहा ॥

उपरोक्त मूलमन्त्र द्वारा १००८/१०८/५४/२८/२५/१६ आहुति देवें।

॥ परिवारहोम ॥

सतिसंभव होवें तो एक-एक आहुति वक्त्र, शडङ्ग तथा आवरण देवताओं के मंत्रों से देवें।

विस्तार से परिवारहोम करने में अषक्त साधक निम्न मन्त्र से एकतन्त्रेण तीन बार आहुती प्रदान करें।

ॐ फ्रैं श्रीगुह्यकालीपरिवारेभ्यः स्वाहा ॥

॥ प्रायश्चितहोम ॥

समस्त न्यूनातिरिक्त दोशों के षमन हेतु तीन समयविद्याओं से तीन-तीन आहुति प्रदान करें।

ॐ नमः श्री चामुण्डे प्रचण्डे फेत्कारिणी दुहि दुहि फट् जालन्धरे महालक्ष्मी चरित्रे वाराही नगरे चरित्रे दुर्वासिनी कर्णकुब्जे महाकर्णी अष्टमातरी माहेश्वरी ब्रह्माणी वैष्णवी इन्द्राणी कौमारी वाराही माहेन्द्री चामुण्डा महालक्ष्मी श्रीसिद्धलक्ष्मी भैरवी गुह्यश्रीमहाकाली माये महामाये सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसंसारतारिणी देवीकोटकामरूपवासिनी श्मशानभैरवप्रिये समरसाद्वैताचारप्रिये ह्रीं हूँ फट् स्वाहा ॥१॥

ऐं फ्रैं हूँ ह्रीं वूँ श्रीं किचि किचि किलि किलि हन हन दह दह ग्रस ग्रस हैं हैं फ्रैं सिद्धभैरवी सर्वयोगिनीनां समरसकारिणी त्रिलोकवासिनी सर्वगते

विषम दुर्गवनपर्वतवासिनी संग्रामवासिनी जयविजयप्रदे पथे पथोपवासिनी वृक्षवृक्षोपवासिनी सर्वे सर्वगते जये जयति अजिते अपराजिते छ्रीँ स्त्रीँ तारणी पूरिणी ह्रीँ नमः समसमयति द्विप्रभवति प्रविशति ख्फ्रैँ ख्फ्रैँ छ्रीँ स्त्रीँ जूँ फ्रैँ नमः स्वाहा ॥२॥

हूँ भैरवसहितं त्रैलोक्यमाते हैँ वैँ छ्रूँ नमः स्वाहा॥३॥

॥ पूर्णाहुति ॥

निम्न मंत्र द्वारा पूर्णाहुति देवें।

ॐ फ्रैँ श्रीगुह्यकालीमन्त्रचक्रदेवतातृप्तिरस्तु वौषट् ॥

॥ देवीविसर्जन ॥

देवी सिद्धलक्ष्मी का विसर्जन संहारमुद्रा से हृदय/द्वादशान्त में करें।

क्षमस्वमन्त्रनाथाय नित्यानन्दमयाय च । धर्मार्थकाममोक्षाय पुनरागमनाय च ॥

ॐ फ्रैँ भगवति गुह्यकाली पुजिताऽसि प्रसीद प्रसीद क्षमस्व क्षमस्व ॥

॥ वह्निविसर्जन ॥

संहारमुद्रा बनाकर अग्नि का विसर्जन निम्न मन्त्रों से करें।

स्वस्ति श्रद्धां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम् । आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥

भो भो वह्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक । कर्मान्तरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥

ॐ फ्रैँ फट् अग्निम् विमुञ्चामी फट् ॥

ॐ फ्रैँ फट् यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्यत्वासन्तत्यै विसर्जयामि फट् ॥

मंत्र से परिस्तरण की कुषाओं को अग्नि में डाल देवें।

॥ भस्मधारण ॥

ईषानकोण से स्रुवा के मूलभाग पर भस्म लेकर निम्न मंत्रो से भस्मधारण करें। अथवा केवल मूलमंत्र से भस्मधारण करें।

ॐ फ्रैं अग्निरिति भस्म। ॐ फ्रैं वायुरिति भस्म।

ॐ फ्रैं जलमिति भस्म। ॐ फ्रैं स्थलमिति भस्म।

ॐ फ्रैं व्योमेति भस्म । ॐ फ्रैं सर्व एव महाभस्म स्नातो भवति । ॐ फ्रैं अपेयपानात्पूतो भवति । ॐ फ्रैं अभक्षभक्षणात्पूतो भवति । ॐ फ्रैं अगम्यागम्नात्पूतो भवति । ॐ फ्रैं शिवमस्तु । जायमानस्यछिद्रमाभूत्कदाचन । देवदेव्यौ प्रसादेन रक्षरक्षस्तु मे भृशम् ॥

॥ संक्षिप्तगुह्यकालीहोमविधानं सम्पूर्णम् ॥

॥ स्तोत्रखण्डम् ॥

१. श्रीगुह्यकाल्युपनिषत्

२. श्रीगुह्यकालीकवचम्

३. श्रीविश्वमंगलगुह्यकालीकवचम्

४. श्रीगुह्यकालीद्वादशनामस्तोत्रम्

५. श्रीगुह्यकालीद्वादशनामावलिः

६. श्रीगुह्यकाल्याः अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

७. श्रीगुह्यकालीदेव्याः अष्टोत्तरशतनामावलिः

८. श्रीगुह्यकालीशतनामस्तोत्रम्

९. श्रीगुह्यकालीलघुसहस्रनामस्तोत्रम्

१०. श्रीहाहारावतन्त्रोक्तगुह्यकालीसहस्रनामस्तोत्रम्

११. श्रीस्कन्दपुराणे हिमवत्खण्डे गुह्येश्वरीसहस्रनामस्तोत्रम्

१२. श्रीमहाकालसंहितोक्त गुह्यकाल्याः सहस्रनामस्तोत्रम्

१३. श्रीगुह्येश्वरी स्तोत्रम्

१४. श्रीगुह्यकालीस्तोत्रम्

१५. श्रीगुह्यकालीक्रमस्तवः

१६. श्रीगुह्यकालीमुक्तावलीस्तोत्रम्

१७. श्रीगुह्यकाल्यामहामायास्तवम्

१

॥ श्रीगुह्यकाल्युपानिषत् ॥

अथर्ववेदमध्ये तु शाखा मुख्यतमा हि षट् ।
स्वयम्भुवा याः कथिताः पुत्रायाथर्वणे पुरा ॥१॥
तासु गुह्योपनिषदस्तिष्ठन्ति वरवर्णिनि ।
नामानि शृणु शाखानां तत्राद्या वारतन्तवी ॥२॥
मौञ्जायनी द्वितीया तु तृतीया तार्णबैन्दवी ।
चतुर्थी शौनकी प्रोक्ता पञ्चमी पैप्पलादिका ॥३॥
षष्ठी सौमन्तवी ज्ञेया सारात् सारतमा इमाः ।
गुह्योपनिषदो गूढाः सन्ति शाखासु षट्स्वपि ॥४॥
ता एकीकृत्य सर्वास्तु मयाऽस्यां विनिवेशिताः ।
संहितायां साधकानामुद्धाराय वरानने ॥५॥
तास्ते वदामि यत प्रोक्तं ध्यानं कुर्वन्ति देवताः ।
विराट्ध्यानं हि तज्ज्ञेयं महापातकनाशनम् ॥६॥
ब्रह्माण्डाद्बहिरूर्ध्वं हि महत्तत्त्वमहङ्कृतिः ।
रूपाणि पञ्च तन्मात्राः पुरुषः प्रकृरतिर्नव ॥ ७॥
महापातालपादान्तलम्बा तस्या जयं स्मरेत् ।
ब्रह्माण्डार्ध कपालं हि शिरस्तम्या विभावयेत् ॥८॥
देवलोको ललाटं च पट्विंशल्लक्षयोजनम् ।
मेरुः समिन्तदण्डोऽम्या ग्रहरत्नसमाकुलः ॥९॥
अन्तर्वीथी नागवीथी भ्रुवावम्याः प्रकीर्तिते ।

शिवलोकश्च वैकुण्ठलोकः कर्णावुभौ मतौ ॥१०॥
लोहितं तिलकं ध्यायेन्नासा मन्दाकिनी तथा ।
चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ च पक्ष्माणि किरणास्तथा ॥११॥
गण्डौ न्यातां तपोलोकसत्यलोकौ यथाक्रमम् ।
जनोलोकमहर्लोकौ कपोलौ परिकीर्तितौ ॥ १२॥
स्यातां हिमाद्रिकौमासौ तम्यां देव्यास्तु कृण्डले ।
स्वर्लोकश्च भुवर्लोको देव्या ओष्ठाधरौ मतौ ॥ १३॥
दिक्पतीनां ग्रहाणां च लोकाश्चाथ रदावली ।
गन्धर्वसिद्धसाध्यानां पितृरकिन्नररक्षसाम् ॥१४॥
पिशाचयक्षाप्सरसां मरीचीयायिनां तथा ।
विद्याधराणामाज्योष्मपाणां सोमैकपायिनाम् ॥१५॥
सप्तर्षीणां ध्रुवस्यापि लोका ऊर्ध्वरदावली ।
मुखं च रोदसी ज्ञेयं द्यौर्लोकश्चिबुकं तथा ॥१६॥
ब्रह्मलोको गलः प्रोक्तो वायव प्राणरूपिणः ।
वनस्पतय ओषध्यो लोमानि परिचक्षते ॥ १७॥
विद्युद्दृष्टिरहोरात्रं निमेषोन्मेषसंज्ञकम् ।
विश्वं तु हृदयं प्रोक्तं पृथिवी पाद उच्यते ॥१८॥
तलं तलातलं चैव पातालं सुतलं तथा ।
रसातलं नागलोकाः पादाङ्गुल्यः प्रकीर्तिताः ॥१९॥
वेदा वाचः स्यन्दमाना नदा नद्योऽमिता मताः ।
कलाः काष्ठा मुहूर्ताश्च ऋतवोऽयनमेव च ॥ २०॥
पक्षा मासास्तथा चाब्दाश्चत्वारोऽपि युगाः प्रिये ।
कफोणिर्मणिबन्धश्च तदूरुकटिबन्धनाः ॥२१॥
प्रपदाश्च स्फिचश्चैव सर्वाङ्गानि प्रचक्षते ।

वैश्वानरः कालमृत्युर्जिह्वात्रयमिदं स्मृतम् ॥२२॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं तनुमस्याः प्रचक्षते ।
प्रलयो भोजने कालस्तृप्तिस्तेन च नासिका ॥२३॥
ज्ञेयः पार्श्वपरीवर्तो महाकल्पान्तरोद्भवः ।
विराड्रूपवोस्य ते ध्यानमिति संक्षेपतोऽर्पितम् ॥२४॥
तस्याः स्वरूपविज्ञानं सपर्या परिकीर्तिता ।
तदेव हि श्रुतिप्रोक्तमवधारय पार्वति ॥२५॥
यथोर्णनाभिः सूत्राणि सृजत्यपि गिलत्यपि ।
यथा पृथिव्यामोषध्यः सम्भवन्ति गिलन्त्यपि ॥२६॥
पुरुषात् केशलोमानि जायन्ते च क्षरनत्यपि ।
उत्पद्यन्ते विलीयन्ते तथा तस्यां जगत्यपि ॥२७॥
ज्वलतः पावकाद्यद्वत् स्फुलिङ्गाः कोटिकोटिशः ।
निर्गत्य च विनश्यन्ति विश्वं तस्यास्तथा प्रिये ॥२८॥
ऋचो यजूंषि सामानि दीक्षा यज्ञाः सदक्षिणाः ।
अध्वर्युर्यजमानश्च भुवनानि चतुर्दश ॥२९॥
ब्रह्मविष्ण्वादिका देवा मनुष्याः पशवो यतः ।
प्राणापानौ व्रीहयश्च सत्यं श्रद्धा विधिस्तपः ॥३०॥
समुद्रा गिरयो नद्यः सर्वे स्थावरजङ्गमाः ।
विसृज्येमानि सर्गादौ त्वं प्रकाशयसे ततः ॥३१॥
जङ्गमानि विधायान्धे विशत्यप्रतिभूतकम् ।
नवद्वारं पुरं कृत्वा गवाक्षाणीन्द्रियाण्यपि ॥३२॥
सा पश्यत्यत्ति वहति स्पृशति क्रीडतीच्छति ।
शृणोति जिघ्रति तथा रमते विरमत्यपि ॥३३॥
तया मुक्तं पुरं तद्धि मतमित्यभिधीयते ॥३४॥

ये तपः क्षीणदोषास्ते नैव पश्यन्ति भाविताम् ।
ज्योतिर्मयीं शरीरेऽन्तिर्ध्यायमानां महात्मभिः ॥३५॥
बृहच्च तद्दिव्यमचिन्त्यरूपं सूक्ष्माच्च तत् सूक्ष्मतरं विभाति ।
दूरात्सुदूरे तदिहास्ति किञ्चित् पश्येत्त्विहैतन्निहितं गुहायाम् ॥३६॥
न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्योगैर्न हि सा कर्मणा वा ।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वः ततस्तु तां पश्यति निष्कलां च ॥३७॥
यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे गच्छन्त्यस्तं नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात् परां जगदम्बामुपैति ॥३८॥
सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण ब्रवीमि ॥ ३९॥
सैवैतत् एषैवालम्बनं श्रेष्ठं सैषैवालम्बनं परम् ।
एषैवालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥४०॥
इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था ह्यर्थेभ्यश्च परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः ॥४१॥
महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः ।
पुरुषात्तु परा देवी सा काष्ठा सा परा गतिः ॥४२॥
यथोदकं गिरौ सृष्टं समुद्रेषु विधावति ।
एवं धर्मान् पृथक पश्यंस्तामेवानुविधावति ॥४३॥
एका गुह्या सर्वभूतान्तरात्मा एक रूपं बहुधा या करोति ।
तामात्मस्थांयेऽनुपश्यन्तिधीराः तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् ॥४४॥
न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्तिकुतोऽयमग्निः ।
तामेव भान्तीमनुभाति सर्वं तस्या भासा सर्वमिदं विभाति ॥४५॥
यस्याःपरं नापरमस्तिकिञ्चित्यस्यानाणीयो नज्यायोऽस्ति किञ्चित् ।
वृक्ष इव स्तब्धा दिवि तिष्ठत्येका यदन्तः पूर्णामवगत्य पूर्णः ॥४६॥

सर्वाननशिरोग्रीवा सर्वभूतगुहाशया । सर्वत्रस्था भगवती तस्मात् सर्वगता शिवा ॥४७॥

सर्वतः पाणिपादान्ता सर्वतोऽक्षिशिरोमुखा ।
सर्वतः श्रुतिमत्येषा सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥४८॥

सर्वेन्द्रियगुणाभासा सर्वेन्द्रियविवर्जिता ।
सर्वेषां प्रभुरीशानी सर्वेषां शरणं सुहृत् ॥४९॥

नवद्वारे पुरे देवी हंसी लीलायतां बहिः ।
ध्येया सर्वस्य लोकस्य स्थावरस्य चरस्य च ॥५०॥

अपाणिपादा जननी ग्रहीत्री पश्यत्यचक्षुः सा श्रुणोत्यर्णा ।
सावेत्तिवेद्यंनच तस्यास्तुवेत्तातामाहुरग्र्यां महतीं महीयसीम् ॥५१॥

सा चैवाग्निः सा च सूर्यः सा वायुः सा च चन्द्रमा ।
सा चैव शुकः सा ब्रह्म सा चापः सा प्रजापतिः ।
सा चैव स्त्री सा च पुमान् सा कुमारः कुमारिका ॥५२॥

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्यां देवा अधिरुद्रा निषेदुः ।
यस्तां न वेद किमृचा करिष्यति ये तां विदुस्तु इमे समासते ॥५३॥

छन्दांसि यज्ञाः क्रतवो व्रतानि भृतं भव्यं यच्च वेदा वदन्ति ।
सर्व देवी सृजते विश्वमेतत् तस्याश्चान्यो मायया सन्निरुद्धः ॥५४॥

मायां तु प्रकृतिं विद्यात् प्रभुं तस्या महेश्वरीम् ।
अस्या अवयवैः सूक्ष्मैर्व्याप्तं सर्वमिदं जगत् ॥५५॥

या देवानां प्रभवा चोद्भवा च विश्वाधिपा सर्वभूतेषु गूढा ।
हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं सा नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तुम् ॥५६॥

सूक्ष्मातिसूक्ष्मं सलिलस्य मध्ये विश्वस्य स्रष्ट्रीमनेकाननाख्याम् ।
विश्वस्य चैकां परिवेष्टयित्रीं ज्ञात्वा गुह्यां शान्तिमत्यन्तमेति ॥५७॥

सा ह्येव काले भुवनस्य गोप्त्री विश्वाधिपा सर्वभूतेषु गूढा ।
यस्यां मुक्ता ब्रह्मर्षयोऽपि देवाः ज्ञात्वा तां मुत्युपाशाञ्छिनत्ति ॥५८॥

घृतात् परं मण्डमिवातिसूक्ष्मं ज्ञात्वा कालीं सर्वभूतेषु गूढाम् ।
कल्पान्ते वै सर्वसंहारकर्त्रीं ज्ञात्वा गुह्यां मुच्यते सर्वपापैः ॥५९॥
एषा देवी विश्वयोनिर्महात्मा सदा जनानां हृदि सन्निविष्टा ।
हृदा मनीषा मनसाभिक्लृप्ता ये तां विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥६०॥
यदा तमस्तत्र दिवा न रात्रिः न सन्न चासद्भगवत्येव गुह्या ।
तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा च तस्याः प्रसृता परा सा ॥६१॥
नैनामूर्ध्वं न तिर्यक् च न मध्यं परिजग्रभत् ।
न तस्याः प्रतिमाभिश्च तस्या नाम महद्यशः ॥६२॥
न सन्दृशे तिष्ठति लूपमस्याः न चक्षुषा पश्यति कश्चिदेनाम् ।
हृदा मनीषा मनसाभिक्लृप्तां य एनां विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥६३॥
भूयश्च सृष्ट्वा त्रिदशानथेशी सर्वाधिपत्यं कुरुते भवानी ।
सर्वा दिशश्चोर्ध्वमधश्च तिर्यक् प्रकाशयन्ती भ्राजते गुह्यकाली ॥६४॥
नैव स्त्री न पुमानेषा नैव चेयं नपुंसका । यद्यच्छरीरमादत्ते तेन तेनैव युज्यते ॥६५॥
धर्मावहां पापनुदां भगेशीं ज्ञात्वात्मस्थाममृतां विश्वमातरम् ।
तामीश्वराणां परमां महेश्वरीं तां देवतानां परदेवतां च ।
पतिं पतीनां परमां पुरस्तात् विद्यावतां गुह्यकालीं मनीषाम् ॥६६॥
तस्या न कार्यं करणं च विद्यते न तत्समा चाप्यधिका च दृश्यते ।
परास्याः शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च ॥६७॥
कश्चिन्न तस्याः पतिरस्ति लोके न चेशिता नैव तस्याश्च लिङ्गम् ।
सा कारणं कारणकारणाधिपा नास्याश्च कश्चिज्जनिता न चाधिपः ॥६८॥
एका देवी सर्वभूतेषु गूढा व्याप्नोत्येतत् सर्वभूतान्तरस्था ।
कर्माध्यक्षा सर्वभूताधिवासा साक्षिण्येपा केवला निर्गुणा च ॥६९॥
वशिन्येका निष्क्रियाणां बहूनां एकं बीजं बहुधा या करोति ।
नानारूपा दशवक्त्रं विधत्ते नानारूपान् या च बाहून् बिभर्ति ॥७०॥

नित्या नित्यानां चेतना चेतनानां एका बहूनां विदधाति कामान् ।
तत्कारणं साङ्ख्ययोगाधिगम्यं ज्ञात्वा देवीं मुच्यते सर्वपाशैः ॥७१॥
या वै विष्णुं पालने सन्नियुङ्क्ते रुद्रं देवं संहृतौ चापि गुह्या ।
तां वै देवीमात्मबुद्धिप्रकाशां मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ७२॥
निष्कला निष्क्रियां शान्तां निरवद्यां निरञ्जनाम् ।
बह्वाननकरां देवीं गुह्यामेकां समाश्रये ॥७३॥
इयं हि गुह्योपनिषत् सुगृढा यस्या ब्रह्मा देवता विश्वयोनिः ।
एतां जपंश्चान्वहं भक्तियुक्तः सत्यं सत्यं ह्यमृरतः सम्बभूव ॥७४॥

वेदवेदान्तयोर्गुह्यं पुराकल्पे प्रचोदितम् ।
नाप्रशान्ताय दातव्यं नाशिष्याय च वै पुनः ॥७५॥
यस्य देव्यां परा भक्तिर्यथा देव्यां तथा गुरौ ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥७६॥

महाकाल उवाच ॥

गुह्योपनिषदित्येषा गोप्यात् गोप्यतरा सदा ।
चतुर्भ्यश्चापि वेदेभ्य एकीकृत्यात्र योजिता ॥७७॥
उपदिष्टा च सर्गादौ सर्वानेव दिवौकसः ।
एवंविधं च यद्ध्यानमेवंरूपं च कीर्तितम् ॥७८॥
सा सपर्या परिज्ञेया विधानमधुना शृणु ।
सोऽहमस्मीति प्रथमं सोऽहमस्मि द्वितीयकम् ॥७९॥
तदस्म्यहं तृतीयं च महावाक्यत्रयं भवेत् ।
आद्यान्येतानि वाक्यानि छन्दांसि परिचक्षते ॥८०॥
देवता गुह्यकाली च रजःसत्त्वतमोगुणाः ।
सर्वेषां प्रणवो बीजं हंसः शक्तिः प्रकीर्तिता ॥८१॥
मकारश्चाप्यकारश्च ह्युकारश्चेति कीलकम् ।

एभिर्वाक्यत्रयैः सर्वं कर्म प्रोतं विधानतः ॥८२॥
अनुक्षणं जपंश्चैव निश्चयः परिकीर्तितः ।
द्वितीयोपासकानां हि परिपाटीयमीरिता ॥८३॥
एवं चाप्यातुरो यस्तु मनुष्यो भक्तिभावितः ।
विमुक्तः सर्वपापेभ्यः कैवल्यायोपकल्पते ।
सर्वाभिः सिद्धिभिस्तस्य किं कार्यं कमलानने ॥८४॥

॥ इति श्रीमहाकालसंहितायां गुह्यकाल्युपनिषत् समाप्ता ॥

२

॥ श्रीगुह्यकालीकवचम् ॥

नमः श्रीकालिकायै ॥

भैरव्युवाच ॥

भगवन् श्रोतुमिछामि मानवेकेन हेतुना ।
मन्त्राः परांगमुखा कोटिजप्ता अपि प्रभो ॥१॥

श्रीभैरव उवाच ॥

एतद्रहस्यं कथयामि त्वयि प्रिये ।
गोपितव्यं प्रयत्नेन स्वयोनिमिव वल्लभे ॥२॥
कवचेन विनायस्तु कालीमन्त्रजपोद्यतः ।
स न सिद्धिमवाप्नोति कोटिकल्पशतैरपि ॥३॥
कवचं पंचकं ज्ञेयं प्रथमं देहरक्षकं ।
द्वितीयं नाम संगुप्तं तृतीयं शस्त्रभूषितं ॥४॥
चतुर्थं बीजजशक्त्यादि भूषितं पंचमं शृणू ।
मन्त्रभूतं वरारोहे भुवि सर्वार्थसाधनं ॥५॥
अस्यदेहरक्षकं कवचस्यकालाग्निरुद्रऋषिरनुष्टुप्छन्दः ।
श्रीमहागुह्यकालीदेवता।
फ्रें बीजं । स्वाहा शक्तिः ।
शेषकीलकं मम देहरक्षणे विनियोगः ॥
इति बद्धांजलिदेवीं मनसाध्यात्वा पठेद् ॥६॥
फ्रें शिरो मे कालिका पातु भालं गुह्यस्वरूपिणी ।
प्रकटाख्या दृश्यै पातु विकटाख्या मम श्रुति ॥७॥

द्रंष्टिनी नासिके पायान्तु मुखं मे घोर रूपिणी ।
अट्टाट्टहासी रसनं कण्ठं मे मुण्डमालिनी ॥८॥
स्कंधौ मेघप्रभा पातु भुजौ मे खर्वकालिका ।
जयप्रदा करौ पातु हृदयं चण्डघण्टिका ॥९॥
वक्षः कुलेश्वरी पातु हस्तं शक्तिप्रिया मम ।
पार्श्वौ मे जटिनी पायाद् योगिनी चक्रचारिणी ॥१०॥
ललज्जिह्वा पातु कुक्षिं मध्यं दानवघातिनी ।
नाभिं घोरमुखी पायात् नरचर्मधारिणी जटी ॥११॥
मांसभक्ष्या शक्तिनी मेरुशोणितभोजिनी ।
खेचरी जानुनी पातु जंघा खर्परधारिणी ॥१२॥
पादौ सर्वत्र गोपायात् सर्वाङ्गं कालिका स्वाहा ।
इति ते कथितं देवि कवचं देहरक्षकम् ॥१३॥
विनानेन सिद्धिः स्यात् कल्पकोटिशतैरपि
गुरुभक्तिमते देयं न देयं यस्य कस्यचित् ॥१४॥
शान्ताय शुद्धचिन्ताय देवीभक्ताय चारिणे ।
पठित्वा कवचं देवी जपेन्मन्त्रं समाहितः ॥१५॥
उर्जटे पर्वते वापि श्मशाने वा यथा रुचिः ।
विघ्नान्तस्य संभवंति नैव कुत्रापि शोभने ॥१६॥
पुरश्चर्यादिकं सर्वं मूलवभ्परिवारयेत् ॥१७॥

॥ श्रीयोगिनीहृदयेगुह्यकालीरहस्येदेहरक्षककवचन्नामस्तोत्रम् समाप्तम् ॥

३

॥ विश्वमङ्गलगुह्यकालीकवचम् ॥

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीविश्वमङ्गलनाम्नोगुह्यकालीमहावज्रकवचस्य संवर्तऋषिरनुष्टुप्छन्दः । एकवक्त्रादिशतवक्त्रान्तागुह्यकाली देवता । फ्रें बीजं । स्फ्रें शक्तिः । छ्रीँ कीलकं सर्वाभीष्टसिद्धिपूर्वकात्मरक्षणे जपे विनियोगः ॥

ॐ फ्रें पातु शिरः सिद्धिकराली कालिका मम ।
ह्रीं छ्रीं ललाटं मे सिद्धिविकरालि सदावतु ॥१॥
श्रीं क्लीं मुखं चण्डयोगेश्वरी रक्षतु सर्वदा ।
हूं स्त्रीं कर्णे वज्रकापालिनी मे कालिकाऽवतु ॥२॥
ऐं क्रौं हनू कालसङ्कर्षणा मे पातु कालिका ।
क्रीं क्रौं भ्रुवावुग्रचण्डा कालिका मे सदावतु ॥३॥
हां क्षौं नेत्रे सिद्धिलक्ष्मीरवतु प्रत्यहं मम ।
हूं ह्रौं नासां चण्डकापालिनी मे सर्वदावतु ॥४॥
आं ईं ओष्ठाधरौ पातु सदा समयकुब्जिका ।
ग्लूं ग्लौं दन्तान् राजराजेश्वरी मे रक्षतात् सदा ॥५॥
जूं सः सदा मे रसनां पातु श्रीजयभैरवी ।
स्फ्रें स्फ्रें पातु स्वर्णकूटेश्वरी मे चिबुकं सदा ॥६॥
ब्लूं ब्लौं कण्ठं रक्षतु मे सर्वदा तुम्बुरेश्वरी ।
क्ष्रूं क्ष्रौं मे राजमातङ्गी स्कन्धौ रक्षतु सर्वदा ॥७॥

फ्रां फ्रौं भुजौ वज्रचण्डेश्वरी रक्षतु मे सदा ।
स्त्रैं स्त्रौं वक्षःस्थलं जयझङ्केश्वरी मम ॥८॥
फिं फां करौ रक्षतु मे शिवदूती च सर्वदा ।
छ्रूं छौं मे जठरं पातु फेत्कारी घोररावणी ॥९॥
स्त्रैं स्त्रौं गुह्येश्वरि नाभिं मम रक्षतु सर्वदा ।
क्षुं क्षौं पार्श्वौ सदापातु बाभ्रुवी घोररूपिणी ॥१०॥
ग्रूं ग्रौं कुलेश्वरी पातु मम पृष्ठं च सर्वदा ।
क्लूं क्लौं कटिं रक्षतु मे भीमादेवी भयानका ॥११॥
हैं हौं मे रक्षतादूरू सर्वदा चण्डखेचरी ।
स्फ्रों स्फ्रौं मे जानुनी पातु कोरङ्गी भीषणानना ॥१२॥
त्रीं श्रीं जङ्घायुगं पातु तामसी सर्वदा मम ।
ज्रैं ज्रौं पादौ महाविद्या सर्वदा मम रक्षतु ॥१३॥
ड्रीं ठ्रीं वागीश्वरी सर्वान् सन्धीन् देहस्य मेऽवतु ।
ख्रें ख्रौं शराराधातून्मे कामाख्या सर्वदावतु ॥१४॥
ब्रीं ब्रूं कात्यायनी पातु दशवायूंस्तनूद्भवान् ।
ज्लूं ज्लौं पातु महालक्ष्मीः खान्येकादश सर्वदा ॥१५॥
ऐं औं अनूक्तं यत्स्थानं शरीरेऽन्तर्बहिश्च मे ।
तत्सर्वं सर्वदा पातु हरसिद्धा हरप्रिया ॥१६॥
फ्रें छ्रीं ह्रीं स्त्री हूं शरीरसकलं सर्वदा मम ।
गुह्यकाली दिवारात्रौ सन्ध्यासु परिरक्षतु ॥१७॥
इति ते कवचं प्रोक्तं नाम्ना च विश्वमङ्गलम् ।
सर्वेभ्यः कवचेभ्यस्तु श्रेष्ठं सारतरं परम् ॥१८॥
इदं पठित्वा त्वं देहं भस्मनैवावगुण्ठ्य च ।

तत्तत्स्थानेषु विन्यस्य वद्धवादः कवचं दृढम् ॥१९॥
दशवारान् मनुः जप्त्वा यन्त्र कुत्रापि गच्छतु ।
समरे निपतच्छस्त्रेऽरण्ये स्वापदसङ्कुले ॥२०॥
श्मशाने प्रेतभूताढ्यकान्तारे दस्युसङ्कुले ।
राजद्वारे सपिशुने गह्वरे सर्पवेष्टिते ॥२१॥
तस्य भीतिर्न कुत्रापि चरतः पृथिवीमिमाम् ।
न च व्याधिभयं तस्य नैव तस्करजं भयम् ॥२२॥
नाग्न्युत्पातो नैव भूतप्रेतजः सङ्कटस्तथा ।
विद्युद्वर्षोपलभयं न कदापि प्रबाधते ॥२३॥
न दुर्भिक्षभयं चास्य न च मारिभयं तथा ।
कृत्याभिचारजा दोषाः स्पृशन्त्येनं कदापि न ॥२४॥
सहस्रं जपतश्चास्य पुरश्चरणमुच्यते ।
तत्कृत्वा तु प्रयुञ्जीत सर्वस्मिन्नपि कर्मणि ॥२५॥
वश्यकार्यो मोहने च मारणोच्चाटने तथा ।
स्तम्भने च तथा द्वेषे तथा कृत्याभिचारयोः ॥२६॥
दुर्गभङ्गे तथा युद्धे परचक्र निवारणे ।
एतत् प्रयोगात् सर्वाणि कार्याणि परिसाधयेत् ॥२७॥
भूतावेशं नाशयति विवादे जयति द्विषः ।
सङ्कटं तरति क्षिप्रं कलहे जयमाप्नुयात् ॥२८॥
यदीच्छेत् महतीं लक्ष्मी तनयानायुरेव च ।
विद्यां कान्तिं तथौन्नत्यं यश आरोग्यमेव ॥२९॥
भोगान् सौख्यं विघ्नहानिमनालस्यं महोदयम् ।
अधीहि कवचं नित्यममुनामुञ्च च प्रिये ॥३०॥

कवचेनामुना सर्वं संसाधयति साधकः ।
यद् यद् ध्यायति चित्तेन सिद्धं तत्तत्पुरः स्थितम् ॥३१॥
दुर्धटं घटयत्येतत् कवचं विश्वमङ्गलम् ।
विश्वस्य मङ्गलं यस्मादतो वै विश्वमङ्गलम् ॥३२॥
सान्निध्यकारकं गुह्यकाल्या एतत् प्रकीर्तितम् ।
भुक्तवा भोगानघं हत्वा देहान्ते मोक्षमाप्नुयात् ॥३३॥

॥ इति विश्वमङ्गल गुह्यकालीकवचम् ॥

४

॥ श्रीगुह्यकालीद्वादशनामस्तोत्रम् ॥

ईश्वर उवाच ॥

प्रथमं कालिका नाम द्वितीयं सर्वमङ्गला ।
तृतीयं कामहा चैव चतुर्थन्तु श्मशानगा ॥
पञ्चमं कामदा चैव षष्टञ्चाद्या तथैव च ।
सप्तमं शवरूढा च अष्टमं चाम्बिका तथा ॥
नवमं नागशिष्या च दशमं त्रिदशेश्वरी ।
एकादशं करालास्या श्यामा द्वादशमेव च ॥
द्वादशैतानि नामानि पठेन्नित्यं महेश्वरी ।
गोसहस्रप्रदानस्य फलं भवति सत्वरः ॥
रतौ च पठते देवी कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।
भगस्पर्शे च पठते सर्वविद्येश्वरोभवेत् ॥
त्रिसन्ध्यं पठते देवि त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ।
न देयं वैष्णवे सौरे गाणपत्ये महास्तवम् ॥
सत्यं सत्यं च सत्यं च देयं शैवे च शाक्तये ।

॥ श्रीहंससंहितायामीश्वरप्रोक्तं श्रीगुह्यकालिकायां द्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

५

॥ श्रीगुह्यकालीद्वादशनामावलिः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं कालिकायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं सर्वमङ्गलायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं कामहायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं श्मशानगायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं कामदायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं आद्यायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं शवरुढायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं अम्बिकायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं नागशिष्यायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं त्रिदशेश्वर्यै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं करालास्यायै नमः ॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं श्यामायै नमः ॥

॥ श्रीगुह्यकालीद्वादशनामावलिःसम्पूर्णा ॥

६

॥ श्रीगुह्यकाल्याः अष्टोत्तशतनामस्तोत्रम् ॥

ॐ नमः गुह्यकालिकायै ॥

गुह्यकाली महाकाली गुह्यश्री गुह्यभैरवीः ।
योगेश्वरी महामाया महायोगेश्वरी शिवा ॥१॥
गुह्येश्वरी सिद्धिकाली योगिनी सिद्धयोगिनी ।
सिद्धिगुह्यमहाकालि सिद्धयोगेश्वरेश्वरी ॥२॥
चिच्चण्डगुह्यकाली च ज्वालासिद्धिकरालिका ।
सिद्धेश्वरी सिद्धलक्ष्मी भद्रकाली कपालिनी ॥३॥
ज्वालाकरालवदना गुह्यकन्या कुमारिका ।
सिद्धिगुह्यमहालक्ष्मि देवराजकुलेश्वरी ॥४॥
राजराजेश्वरीश्चैव महामङ्गलयोगिनी ।
योगमाया योगकन्या महाविद्या सुरेश्वरी ॥५॥
महाघोरा कालरात्रि कालसंकर्षिणी सुधा ।
राजेश्वरी राजलक्ष्मी राजभद्रेश्वरी स्वराः ॥६॥
कल्पगुह्या गुह्यचण्डी कुलगुह्यमहेश्वरी ।
कुलगुह्यमहाकाली वटुवामा श्रीभैरवी ॥७॥
अग्निज्वाला महाजिह्वा महावज्रनखायुधा ।
ज्वालाग्निगुह्यकाली च ब्रह्मकङ्कालमालिनी ॥८॥
महाकाली महागुह्ये महाकाली महोदया ।
चितिगुह्यमहाकाली त्रिमुखी वज्रदृष्टिनी ॥९॥
नववक्त्रा विभिषणा बहुनेत्रा बहुपदा ।

बहुरूपा महाकाली जयमङ्गलयोगिनी ॥१०॥
जयश्रीमङ्गलादेवी नित्यक्लिन्नायोगिनी ।
त्रैलोक्यमोहजननी स्वभक्तज्ञानदायनी ॥११॥
रुद्रचण्डा महाचण्डा कालचण्डा कुलेश्वरी ।
श्रीमहागुह्यकालि च जगन्माता जगन्मयि ॥१२॥
महाकाली गुह्यकाली सर्वमङ्गलमङ्गला ।
महोग्रगुह्यकालि च गुह्यभैरवयोगिनी ॥१३॥
महाकौलगुह्यकालि महाकौलेश्वरेश्वरी ।
कुलाकुला महातत्वा नित्यतृप्ता निराश्रया ॥१४॥
ब्रह्मविद्या जगद्धात्री वशिष्ठाश्रययोगिनी ।
श्रीगुह्या च महादेवी कुलमार्तण्डयोगिनी ॥१५॥
श्रीशक्तिगुह्यकालि च महाभैरववाहिनी ।
शतगुह्यमहाकालि ताम्राक्षि गुह्यकालिका ॥१६॥
विदान्न वेदा सर्वज्ञा सर्वलोकैकसाक्षिणी ।
श्मशानभैरवीकाली महाघोरा प्रपुजिता ॥१७॥
ज्वालाख्याकालिकाश्चैव महासंहारकालिका ।
स्थितचण्डमहाकालि सृष्टि शिवङ्करी नित्या ॥१८॥
परंज्योति परंगुह्यगुह्यकालीति कीर्तिता ।
विनिवृत्त्या प्रयोज्योवै नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१९॥
अतिगुह्यतरं दिव्यं सर्वाम्नायेषु गोपितम् ।
सारात् सार त्तरं भद्रे देवतन्त्रेषु कीर्तनम् ॥२०॥
सकृज्जप्ता गुह्यकाल्या चतुर्वगफलं भवेत् ॥२१॥

॥ श्रीगुह्यकाल्या: अष्टोत्तशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

७

॥ श्रीगुह्यकालीदेव्या:अष्टोत्तशतनामावलिः ॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें गुह्यकाल्यै नमः ॥१॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें महाकाल्यै नमः ॥२॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें गुह्यश्रियै नमः ॥३॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें गुह्यभैरव्यै नमः ॥४॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें योगेश्वर्यै नमः ॥५॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें महामायायै नमः ॥६॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें महायोगेश्वर्यै नमः ॥७॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें शिवायै नमः ॥८॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें गुह्येश्वर्यै नमः ॥९॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें सिद्धिकाल्यै नमः ॥१०॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें योगिन्यै नमः ॥११॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें सिद्धयोगिन्यै नमः ॥१२॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें सिद्धिगुह्यमहाकाल्यै नमः ॥१३॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें सिद्धयोगेश्वरेश्वर्यै नमः ॥१४॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें चिच्चण्डगुह्यकाल्यै नमः ॥१५॥

ॐफ्रेंह्रीँछ्रीँहूँस्त्रीँफ्रेंज्वालासिद्धिकरालिकायैनमः॥१६॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें सिद्धेश्वर्यै नमः ॥१७॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें सिद्धलक्ष्म्यै नमः ॥१८॥

ॐ फ्रें ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रें भद्रकाल्यै नमः ॥१९॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें कपालिन्यै नमः ॥२०॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें ज्वालाकरालवदनायै नमः ॥२१॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें गुह्यकन्यायै नमः ॥२२॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें कुमारिकायै नमः ॥२३॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें सिद्धिगुह्यमहालक्ष्म्यै नमः ॥२४॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें देवराजकुलेश्वर्यै नमः ॥२५॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें राजराजेश्वर्यै नमः ॥२६॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें महामङ्गलयोगिन्यै नमः ॥२७॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें योगमायायै नमः ॥२८॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें योगकन्यायै नमः ॥२९॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें महाविद्यायै नमः ॥३०॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें सुरेश्वर्यै नमः ॥३१॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें महाघोरायै नमः ॥३२॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें कालरात्र्यै नमः ॥३३॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें कालसंकर्षिण्यै नमः ॥३४॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें सुधायै नमः ॥३५॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें राजेश्वर्यै नमः ॥३६॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें राजलक्ष्म्यै नमः ॥३७॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें राजभद्रेश्वर्यै नमः ॥३८॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें स्वरायै नमः ॥३९॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें कल्पगुह्यायै नमः ॥४०॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें गुह्यचण्ड्यै नमः ॥४१॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें कुलगुह्यमहेश्वर्यै नमः ॥४२॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूँ स्त्रीं फ्रें कुलगुह्यमहाकाल्यै नमः ॥४३॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं वटुवामायै नमः ॥४४॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं श्रीभैरव्यै नमः ॥४५॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं अग्निज्वालायै नमः ॥४६॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं महाजिह्वायै नमः ॥४७॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं महावज्रनखायुधायै नमः ॥४८॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं ज्वालाग्निगुह्यकाल्यै नमः ॥४९॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं ब्रह्मकङ्कालमालिन्यै नमः ॥५०॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं महाकालीमहागुह्यायै नमः ॥५१॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं महाकालीमहोदयायै नमः ॥५२॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं चितिगुह्यमहाकाल्यै नमः ॥५३॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं त्रिमुख्यै नमः ॥५४॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं वज्रदृष्टिन्यै नमः ॥५५॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं नववक्त्रायै नमः ॥५६॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं विभिषणायै नमः ॥५७॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं बहुनेत्रायै नमः ॥५८॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं बहुपदायै नमः ॥५९॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं बहुरूपामहाकाल्यै नमः ॥६०॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं जयमङ्गलयोगिन्यै नमः ॥६१॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं जयश्रीमङ्गलादेव्यै नमः ॥६२॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं नित्यक्लिन्नायोगिन्यै नमः ॥६३॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं त्रैलोक्यमोहजनन्यै नमः ॥६४॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं स्वभक्तज्ञानदायिन्यै नमः ॥६५॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं रुद्रचण्डायै नमः ॥६६॥

ॐ फ्रैं ह्रीँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ फ्रैं महाचण्डायै नमः ॥६७॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें कालचण्डायै नमः ॥६८॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें कुलेश्वर्यै नमः ॥६९॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें श्रीमहागुह्यकाल्यै नमः ॥७०॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें जगन्मातायै नमः ॥७१॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें जगन्मय्यै नमः ॥७२॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महाकालगुह्यकाल्यै नमः ॥७३॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें सर्वमङ्गलमङ्गलायै नमः ॥७४॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महोग्रगुह्यकाल्यै नमः ॥७५॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें गुह्यभैरवयोगिन्यै नमः ॥७६॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महाकौलगुह्यकाल्यै नमः ॥७७॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महाकौलेश्वरेश्वर्यै नमः ॥७८॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें कुलाकुलायै नमः ॥७९॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महातत्वायै नमः ॥८०॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नित्यतृप्तायै नमः ॥८१॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें निराश्रयायै नमः ॥८२॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें ब्रह्मविद्यायै नमः ॥८३॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें जगद्धात्रीयै नमः ॥८४॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें वशिष्ठाश्रययोगिनीयै नमः ॥८५॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें श्रीगुह्यायै नमः ॥८६॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महादेव्यै नमः ॥८७॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें कुलमार्तण्डयोगिन्यै नमः ॥८८॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें श्रीशक्तिगुह्यकाल्यै नमः ॥८९॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महाभैरववाहिन्यै नमः ॥९०॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें शतगुह्यमहाकाल्यै नमः ॥९१॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें ताम्राक्ष्यै नमः ॥९२॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें गुह्यकालिकायै नमः ॥९३॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें विदान्नवेदायै नमः ॥९४॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें सर्वज्ञायै नमः ॥९५॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें सर्वलोकैकसाक्षिण्यै नमः ॥९६॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें श्मशानभैरवीकाल्यै नमः ॥९७॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महाघोरायै नमः ॥९८॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें प्रपुजितायै नमः ॥९९॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें ज्वालाख्याकालिकायै नमः ॥१००॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महासंहारकालिकायै नमः ॥१०१॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें स्थित्यै नमः ॥१०२॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें चण्डमहाकाल्यै नमः ॥१०३॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें सृष्ट्यै नमः ॥१०४॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें शिवङ्कर्यै नमः ॥१०५॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नित्यायैनमः ॥१०६॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें परञ्ज्योत्यै नमः ॥१०७॥

ॐ फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें परङ्गुह्यगुह्यकाल्यै नमः ॥१०८॥

॥ श्रीगुह्यकालीदेव्या:अष्टोत्तशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

८

॥ श्रीगुह्यकालीशतनामस्तोत्रम् ॥

शिव उवाच ॥

अतः काल्यां स्तवं वक्ष्ये शृणुष्व कमलानने ।
यत् प्रसादान्महात्मानः सर्वसिद्धिमवाप्नुयुः ॥
ॐ काल्यानीना महातेजा लोकधात्री महायशा ।
सरस्वती महालक्ष्मीः प्रजाश्रीबुद्धिवर्द्धिनी ॥१॥
धृतिदा पुष्टिदा स्वाहा कालीं कामकालीरूपिणी ।
सर्वसत्वहितेयुक्ता संग्रामेतारिणी जया ॥२॥
इन्द्रुती शङ्खिनी पुर्णा विद्याराज्ञी प्रियप्रदा ।
चन्द्रानना महागौरी कूजिता पीतवासवा ॥३॥
महामाया महालोका महाबलपराक्रमा ।
महारौद्री महाचण्डा दुष्टदानवघातिनी ॥४॥
प्रशान्ता शान्तरूपा च विजया च बलप्रदा ।
विद्युन्माली गदी खड्गी चक्री चापोदातायुधा ॥५॥
जृम्भिनी स्तम्भिनी बाला कालरात्री निशाचरी ।
यक्षिणी मोहिनी कृष्णा प्रशान्ता शान्तरूपिणी ॥६॥
ब्रह्माणी वेदमाता च तुहिनाचलवासिनी ।
मङ्गला शाङ्करी सौम्या जातवेदा मनोभवा ॥७॥
करालिनी महावेगा साध्या सत्यपराक्रमा ।
कान्तरी द्रविणी रक्ता नष्टसत्वविनाशिनी ॥८॥

वरदा शशिनी शास्त्रस्वरूपा त्रिविक्रमा ।
शबरी योगिनी सिद्धा चाण्डाली चामृता ध्रुवा ॥९॥
पूण्या धन्या महाप्रीतिः प्रीतिदा प्रेमविह्वला ।
कृतान्तवासिनी भीमा उग्रा उग्रमहातपा ॥१०॥
जगदेकहितायुक्ता शरण्या भक्तवत्सला ।
वागीश्वरी शिवा सूक्ष्मा शर्वा नित्या नगात्मजा ॥११॥
सर्वार्थसाधनी भद्रा गोष्ठी धात्री धनप्रदा ।
अभया गौतमी श्रेष्ठा निशीथे च श्रीः सर्वार्थकामुगा ॥१२॥
तारानामगुणा सर्वा सर्वाशा परिपूजिता ।
अष्टोत्तरशतं नाम कीर्तितं हितकाम्यया ॥१३॥
रहस्यमद्भुतं गुह्यं देवानामपि दुर्लभम् ।
प्रातःकाले निशीथे च रात्रौ वा परमेश्वरी ॥१४॥
यः पठेत् पाठयेद्वापि षण्मासं प्रत्यहं प्रिये ।
तस्य सर्वार्हसिद्धिः स्यात् यद्यन्मनसिवर्तते ॥१५॥
अष्टोत्तरशतं नाम कीर्तनं हितकाम्यया ।
सौभग्यकरणं जन्तोः सर्वपापविनाशनम् ॥१६॥
सर्वव्याधिप्रशमनं सर्वकाले सुखावहम् ।
त्रिकालं यः पठेद्धीमान् शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥१७॥
सोःअचिरेऽनैव कालेन राज्यश्रियमवाप्नुयात् ।
दुःखितोऽपि सुखी नित्यं दरिद्रो धनवान् भवेत् ॥१८॥
यतो भवेत् महाप्राज्ञो मेधावी नात्र संशयः ।
बन्धनान्मुच्यते वद्धो व्यावहारे जयी भवेत् ॥१९॥
स एव दासतां यान्ति भृङ्गिगणश्चापि दंस्ट्रीणः ।
संग्रामे सङ्कटे दुर्गे नाभयं स्यात् समङ्गले ॥२०॥

स्मृत्वैतानि च नामानि सर्वपापं व्यपोहति ।
यस्त्विमां प्रातरुत्थाय मानवः कीर्तियिष्यति ॥२१॥
स दीर्घायुरायुष्मान् स श्रिया च न मुच्यते ।
देवा यक्षास्तथा नागा गन्धर्व्याः कटपूतना ॥२२॥

॥ श्रीरूद्रयामलेविश्वसारतन्त्रे गुह्यकालीशतनामस्तोत्रम्सम्पूर्णम् ॥

९

॥ श्रीगुह्यकालीलघुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

महाकालोवाच ॥

चण्डयोगेश्वरी चण्डी चण्डकापालिनी शिवा ।
चामुण्डा चण्डिका सिद्धिकराली मुण्डमालिनी ॥१॥
कालचक्रेश्वरी फेरुहस्ता घोराट्टहासिनी ।
डामरी चर्चिका सिद्धिविकराली भगप्रिया ॥२॥
उल्कामुखी ऋक्षकर्णी बलप्रमथिनी परा ।
महामाया योगनिद्रा त्रैलोक्यजननीश्वरी ॥३॥
कात्यायनी घोररूपा जयन्ती सर्वमङ्गला ।
कामातुरा मदोन्मत्ता देवदेवीवरप्रदा ॥४॥
मातङ्गी कुब्जिका रौद्री रुद्राणी जगदम्बिका ।
चिदानन्दमयी मेधा ब्रह्मरूपा जगन्मयी ॥५॥
संहारिणी वेदमाता सिद्धिदात्री बलाहका ।
वारुणी जगतामाद्या कलातीता चिदात्मिका ॥६॥
नाभान्येतानि पठता सर्वं तत् परिपठ्यते ॥७॥

॥ श्रीगुह्यकालीलघुसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

१०

॥ श्रीगुह्यकालीसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

श्रीसदाशिव उवाच ॥

ॐ नमस्त्रिभुवनेशाय ब्रह्मणे विश्वरूपिणे ।
ईश्वराय परेशाय गुरवे शिवरूपिणे ॥१॥
यस्याः प्रसादाद्देवोऽपि सर्वज्ञः सशिवो भवेत् ।
तां नौमि परमेशानी सर्वव्यापिनीमीश्वरीम् ॥२॥
ब्रह्माण्ड कोटिलक्षाणि भस्मसात् कुरुते यया ।
तां कालग्रासनिरतां गुह्यकालीं नमाम्यहं ॥३॥
यया सर्वं वितनुते यां विशन्ति पुनः पुनः ।
यस्यार्च्चनेन देवोऽपि शिवः सर्वज्ञ योगवित् ॥४॥
सृष्टिस्थित्यन्तकर्त्ता च सो भवत्परमेश्वरः ।
शिवं च शान्तमीशानजरामरण वर्जितम् ॥५॥
पुरायुगादौ रौद्रेण शक्त्यासंधारयेद्गुणैः ।
प्राप्तवान् परमं ज्ञानं स्तवराजं महामनुम् ॥६॥
शिवेन विष्णवे दत्तं विष्णुना ब्रह्मणे ददौ ।
ब्रह्मणा च वशिष्ठाय वशिष्ठो मनवे ददौ ॥७॥
मनुनाराज्यकामेन सदाजप्तैकमानसः ।
पयोधि मेखलां पृथ्वीं सशासमनुरेकराट् ॥८॥
विनाव्रतैर्विनाध्यानैर्विनापूजाजपैस्तवैः ।
वीरसाधनहोमादि विनाशीघ्रं फलप्रदा ॥९॥

नानेन सदृशं स्तोत्रं विद्यते भुवनोदरे ।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य पठेन्नामसहस्रकम् ॥१०॥
यस्या नाम सहस्रस्य पंठनान्न पुनर्जनिः ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन पठनीयं समाहितः ॥११॥
एकाग्रमतिख्यग्रं कृत्वा ध्यायेन् महेश्वरीं ॥१२॥

ॐ अस्यश्रीगुह्यकालीमंत्रनामसहस्रस्य श्रीसदाशिवऋषिरनुष्टुप्छंदः श्रीगुह्यकालीदेवता ॐ बीजं फ्रें शक्तिः ह्रीं कीलकं सर्वेष्टसिद्ध्येविनियोगः ॥

॥ ध्यानम् ॥

ब्रह्मादिपंचकयुगश्रुतिदिक्पतिनां मुण्डेषुभैरवशिवाप्रलयानलेषु तस्योर्द्ध्वके दशशरच्छदविद्रुमाभेपद्मे स्थितां भगवतीं परमादशास्याम् ।

सिंहेभकोलकपिऋक्षतुरंगतार्क्ष योगेश्वरीमकरमानवपंक्तिवक्त्रां शूलां कुशापरशुमुद्गरपाशपात्रखट्वांग बालकशिरोङ्कितपाणिपद्माम् ॥१३॥

ॐ ह्रीँ फ्रैँ छ्रीँ हूँ स्त्रीँ नमः ॥
ॐ गुह्यकाली महाकाली भद्रकाली सुमंगला ।
परापरेश्वरी धूम्रा परमेष्ठीवरप्रदा ॥१४॥
चंडिका चर्च्चिका दुर्गा चामुण्डाशववाहिनी ।
चण्डघण्टा चण्डहासा चण्डबेतालवाहिनी ॥१५॥
चारुप्रसन्नवदना चण्डमुण्डविनाशिनी ।
चण्डघोषमहारावा चारुचक्रप्रकाशिनी ॥१६॥
चण्डेश्वरप्राणचरी चण्डफेरवराशिनी ।
प्रचण्डदैत्यदर्प्पघ्नी समस्तपातकापहा ॥१७॥
भद्रा भद्रेश्वरी भीमा भीषणी भैरवप्रिया ।
महाभाग्यप्रदा भाग्या भवबन्धविमोचिनी ॥१८॥
भवानी भवरोगघ्नी भक्तभावप्रबोधिनी ।
महामोहप्रशमनी महोत्साहप्रसादिनी ॥१९॥

क्षमा कान्ति प्रभा ज्योत्स्ना चण्डयोगेश्वरि शिवा ।
तेजरूपा तेजमया दिव्यतेजप्रकाशिनि ॥२०॥
ज्योतिर्वक्त्रा महाचण्डयोगेश्वरी महाप्रभा ।
सिंहवक्त्रा शिवावक्त्रा कपिवक्त्रा गजानना ॥२१॥
तार्क्ष्यवक्त्रा शंकुवक्त्रा ऋक्षवक्त्रा हयानना ।
नरवक्त्रा नीलवर्णा चतुःपंचाशदोर्युता ॥२२॥
चिद्रत्नमुद्रिका हस्ता नरमुण्डविभूषिता ।
शुष्कमुण्डविभूषा च नानारत्नविभूषिता ॥२३॥
दुष्टप्रशमनी रौद्रि बालिका सिंहवाहिनी ।
नरमुण्डविभूषा च शुष्कमुण्डविभूषिता ॥२४॥
कालकाली दीप्तकाली प्रधाना बलिभक्षणी ।
जयाजयन्ती विजया जयदुःस्वप्ननाशिनी ॥२५॥
ब्रह्मप्रेतासना चारु कमला कमलप्रिया ।
दीप्तजिह्वा ललजिह्वा विद्युज्जिह्वा जरापहा ॥२६॥
चंद्रार्कवह्निनयना विष्णुप्रेतासनस्थिता ।
सूर्यमण्डलमध्यस्था नानाकर्मफलप्रदा ॥२७॥
रुद्राप्रेतासना रौद्री कामिनी पद्मलोचना ।
ईश्वरासनसंस्थाना ईश्वरीश्वरवल्लभा ॥२८॥
महाप्रभावा महती महदैश्वर्य दायिनी ।
सदाशिवासना रामा देवमाता सुधा स्मृता ॥२९॥
क्रोष्टरावस्थिता माया महामृतमहास्मृतिः ।
महाफेरवी रामा रावरौद्रा भयंकरी ॥३०॥
महासेनस्यजननी प्रतिष्ठा पालिनी शुभा ।
निशुम्भशुम्भदलनी मधुकैटभनाशिनी ॥३१॥
दुर्धर्षदमनी कन्या विडालाक्षप्रमर्दिनी ।

रक्तबीजविशोषघ्नी महिषासुरघातिनी ॥३२॥
उग्रचण्डा उग्ररूपा उग्रशत्रुनिपातिनी ।
उग्रपापक्षयकरी उग्रशासनशासिनी ॥३३॥
उग्रायुधधरी धात्री उग्रभूषणभूषिता ।
महापापप्रशमनी उग्रकर्मकरी किला ॥३४॥
रुद्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डेग्रा चण्डनायिका ।
चण्डा चण्डवती चण्डी प्रचण्डा चण्डनादिनी ॥३५॥
योगिनी च महाचण्डा चण्डरूपातिचण्डिका ।
खड्गिनी शूलिनी घोरा हुंकारा रावनादिनी ॥३६॥
पाशिनी शक्तिनी चण्डी महाकन्दलधारिणी ।
खट्वांगिनी मुण्डिनी च चापिनी चक्रिणी परा ॥३७॥
घण्टारावप्रिया नित्या शैलिनी कुट्टिनी महा ।
बालप्रेतधृतवती महाक कङ्कालधारिणी ॥३८॥
नकुलिनी च सर्पास्त्रधारिणी वशिनी उमा ।
षडस्र ओडिकाहस्ता वह्निपात्र त्रिदण्डिनी ॥३९॥
श्रुचहस्ता च सिंही च वज्रमुद्गरधारिणी ।
हुंकारिणी डिण्डिमी च श्रीकरी कर्त्रीधारिणी ॥४०॥
महाङ्कुशधृतवती महाडिण्डिमनादिनी ।
त्रिशूलिनी दण्डिनी च धनुः कलशधारिणी ॥४१॥
पद्माकुशपुस्तकञ्च धारिणी प्रेतवाहिनी ।
छुरिका तोमरवती महाकुसुममालिनी ॥४२॥
नद्यावर्त्तधृतवती परमानन्ददायिनी ।
पारमेशी महारौद्री भक्तवश्या भवप्रिया ॥४३॥
व्योमवामेश्वरी वामा खेचरी दिक्चरी धृती ।
गोचरी भूचरी सौम्या पतंगी पालकी शिवा ॥४४॥

नरविल्लवराहा गोसर्पास्या विविधानना ।
शुद्धमूर्तिः शीलमुर्तिः सूर्यमुर्तिर्गुणाश्रया ॥४५॥
सोममूर्तिर्महानंदा प्रभामूर्तिर्महानभाः ।
क्षीरमूर्तिर्महार्चिष्मा महाकेतुकुलीशिका ॥४६॥
पताकिनी दयारम्भा मूलप्रकृतिरीश्वरी ।
मार्तण्डमण्डलचरी सिंदूरतिलकप्रिया ॥४७॥
ऋक्षसाहस्रमूर्तिश्च चण्डमूर्तिमहिश्वरी ।
महाहंसमती विष्णुमती विमलसिंहिका ॥४८॥
महाखण्डमती सिंहमती वीरमती प्रभा ।
अहिशमती मातङ्गी क्षतक्षरमहामतिः ॥४९॥
विचित्रचित्रितमती वीरसिंहनती परा ।
भैरसिंहमती ज्ञानमहारश्मिमती कृशा ॥५०॥
महाकोङ्कणसंस्थानी महाईडामरीचिका ।
सर्वगाम्बा दिव्यगाम्बा महामीना महासुरी ॥५१॥
महाचण्डी च दिव्याङ्गी महाविद्याप्रपूजिता ।
महान्तरिक्षतेजाम्बा सिद्धियोगिनी भामिनी ॥५२॥
गगणाम्बा महाभट्टि महालम्बगुणीकृशा ।
महाचण्डी मण्डलाम्बा शौनकी झषणी घनी ॥५३॥
पटुकिनी च पटुकी गन्धकाली मतङ्गीणी ।
कैवर्तिनी पञ्चका च मत्तकामिनी राक्षसी ॥५४॥
भनकी भक्षकी श्रोत्रि धूम्रा दंष्ट्रिणी रूपिका ।
ज्वालिनि गगनेशी च भावा गांधारिणी नदी ॥५५॥
बिम्बा शान्ता महामाया सुभङ्ग्या नन्दिनी ध्रुवा ।
उमानन्दा श्रियानन्दा महानन्दा सुनन्दिनी ॥५६॥
इडा मरीचि विविधाम्बा मीनजाम्बा प्रबोधिनी ।

चण्डिनी रौद्रिणी दिव्या सिद्ध्यन्तरीक्षगा स्मृता ॥५७॥
अम्बिका बालिकाम्बा च साक्षात्साधुजनार्चिता ।
विद्याधरी चण्डिनी च मारुता सर्वदास्मृता ॥५८॥
उल्कामुखी लोकमुखी चण्डेशी चण्डमालिका ।
भीमानना अनङ्गाख्या विद्याकारप्रवर्तिनी ॥५९॥
दुन्मनी सुन्दरी स्वाहा सुधामण्डलचारिणी ।
कराला विकराला च खगास्या खगवाहिनी ॥६०॥
शृगालि पूतना वज्रव्योमकाली च कौलिकी ।
योनिश्च सिद्धियोनिश्च महायोनिः सुयोनिजा ॥६१॥
सिद्धयोनिः शङ्खयोनिः महाशङ्खास्थियोनि च ।
दिव्ययोनिर्महादिव्ययोनि पद्माक्षयोनिका ॥६२॥
महाभक्षणभक्षी च महासंहारिणी शिरा ।
महारक्तेश्वरी रौद्री महाकृतान्तनाशिनि ॥६३॥
महायमभक्षणी च कालसंहारघोषिणी ।
कालरात्रीर्महारौद्री चण्डालि कालनाशिनी ॥६४॥
वीरेश्वरी वीरपूज्या कालाग्निभयदारिणी ।
महाभैरवसंहारी ब्रह्माण्डानर्विहारिणी ॥६५॥
संहारकालिका भद्रा महाभयविघातिनी ।
सृष्टिकाली महादिव्या स्थितिकाली महोज्वला ॥६६॥
संहारकालि कोडामा कालग्रसनकालिका ।
रक्तकाली महोग्रा च काली यमसमार्गिका ॥६७॥
मृत्युकाली भद्रकाली महामार्तण्डकालिका ।
महाकालाग्निकाली च परमार्कार्ककालिका ॥६८॥
कालकालि महाघोरा चण्डभैरवकालिका ।
मंत्रकाली हंसकाली क्रमकाली च डामरी ॥६९॥

ज्ञानकाली चक्रकाली चक्र ओङ्कारकालिका ।
महागगनकाली च एकभासा च कालिका ॥७०॥
महाशब्दकालिका च महाबलात्तकालिका ।
ऋद्धिकाली सिद्धिकालि भासा श्रीहंसकालिका ॥७१॥
चण्डभासाकालिका च भासा डामरकालिका ।
भासायोगी महाभासा भासा गगनकालिका ॥७२॥
भासाम्बरकालिका च भासा अक्षस्तुकालिका ।
सूर्यकाली चंद्रकाली अग्निकाली सुभीषणा ॥७३॥
वायुकाली व्योमकाली मनःकाली सुव्यापिनि ।
सर्वकाली सिद्धिकालि निरालम्बास्तुकालिका ॥७४॥
कालिका दंष्ट्रिणीमुद्रा मुद्रा सा लेलिहानका ।
कपालमुद्रा कालघ्नीमुद्रा सा कालनाशिनी ॥७५॥
समयघ्नी घोरमुद्रा विकराला च डामरी ।
श्रीकुण्डला ज्ञानमुद्रा शिराकपालमुद्रिका ॥७६॥
योनिमुद्रा परामुद्रा महामुद्रा च द्वादशी ।
छिप्पिणी धीवरी काली पुलिन्दी ओडिका प्रभा ॥७७॥
वेश्याम्बा शौण्डिनी घोरा कैवर्त्ती खटकी मती ।
रजकी छिप्पिणी ज्ञाना अटकी कोशध्यम्बिका ॥७८॥
अग्निवक्त्रा च पिंगाक्षी रमणी वमनी जरा ।
गोकर्णी गजकर्णी च चामुण्डा अश्वकर्णिका ॥७९॥
विद्युन्मुखी प्रसन्नाम्बा लोकमाता प्रभाविनी ।
ब्रह्मानना ब्रह्मवला कपिला पूतनाभया ॥८०॥
भग्ननाशा भग्नकर्णा सघृष्टा राजमातृका ।
गुह्येश्वरी शारदा च जल्पेश्वरी च पार्वती ॥८१॥
कुलाली हरिणी माया महामाया च अम्बिका ।

रक्ताम्बा च महाभाली घण्टाली चित्रिणी स्मृता ॥८२॥
ऊर्ध्वकेशी छिन्नमस्ता महालक्ष्मी त्रिकोणगा ।
मातंगी शिवदूती च सिद्धाम्बा पद्ममंदिरा ॥८३॥
पद्मयोनिर्निरावाधा सुलिङ्गा भगमालिनी ।
चण्डाख्या त्रिजटा ध्याना त्रिशक्तिमातृकातरा ॥८४॥
कपालिनि मालिनी च कामिनी कामलालसा ।
मंत्रेश्वरी उग्रकालि लक्ष्मीमाली तु मालिका ॥८५॥
कुलाली रक्तचण्डाख्या कामलक्ष्मी मनोभवा ।
जिनमाता जिनेन्द्रा च शारदा हंसवाहिनी ॥८६॥
महाग्रीवा च सुरमा सुभक्ता च मनोहरा ।
अश्वराम्बा पराम्बा च नगशैलाग्रवासिनी ॥८७॥
शुष्ककंदलभूषांगी शुष्ककंदलधारिणी ।
दंष्ट्रिनी विकटास्या च शिवदूती धनस्तनी ॥८८॥
सर्पमालाविभूषांगी सर्पकुण्डलधारिणी ।
सद्यछिन्नशिरोमाला आपादान्तावलम्बिनी ॥८९॥
बहुवक्त्रा बहुभुजा बहुपादा गणेश्वरी ।
त्रिकोणबिन्दुनिलया पंचक्रमनिवासिनी ॥९०॥
स्थूलमार्गस्थिता सूक्ष्मा सूक्ष्माग्रा बुद्धिबोधिनी ।
मूलाधारनिरधार वह्निकुण्डकृतालया ॥९१॥
श्वासोच्छ्वासगतज्जिवाग्राहिणी वह्निसंश्रया ।
वल्लतन्तुसमुत्थाना षडुशा स्वादुलोलुपा ॥९२॥
कालचक्रभ्रमिर्भ्रान्ता निभ्रमा भ्रमनाशिनी ।
वात्याली मेघमालि च सुवृष्टिः शस्यवर्धिनी ॥९३॥
अकारा च वकारा च उकारैकाररूपिणी ।
ह्रीङ्कारबीजरूपा च क्लीङ्काराम्बरवासिनी ॥९४॥

सिन्दूरारूणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया ।
श्यामा च वश्यबीजा च लोकवश्यविभाविनी ॥९५॥
गजानना हयमुखा रासभास्या शुकानना ।
चर्चिका वनचारिण्यै परमंत्रविदारिणी ॥९६॥
सहस्रास्या सहस्रक्षा सहस्रभुजधारिणी ।
सहस्रपदचारिण्यै प्रेतमार्गप्रबोधिनि ॥९७॥
कोटिवक्त्रा कोटिपादा भुजाकोटिधृता सदा ।
महामारि विनिन्द्रा च तन्द्रा मृत्युविनाशिनि ॥९८॥
चन्द्रमण्डलसंकाशा चन्द्रमण्डलवासिनी ।
अणिमादिगुणोपेता अस्पृहा कामरूपिणी ॥९९॥
अष्टसिद्धि प्रजासोता दुष्टदानवघातिनि ।
अनादिनी धना पुष्टिश्चतुर्वर्गफलप्रदा ॥१००॥
गिरिकर्णी प्रतिकाशा सरत्कुमुद लोचना ।
भूतभव्यभविष्यज्ञा भूतभावनभाविनी ॥१०१॥
वाममार्गरता वामा शिववामाङ्गवासिनी ।
मंगला च सुशीला च प्रेतमार्गप्रबोधिनि ॥१०२॥
कुब्जिका च कुजा कुब्जा माता मालिनी मानदा ।
ज्वालामुखी वेगवती उमा शुष्का महेश्वरी ॥१०३॥
शुभा कामा च प्रकृतिर्घोषिणी रावराविणी ।
क्रममण्डलमध्यस्था क्रमेशी च नवात्मिका ॥१०४॥
ब्रह्मी रौद्री गुहवती वैष्णवी घोररूपिणी । ना
रसिंही शक्रवती चामुण्डा चर्चिता भगा ॥१०५॥
भगास्या भगिनी भव्या महाभाग्या महाबला ।
योगिनी रागिणी रम्या रत्नकञ्चुकधारिणी ॥१०६॥
गजचर्मवृताङ्गी च व्याघ्रचर्मकटिस्तथा ।

सिंहचर्मनितम्बी च कालचर्मोत्तरीयका ॥१०७॥
विश्वलक्ष्मीर्विश्वमाता जातरूपस्वरूपिणी ।
सर्वमंत्रमयी विद्या सर्वमंत्राक्षरा वरा ॥१०८॥
मातृमण्डलमध्यस्था मातृमण्डलवासिनी ।
कुमारजननी शुद्धा सुमुखी पापनाशिनी ॥१०९॥
मानलक्ष्मीश्च सुभगा शीतला शीलसंयुता ।
दिव्यास्तम्प्रदाकाली च पातालस्फोटकालिका ॥११०॥
मृत्युध्वजा वातध्वजा यमध्वजनी तारिणी ।
अपराजिता अजिता रामणी रामनाशिका ॥१११॥
शुष्का शुष्कमुखीधामा विकरालि करालिनी ।
राममाता रामपूज्या राज्यदाराज्यपूजिता ॥११२॥
शिवामहंत्तारिका च विशाखा नृहरिप्रभा ।
मनोनुगा कौलीनी च विश्वेशी पाशतारिणी ॥११३॥
रक्ता रक्तप्रियाऽघोरा कराला केकराघना ।
कर्णमोटि च योगेशी मीनस्थाननिवासिनी ॥११४॥
कलंकमालिनी कान्ता नारायणी जगद्धिता ।
अट्टाट्टहासिनी हासा वज्रपुष्पालिमालिनी ॥११५॥
यंत्रप्रमथनी मंत्रमाता मंत्रप्रकाशिनी ।
रुरुदेवी ललजिह्वा धामात्ता शवरी गवी ॥११६॥
मरीचिकाली कालघ्नी कालचर्मविभूषणी ।
श्मशानकालिका धूम्रकाली विश्वविमर्दनि ॥११७॥
संग्रामकालिका कालवंचनी रावनादिनि ।
ज्वालाननी कराली च धूम्रकालि रणप्रिया ॥११८॥
अमरान्तरकाली च चण्डी भुवनपालिनी ।
कुलिकान्तरकाली च माहेशी कृष्णपिंगला ॥११९॥

पातालिनी पापहरा पातालस्फोटिनी शिवा ।
रावराविणी रौद्रस्या गर्भस्तंभनकालिका ॥१२०॥
अक्षवक्त्रा चण्डयोगेश्वरी प्रत्यंगिरा स्मृता ।
मृडानी च स्वधा स्वाहा धूम्रा गंगामहोद्धृता ॥१२१॥
आदेशकालिका क्षोभकाली मेलापकालिका ।
आकर्षकालि आकर्षी शान्तिनी नेभ्रकालिका ॥१२२॥
वरप्रदा महाकाली नेत्रकाली सुराश्रिता ।
भक्तावेश्या भक्तसेवा कमलालय वासिनी ॥१२३॥
पंचप्राणेश्वरी प्राणरक्षिणी रक्तचण्डिका ।
शाकम्भरी विडालाक्षी नन्दा भद्राऽजिताऽनघा ॥१२४॥
मनोन्मनी महादंष्ट्रा करवीरनिवासिनी ।
करवीरश्मशानस्था लक्ष्मीर्वनगुहाचरी ॥१२५॥
चण्डासुरनिहन्त्री च चन्द्रा सुचन्द्रधारिणी ।
ब्रह्मकङ्कालसंलग्ना विष्णुकङ्कालभूषिता ॥१२६॥
महामन्त्रकालिका च महाभीषणकालिका ।
कुन्दुपुष्पप्रिया श्यामा गोलकं कुसुमप्रिया ॥१२७॥
स्वयम्भुकुसुमानन्दा दूतीषट्क समाग्रणीः ।
वेश्या च शौण्डिनी ब्राह्मी खेटकी छिप्पिलि कुली ॥१२८॥
रजकी बालकी बालधाम्नि धाम्ना धमप्रदा ।
कैवर्ती भट्टकी कौली बालिनी क्षत्रिनन्दिनी ॥१२९॥
चक्रिणी पौक्कसी शूद्री धीवरी चर्मकारिणी ।
मातङ्गी नरकी वेश्या वायकी श्वानकी सरी ॥१३०॥
चाण्डालध्वजिनी वेश्या महामत्यन्तजा शुकी ।
महाक्रमणकाली च कालकाली च कालिका ॥१३१॥
महागगनकालि च एकभासा च कालिका ।

मनतीकालिकारूप काली कनककालिका ॥१३२॥
शब्दकाली महाकाली कालिका ब्रह्मकालिका ।
स्वर्णकोटिश्वरी काली राजराजेश्वरी स्मृता ॥१३३॥
महाडामरकाली च भासाकाली च योगीनी ।
गुह्येश्वरी महाकाली महाशूलाग्रकालिका ॥१३४॥
योगिनी कालिका देवी वनदुर्गा वनप्रिया ।
मातङ्गी मदिरामत्ता नरमांसरता सदा ॥१३५॥
शबरी शाबरी शैला शरणागततत्परा ।
वत्सला वारुणी देवी माहेशी मत्तगामिनी ॥१३६॥
ऊर्ध्वकेशी च कालाख्या चक्रेशिनी मर्दिनी ।
आद्यकाली च फेत्काली काली श्रीहिंसिका तथा ॥१३७॥
धर्मकाली ज्ञानकाली राविणी कालिका परा ।
लीलावती कालिका च ह्रींमती कालिका ततः ॥१३८॥
छुरिका कालिका प्राणा हुंकारा रावकालिका ।
महाफेरवकाली च महाकालालिकालिका ॥१३९॥
नादिनीकाली कामाक्षा स्वामिनी कामकालिका ।
हासिनीकालिका हीलीकाली भुवनमोहिनि ॥१४०॥
सृष्टिकाली स्थितिकाली संहारकालिका कला ।
हंसकाली यमकाली कालग्रासनकालिका ॥१४१॥
विघ्नान्तकारिणीकाली वृषभध्वजकालिका ।
कुक्कुटध्वजकालि च गरुडध्वजकालिका ॥१४२॥
मयूरवाहिनी कालि हंसध्वजनिवासिनी ।
कालरात्रिर्महाकालि चण्डचण्डेश्वरी स्मृती ॥१४३॥
कुलालिका कुलेशी च महानन्दनचारिणी ।
विंध्यवासिन्यपर्णेशी वीरालीपरिपूजिता ॥१४४॥

वीरेश्वरीकालिका च महाकृतान्तकालिका ।
रक्तरक्तेश्वरीकाली कालाग्निकालिका परा ॥१४५॥
फेत्कारिणी क्रोष्टुकी च रामा ईश्वरवल्लभा ।
अपर्णा त्रिपुरा तारा उग्रतारा कलंकिनी ॥१४६॥
वार्तालिका च वाराही वराहवदनो घना ।
अन्धिनी रुन्धिनी काली स्तंभिनी मोहिनीकरा ॥१४७॥
जम्भिनी जयदा जैत्री जगद्वन्द्या जगत्प्रसू ।
डाकिनी राकिनी काली लाकिनि शाकिनि गणा ॥१४८॥
काकिनी हाकिनि शीला याकिनी धातुवासिनी ।
अणिमा लघिमा शान्तिर्महिमा महदाश्रिता ॥१४९॥
ईशत्वकाली वासित्वा शाबरी सारगामिनी ।
कंकालतोरणवती महापितृवनेश्वरी ॥१५०॥
श्मशानवासिनी रौद्री घोराघोरातनुः श्रिता ।
सृष्टिस्थित्यन्तसंहारकारिणि विश्वधारिणी ॥१५१॥
त्रिमार्गागतिसञ्चारी ब्रह्मरन्ध्रनिवासिनी ।
षट्चक्रभेदिनी गुह्या भक्तमानसवासिनी ॥१५२॥
जनी जनित्री जननी जयमातृगणेश्वरी ।
ब्रह्मविद्या ब्रह्मवेद्या ब्रह्माण्डकोटिव्यापिनी ॥१५३॥
वामाचाररता वामा नग्ना दक्षिणकालिका ।
झंकारिणी रामवशी टंकारी विबुधेश्वरी ॥१५४॥
मुक्तकेशी विरुपाक्षी जगदानन्ददायिनी ।
झंकेश्वरी च झंकारा चक्रमार्गानुसारिणी ॥१५५॥
सहस्रकोटिसूर्यानान्तेजसा तेजनाशिनी ।
सहस्रकोटिसोमानाममृतश्रावणी प्रदा ॥१५६॥
गुह्याख्या योगिनी पूज्या सदामृतामृतप्रदा ।

सप्तविंशतिमुण्डस्था त्रिमुखा नवलोचना ॥१५७॥
सरस्वती च गायत्री सावित्री मङ्गलेश्वरी ।
वाग्वादिनी क्लेशहरी कर्मबन्धविमोचिनी ॥१५८॥
वर्णेश्वरी वर्णमयी वर्णमाला विराजिता ।
त्रिलोकजननी गोप्त्री मान्या गगनगामिनी ॥१५९॥
पंचभूतप्रिया नित्यापंचपिण्डैः प्रपूजिता ।
शब्दरूपिणीआकाशे प्रकाशेतेजरूपिणी ॥१६०॥
गन्धरूपिणी भूम्यान्तु पवनेस्पर्शरूपिणी ।
रसरूपिणीतोयेषु पञ्चभूतस्वरूपिणी ॥१६१॥
सुरभीरूपिणीपुष्पे दुग्धेसर्पिःस्वरूपिणी ।
परब्रह्मात्मिका काली जयद्रथवरप्रदा ॥१६२॥
दुर्वासासिद्धिदात्री च राक्षसी क्षोभिणी तथा ।
जयवागेश्वरी ह्रीँश्रीँ विद्या च त्रिपुराश्रिता ॥१६३॥
त्रिपुरा भैरवी ज्ञाना कालिका लयभैरवी ।
चैतन्यभैरवी देवी चण्डभैरवी सिंहिका ॥१६४॥
संपत्प्रदाभैरवी च मार्गभैरवी मार्गिणी ।
जयश्रीभैरवी काली मनोन्मादनभैरवी ॥१६५॥
हरसिद्धिः प्रपन्नार्तिहारिणी दानवान्तकी ।
पूर्णेश्वरी पूर्णमना पूर्वदेवप्रपूजिता ॥१६६॥
पूर्णपात्ररता नित्या सदाचारविचारिणी ।
पूर्णवांछितदात्रि च सद्सद्वांछिताग्रणीः ॥१६७॥
कालिका लयकाली च सर्वज्ञानप्रदाऽनघा ।
योगेश्वरी महाचण्ड महोद्दाम महोग्रणी ॥१६८॥
सृष्टिस्थितिश्च संहार अनाख्या भासाकालिकाः ।
गुह्यकाली विश्वमाता निर्वाणेशी परेश्वरी ॥१६९॥

इतिश्रीपरमेशान्यां स्तोत्रं नामसहस्रकम् ।
स्मृत्वा मंत्रोपनिषदं महापातकनाशनम् ॥१७०॥
महामंत्रोपदिष्टाही विश्वेशी विश्वरूपिणी ।
दोषानां राशयो घोरा मेरुमन्दरसन्निभा ॥१७१॥
प्रदहन्ते तेन क्षिप्रमिन्धनानि यथाग्निना ।
स्नानेन कोटि तीर्थाणां मंत्रकोटिजपादिभिः ॥१७२॥
धेनूनां कोटिदानेन विप्राणां कोटिभोजनैः ।
कोटिधा कोटिहोमेन तपसाजन्मकोटिषु ॥१७३॥
महीङ्कांचनसंपूर्णं सप्तद्वीपाद्रिसागराम् ।
दत्वा चराचरान्सर्वान् यत्फलं लभते ध्रुवम् ॥१७४॥
तत्फलं लभते साङ्गं स्तवानाङ्कीर्तनाध्रुवम् ।
अष्टम्यां वा नवम्यां वा भूतायां वारवेर्दिने ॥१७५॥
कुजेवाथ शनौवाथ पठितव्यं गुरौपि वा ।
एकाग्रं चिन्तयेद्देवीं धूपालिपरिमोदिते ॥१७६॥
पुष्पप्रकारसंकीर्णे बलिदानपुरस्कृते ।
साद्रेणपूजयेद्देवीं शुष्कास्येन न चिन्तयेत् ॥१७८॥
जन्मकोटिसहस्रेण यत्पापं समुपार्जितम् ।
अनेनवृतमात्रेण वांछितार्थं लभेध्रुवम् ॥१७९॥
आयुरारोग्यमाप्नोति धर्मकामार्थसंततिम् ।
इष्टान्कामानवाप्नोति त्रिरावृत्यान संशय ॥१८०॥
चंद्रसूर्योपरागे वा नवम्यां शारदोत्सवे ।
सर्वसिद्धिं लभेल्लुपं पुण्यात् वासप्तं भूकुलम् ॥१८१॥
पीठोपपीठसंदोहतीर्थक्षेत्राश्रमादिकम् ।
अशेषा देवता सिद्धा गुहाःपर्वतकानना ॥१८२॥
तंत्रागमादिशास्त्राणि वेदाः पौराण साधका ।

सर्वे तत्रैव तिष्ठन्ति यत्रेदं स्तवनायकम् ॥१८३॥
पठेन्नाम सहस्रन्तु सर्वदोषनिवर्हणम् ।
सिंहिकाप्रेतकुष्माण्डापिशाचाभूतपूतना ॥१८४॥
क्रूरग्रहाश्च डाकिन्योः ये चान्ये दुष्टचेतसः ।
डाकिनी राक्षसा घोरा ये चान्ये पीडका जनाः ॥१८५॥
हिंसकाश्च विनश्यन्ति इत्याज्ञां शाङ्करी ध्रुवम् ।
सम्भवन्ति न ते तत्र यत्रेदं तिष्ठते गृहे ॥१८६॥
संग्रामे जयदं सद्यते तेषां शत्रुविनश्यति ।
आयुष्मान् धनवान् भूत्वा जायते सुभगः सुखी ॥१८७॥
नद्यामन्तर्जलेमग्ना भूतायां भौमवासरे ।
सप्तावर्त्तेन देवेशि तुष्टाभवति निश्चितम् ॥१८८॥
कन्यां संपूज्योपचारैस्तस्याग्रे पाठयेत् पठेत् ।
तुष्टा भवति सा देवी सर्वं भद्रमवाप्नुयात् ॥१८९॥
आपदुद्धारणन्नामघोरे कलियुगे महत् ।
स्तोतव्या च नमस्कार्या सर्वदेवमयी च सा ॥१९०॥
सैव पालयते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ।
सैव संहरते काले सैव विश्व महीश्वरी ॥१९१॥
तुष्टा भवति सानेन किमलभ्य महीतले ।
राज्यं सौख्यं निराबाधा प्रेतमोक्षलभेध्रुवम् ॥१९२॥
यस्या ब्रह्माण्डमखिलं क्रीडार्थं कन्दुकायते ।
तां कालग्रास निरतां कालसंकर्षिणीं नमः ॥१९३॥
भक्षयन्त्या जगत्सर्वमतृप्ता कामरूपिणि ।
या शान्ताकारिणीं कालीं कालसंकर्षिणीं नमः ॥१९४॥
परब्रह्म स्वरूपा सा परतत्वानुविन्धिनी ।
जगद्ग्रासरतां नित्यां कालसंकर्षिणीं नमः ॥१९५॥

या समस्ताज्वलद्रूपा नानाकारामहोज्ज्वला ।
सा कालग्रासनिरतां कालसंकर्षिणीं नमः ॥१९६॥
लेलिह्यमानामत्यर्थभीषणा या सुभैरवी ।
महानृसिंहमारूढां कालसंकर्षिणीं नमः ॥१९७॥
अलात चक्रवद्विश्वं क्रीडार्थं भ्राम्यते यया ।
तां कालग्रासनिरतां कालसंकर्षिणीं नमः ॥१९८॥
ब्रह्माण्डकोटि लक्षाणि भस्मसात् कुरुते यया ।
तां कालग्रासनिरतां कालकालीं नमाम्यहम् ॥१९९॥
नौमि कालीं महद्रूपां प्रधानाबलिभक्षिणीम् ।
क्रीडार्थं या करो चित्रां ब्रह्माण्डार्म्बुदमालिनीम् ॥२००॥
अंजनाद्री निभां कालीं कोटिसूर्यसमप्रभाम् ।
त्रैलोक्यरक्षणरतां मंगलां प्रणमाम्यहं ॥२०१॥
गुह्यकालीं मंगलाञ्च सिद्धिकालीं जयेश्वरीम् ।
चर्चिकां त्रिपुरेशीञ्च कालिं च भुवनेश्वरीम् ॥२०२॥
श्रीमंगलां महाकालीं निर्वाणपददायिनीम् ।
मोक्षदां राज्यदां नित्यां दशवक्त्रां परां भजेत् ॥२०३॥

॥ श्रीहाहारावमहातंत्रे षत्रिंशत्साहस्रे महाथर्वणसंहितायां शिवपार्वतीसामरस्ये श्रीगुह्यकालीदेव्याःसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

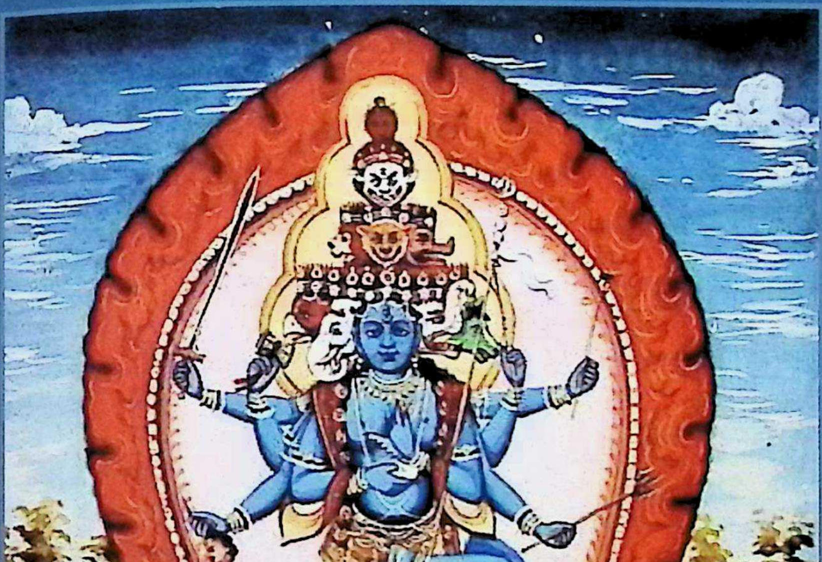

११

॥ श्रीगुह्येश्वरीसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

ॐ नमः श्रीगुरवे ॥

अगस्त्य उवाच ॥

कार्त्तिकेय त्वया प्रोक्ता गुह्येशी दक्षिणे तटे ।
वाग्वत्याः सरितः श्रीमन्नेपाले पीठसत्तमे ॥१॥
साम्प्रतं श्रोतुमिच्छामि तस्या नामसहस्रकम् ।
ब्रूहि देव महाभाग लोकानुग्रहकांक्षया ॥२॥

स्कन्द उवाच ॥

पुरा श्रुतं मया शम्भोः सकाशाद्द्विजसत्तम ।
तत्तेऽहं सम्प्रवक्ष्यामि सर्वपापहरं परम् ॥३॥
गुह्येश्वर्या महाभाग अष्टोत्तरसहस्रकम् ।
नाम्नां श्रवणमात्रेण गुह्येशी सुप्रसीदति ॥४॥

॥ विनियोगः ॥

ॐ अस्यश्रीगुह्येश्वरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य महादेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दो । गुह्येशी देवता । ॐ बीजं । नमः कीलकं । गुहावासिनीशक्तिश्चतुर्व्वर्गसाधने विनियोगः ॥

॥मूलस्तोत्रम् ॥

अचिन्त्याव्यक्तरूपा च अर्यमा अमलेश्वरी ।

अमृतार्णवमध्यस्था अर्कमण्डलवासिनी ॥५॥
अव्यक्तलक्षणाक्षोभा अजरा अमरार्चिता ।
अणिमादिगुणाधारा अम्बराम्बरधारिणी ॥६॥
अर्धमात्रात्मिका अर्द्धा अरिषड्वर्गनाशिनी ।
अरविन्दनिभानाथा अरविन्दनिभेक्षणा ॥७॥
अञ्जनाद्रिप्रतीकाशा अमराम्बरभूषिता ।
अदितिश्चाजपाऽविद्याध्वंसिनी चाऽन्तरात्मिका ॥८॥
अनन्ता अम्बुजाक्षी च अमावास्या अमातिथिः ।
आद्यादेवी आदिशक्तिराकृतिश्चायतानना ॥९॥
आदित्यमण्डलगता आदित्यगणसेविता ।
आचार्यरूपा आचारा आम्रवृक्षनिवासिनी ॥१०॥
आर्द्रा आर्द्रप्रतीकाशा आकाशान्तरचारिणी ।
आद्यक्षरसमायुक्ता आरम्भारम्भरूपिणी ॥११॥
आग्नेयी आसनस्था च आनन्दानन्दविग्रहा ।
आद्यानन्दा आम्रगुणा आशा आनन्दविग्रहा ॥१२॥
इडापिङ्गलरूपा च इन्द्रनीलनिभा इडा ।
इन्दुरूपा इन्दुधरा इन्द्राणी इन्द्रपूजिता ॥१३॥
इन्द्राक्षी इन्द्रमाता च इन्दुमण्डलरूपिणी ।
इन्द्रकोदण्डसंयुक्ता इषुसन्धानकारिणी ॥१४॥
ईश्वरी ईश्वरा ईशा ईशानत्रयधारिणी ।
ईडा ईडामयी ईला ईलासन्नतरुप्रिया ॥१५॥
उडुप्रभा उडुमती उडुमण्डलवासिनी ।
उमा उत्सवसम्पन्ना उषा उडुनिभानना ॥१६॥
उदकोदकरूपा च उदयाचलसंस्थिता ।
उद्मुखी उदासीना उदीची उर्वशी उदा ॥१७॥

ऊरस्वना ऊरुश्रोणी ऊरुचारुविलोचना ।
ऊद्धर्वास्या ऊर्ध्वकेशी च ऊर्मिलोलविलोचना ॥१८॥
ऊर्ध्वाम्नायस्थिता ऊर्ध्वा ऋद्धिदा ऋद्धिरूपिणी ।
ऋजुरूपा ऋजुधर्मा ऋजुमार्गव्यवस्थिता ॥१९॥
ऋग्वेदरूपा ऋणहा ऋजुधर्मप्रवर्तिनी ।
ऋतुमती ऋतुमार्गस्था ऋकाराक्षररूपिणी ॥२०॥
लूनारिर्वरसम्भूता लूतादिविषभञ्जिनी ।
लूनार्त्तिहारिणी लूता ॐकाराक्षररूपिणी ॥२१॥
एका एकाक्षरीमूत्तिरेकमानैकनिष्ठिका ।
एकान्तवासिनी एणा एणशावकलोचना ॥२२॥
ऐन्द्री ऐरावतीरूढा ऐहिकामुष्मिकप्रदा ।
ॐकारी ह्योषधी ह्योषा ओतप्रोतविधायिनी ॥२३॥
और्वी औषधसम्पन्ना औपासनफलप्रदा ।
अन्तमध्यस्थिता देवी अन्धकासुरघातिनी ॥२४॥
कात्यायिनी कालरात्रिः कामाक्षी कामसुन्दरी ।
कमला कासिनी कान्ता कामदा कालकर्णिका ॥२५॥
करिकुम्भस्तनी कन्या करवीरसुवासिनी ।
कल्याणी कुण्डलवती कुरुक्षेत्रनिवासिनी ॥२६॥
अरविन्ददलाकारा कुण्डली कुमुदालया ।
कालजिह्वा करालास्या कालिका कालरूपिणी ॥२७॥
कमनीयगुणा कान्तिः कराधारा कुमुद्वती ।
कौशिकी कमलाधारा कामतारप्रभञ्जिनी ॥२८॥
कौमारी करुणापाङ्गी कुन्ददला करिप्रिया ।
केशिनी केशवनुता कदम्बकुसुमप्रिया ॥२९॥
कालिन्दी कालिकाकाञ्ची कलशोद्भवसंस्तुता ।

कामामाता ऋतुमती कामरूपा क्रियावती ॥३०॥
कुमारी कुन्दनिलया किरातकीलवाहना ।
कैकेयी कोकिलालापा केतकीकुसुमप्रिया ॥३१॥
कमण्डलुधरा क्रूरा कर्मनिर्मूलकारिणी ।
कलहंसगतिः कुब्जा कृतकौतुकमङ्गला ॥३२॥
कस्तूरीतिलका कम्रा करीन्द्रगमना कुहुः ।
कर्पूरलेपना कृष्णा कपिला कुहराश्रया ॥३३॥
कूटस्था कुधरा कम्रा कुक्षिस्थाखिलविष्टपा ।
खड्गङ्गखेटधरा खर्वी खेचरी खगवाहना ॥३४॥
खट्वाङ्गधारिणी ख्याता खगराजोपरिस्थिता ।
खलघ्नी खण्डितजरा खडाख्यातिप्रदायिनी ॥३५॥
खण्डेन्दुतिलका गङ्गा गणेशगुहपूजिता ।
गायत्री गोमती गीता गान्धारी गानलोलुपा ॥३६॥
गौतमी गामिनी गन्धा गन्धर्वाप्सरसेविता ।
गोविन्दचरणक्रान्ता गुणत्रयविभाविता ॥३७॥
गन्धर्वी ग्लौहरी गात्रा गिरीशा गहनागमा ।
गुहावासा गुणवती गुरुपापप्रणाशिनी ॥३८॥
गुर्वी गुणवती गुह्या गोपिका गुणदायिनी ।
गिरिजा गुहमातङ्गी गरुडध्वजवल्लभा ॥३९॥
गर्वापहारिणी गोदा गोकुलस्था गदाधरा ।
गोकर्णनिलया गुह्या गुह्यमण्डलवर्त्तिनी ॥४०॥
घर्मदा घनदा घण्टा घोरदानवमर्दिनी ।
घृणिमन्त्रचया घोषा घनसम्पत्प्रदायिनी ॥४१॥
घण्टारवप्रिया घोणी घृणिसन्तुष्टकारिणी ।
घातारिमण्डला घूर्णा घृताची घनवेगिनी ॥४२॥

ज्ञानाचारवती चर्चा चर्विणी चारुहासिनी ।
चतुरा चन्द्रिका चित्रा चित्रमालाविभूषिता ॥४३॥
चतुर्भुजा चारुदन्ता चातुरी चरितप्रदा ।
चूरिता चित्रविश्रान्ता चन्द्राभा चूर्णकुन्तला ॥४४॥
चन्द्रहासा चारुगात्री चकोरी चन्द्रहासिनी ।
चन्द्रिका चित्रधात्री च चोरा चौरा च चण्डिका ॥४५॥
चञ्चद्वाग्वादिनी चन्द्रचूडा चन्द्रविलासिनी ।
चारुचन्दनलिप्ताङ्गी चञ्चच्चामरवीजिता ॥४६॥
चारुमध्या चारुगतिश्चन्द्रिका चन्द्ररूपिणी ।
चारुभोगप्रियाचार्या चरिता चक्रधारिणी ॥४७॥
चन्द्रमण्डलमध्यस्था चन्द्रमण्डलदर्पणा ।
चक्रवाकस्तनी चेष्टा चित्रा चारुविलासिनी ॥४८॥
चित्स्वरूपा चन्द्रवती चन्द्रभा चन्दनप्रिया ।
चोदयित्री चिरप्रज्ञा चातकाधानहेतुकी ॥४९॥
छत्रप्रीता च्छत्रधरा च्छाया च्छेदपरिच्छदा ।
छायादेवी च्छिद्रनखी च्छिन्नेद्रिया विसर्पिणी ॥५०॥
अन्दोनुष्टुप्प्रतिष्ठान्ता छिन्द्रोपद्रवच्छेदिनी ।
छन्दोच्छत्रेश्वरीच्छिन्ना च्छुरिकाच्छेदनक्रिया ॥५१॥
जननी जन्मरहिता जातवेदा जगन्मयी ।
जाह्नवी जटिला जैत्री जरामरणवर्जिता ॥५२॥
जम्बूद्वीपवती ज्योत्स्ना जयन्ती जयसाधिनी ।
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जितामित्रा जगत्प्रिया ॥५३॥
जातरूपमयी जिह्वा जानकी जगती जरा ।
जनित्री जह्नुतनया जगत्त्रयहितैषिणी ॥५४॥
ज्वालावती जपवती ज्वालघ्नी जितविष्टपा ।

जिह्वाक्रान्तमहाज्वाला जाग्रती ज्वलदैवता ॥५५॥
ज्वलन्ती ज्वलदा ज्येष्ठा ज्याघोषास्फोटदिङ्मुखा ।
जम्भनी जृम्भिणी जृम्भा ज्वलन्मारीककुञ्जला ॥५६॥
झिल्लिकागणनिर्घोषा झञ्झामारुतवेगिनी ।
झल्लरीवाद्यकुशला झषरूपा झषध्वजा ॥५७॥
टङ्कबाणसमायुक्ता टङ्किणी टङ्कवेगिनी ।
टङ्कीकृतगुणाशेषा टङ्कनीयमहोदरा ॥५८॥
टङ्काकारिणी देवी टट्टशब्दनिनादिनी ।
डाकिनी डामरी डिम्भा डुण्डुभानैकवर्जिता ॥५९॥
डामरीतन्त्रमार्गस्था डमड्डमरुवादिनी ।
डिण्डीरविहसा डिम्भा डोलक्रीडापरायणा ॥६०॥
ढुण्ढिविघ्नेशजननी ढक्काहस्ता ढिरिप्रिया ।
त्रिप्रिया ज्ञानदाशेषा तरुणी तरुणीत्रयी ॥६१॥
त्रिगुणा त्रिपदा तन्त्री तुलसी तुरगासना ।
त्रिविक्रमपदाक्रान्ता तुरीयपदगामिनी ॥६२॥
तरुणादित्यसङ्काशा तामसी तुहिनाश्रया ।
त्रिकालज्ञानसम्पन्ना त्रिवली त्रिविलोचना ॥६३॥
त्रिशक्तिस्त्रिपुरा तुङ्गा तुरङ्गवदना तटी ।
तिमिङ्गिलगिला तीव्रा त्रिस्रोतास्तामसार्दिनी ॥६४॥
तन्त्रा तन्त्रविशेषज्ञा तनुमध्या त्रिपिष्टपा ।
त्रिसन्ध्या त्रिस्तनी तोषा तास्था तालप्रयातिनी ॥६५॥
ताटङ्किनी तुषाराभा तुहिनाचलवासिनी ।
तन्तुजालसमायुक्ता तारहारावलिप्रिया ॥६६॥
तिलकर्मप्रिया तीर्था तमालकुसुमाकृतिः ।
तारका त्रिपुरा तन्वी त्रिशङ्कुपरिवारिता ॥६७॥

तत्त्वोदरी तिलाभासा ताटङ्कोपरिशोभिता ।
त्रिजटा तैत्तिरी तृष्णा त्रिविधा तरुणाकृतिः ॥६८॥
तप्तकाञ्चनसंकाशा तप्तकाञ्चनभूषणा ।
त्र्यम्बका च त्रिवर्णा च त्रिकालज्ञानदायिनी ॥६९॥
तर्पणा तृप्तिदा तृप्ता तामसी तुम्बुरुस्तुता ।
तार्क्ष्यस्था त्रिगुणाकारा त्रितुङ्गी तनुवल्लरी ॥७०॥
थकारधारिणी थान्ता दोहिनी दीनवत्सला ।
दानवान्तकरी दुर्गा दुर्गासुरनिबर्हणी ॥७१॥
देवकी देवमाता च द्रौपदी दुन्दुभिस्वना ।
देवयानी दुरावासा दरिद्रच्छेदिनी दिवा ॥७२॥
दामोदरप्रिया दीप्ता दण्डिनी देवपूजिता ।
दण्डकारण्यनिलया देवतादित्यरूपिणी ॥७३॥
देववन्द्या दिविषदा द्वेषिणी दानवाकृतिः ।
दीनानाथस्तुता दीक्षा दिग्वासा देवमोहिनी ॥७४॥
धात्री धनुर्धरा धेनुर्धरणी धर्मधारिणी ।
धुरन्धरधराधारा धनदा धान्यदोहिनी ॥७५॥
धर्मशीला धनाध्यक्षा धनुर्वेदविशारदा ।
धृतिधन्या धृतिपदा धर्मराजप्रिया ध्रुवा ॥७६॥
धूमावती धूमकेशी धर्मशास्त्रप्रवर्त्तिनी ।
नन्दा नन्दप्रिया नुन्ना नुन्नता नन्दनात्मिका ॥७७॥
नर्मदा नलिनी नीला नीलकण्ठसमाश्रया ।
नारायणप्रिया नित्या निर्मला निर्गुणा निधिः ॥७८॥
निराधारा निरुपमा नित्यशुद्धा निरञ्जना ।
नादबिन्दुकलातीता नादबिन्दुकलात्मिका ॥७९॥
नारसिंही नगधरा नृवरा नागभूषणा ।

नरकक्लेशशमनी नारायणपदोद्भवा ॥८०॥
नीरवन्ध्या निराकारा नारदप्रियकारिणी ।
नानाज्योतिः पदाख्याता निराधिर्निर्मलात्मिका ॥८१॥
नवसूत्रधरा नीतिर्निरुपद्रवकारिणी ।
नदजा नवरत्नाढ्या नैमिषारण्यवासिनी ॥८२॥
नवनीतप्रिया नारी नीलजीमूतनिस्वना ।
निमेषाद्या नदीरूपा नीरग्रीवा नरेश्वरी ॥८३॥
नानावरी निशुम्भघ्नी नागलोकनिवासिनी ।
नवजाम्बूनदप्रख्या नागलोकाधिदेवता ॥८४॥
नूपुरक्रान्तचरणा नरचित्तप्रमोदिनी ।
निमग्नदक्षनमिता निर्घातसमनिस्वना ॥८५॥
नन्दनोद्यानिलया निर्व्यूहोपरिचारिणी ।
पार्वती परमामोदा पञ्चब्रह्मात्मिका परा ॥८६॥
पञ्चकोशविनिर्मुक्ता पञ्चपातकनाशिनी ।
परचित्तविधानज्ञा पञ्चिका पञ्चरूपिणी ॥८७॥
पूर्णिमा परमा प्रीतिः परतेजोऽपकर्षिणी ।
पुराणी पौरुषी पुण्या पुण्डरीक निभेक्षणा ॥८७॥
पातालतलनिर्मग्ना प्रीताप्रीतविवर्धिनी ।
पावनी पदनीहारा पेशला पाकशासना ॥८९॥
प्रजापतिपरिश्रान्ता पर्वतस्तनमण्डला ।
पद्मप्रिया पद्मसंस्था पद्माक्षी पद्मसम्भवा ॥९०॥
पद्मपत्रा पद्मपदा पद्मिनी प्रियभाषिणी ।
पशुपाशविनिर्मुक्ता पुरन्ध्री पुरशासनी ॥९१॥
पतिव्रता पवित्राङ्गी पुष्पवासपरायणा ।
पुष्करा पुरुषा पर्वा पारिजातसुमप्रिया ॥९२॥

प्रज्ञावती सुता पौत्री पत्रपूजा पयस्विनी ।
पट्टिपाशधरा पंक्तिः पितृलोकप्रदायिनी ॥९३॥
पुराणी पुण्यशीला च प्रणतार्त्तिविनाशिनी ।
प्रद्युम्नजननी प्रौढा पितामहपरिग्रहा ॥९४॥
पुण्डरीकपुरावासा पुण्डरीकनिभानना ।
पृथुजङ्घा पृथुभुजा पृथुपादा पृथूदरी ॥९५॥
प्रवालशान्ता पिङ्गाक्षी पीतवासा पिपीलिका ।
पर्जन्यभीमरूपा च पर्जन्याधिकशीतला ॥९६॥
पुराणवेदगम्या च पुराणवेदवन्दिता ।
पद्मरागप्रतीकाशा पद्मरागस्वरूपिणी ॥९७॥
पद्माक्षी पद्मपत्राक्षी पद्ममालाविभूषिता ।
पाञ्चाली पञ्चनी पञ्चा पञ्चाननहृदयमोहिनी ॥९८॥
पञ्चकूटस्थिता प्राची पञ्चाननविवाहिनी ।
पाशिनी पाशहस्ता च पशुपाशविनाशिनी ॥९९॥
पशुपाशसमुच्छेदकारिणी पशुघातिनी ।
परश्वाभा पर्शुहस्ता परलोकभयापहा ॥१००॥
फलिनी फलहस्ता च फलाफलफलप्रदा ।
फणिकङ्कणहस्ता च फणिनूपुरधारिणी ॥१०१॥
फुत्कारकारिणी फेरुः फुलिङ्गा च फुलिङ्गिनी ।
फलदा फलदात्री च फणिहस्ता फणामणिः ॥१०२॥
श्वेश्वरी च विश्वासा विश्वपापविनाशिनी ।
विशालाक्षी विशालाक्षा विशालमुक्तिधारिणी ॥१०३॥
बिम्बाधरा बिम्बरूपा विश्वा विद्या विनोदिनी ।
वेदगम्या वेदवन्द्या वेदवेदाङ्गपारगा ॥१०४॥
वेदाङ्गी वेदरूपा च वेदमन्त्रस्वरूपिणी ।

वाशिनी वासिनी वश्या वसुदा वसुदायिनी ॥१०५॥
वसुदा वसुराध्या च वसुदानपरायणा ।
वासवी वासवाराध्या वामदेवविलासिनी ॥१०६॥
बहुदा बहुरूपा च बहुबाहुविलासिनी ।
बहुनेत्रा बहुलास्या बहुहस्ता बहुस्तना ॥१०७॥
बह्वा बह्वानना बाला बहुविघ्नविनाशिनी ।
वल्लवी वल्लवप्रीतिर्वल्लिनी बहुरूपिणी ॥१०८॥
बलाराध्या बलारातिर्बलवैरिनिषेविता ।
वाद्यप्रिया वाद्यलता वीणावादनतत्परा ॥१०९॥
वामदेवप्रिया वामी वासुदेवाभिवन्दिता ।
वारणा वारणाधारा वरवाटिविहारिणी ॥११०॥
वारण्या वरदा वन्या वनमालाविभूषणा ।
बलाका बालिनी वीरा वैद्यशास्त्रविशारदा ॥१११॥
वाराही वारणी वीरा वाक्पतिश्च वरप्रदा ।
वसुधा वसुपात्री च वसुवासुकिरूपिणी ॥११२॥
वाग्देवी वक्ररूपा च वेदवादेविनोदिनी ।
वन्दनीया वरारोहा वराङ्गी वरलोचना ॥११३॥
वरास्या वरहस्ता च वरदा वरशालिनी ।
वृन्दा वृन्दारकाराध्या वृन्दावनविहारिणी ॥११४॥
वरुणा वरुणाराध्या वरुणानन्ददायिनी ।
ब्रह्मरूपा ब्रह्ममूर्तिर्ब्रह्माणी ब्रह्मसंस्तुता ॥११५॥
ब्रह्मी ब्रह्ममयी ब्रह्मा ब्रह्मानन्दस्वरूपिणी ।
वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुचित्तप्रियङ्करी ॥११६॥
विद्या विद्याधराराध्या विद्यामन्त्रस्वरूपिणी ।
विशदा विशदाचारा विशदानन्ददायिनी ॥११७॥

विपुला विपुलश्रोणी विपुलस्तनमण्डला ।
विमला विमलाङ्गी च विमलाचारसंस्थिता ॥११८॥
विशिष्टयगम्यसुरतिर्विशिष्ठा वसुवेष्टिता ।
विकाशिनी विकाशाद्या विकचाम्बुजलोचना ॥११९॥
वशिष्ठी वारुणी विश्वा वैश्वानरप्रिया सदा ।
वाराणसीपराराध्या विश्वाविश्वस्वरूपिणी ॥१२०॥
भूतिर्भगवती भव्या भवानी भववल्लभा ।
भूतधात्री भूतमाता भूतिदा भूतिदायिनी ॥१२१॥
भवप्रिया भवानन्दा भवभीतिविनाशिनी ।
भीमा भीमस्वरूपा च भीमभूतगणावृता ॥१२२॥
भूषा भूषणरूपा च भुवनाभयकारिणी ।
भुवना भुवनाराध्या भाविनी भुवनेश्वरी ॥१२३॥
भेरुण्डा भैरवी भीमा भार्गवी भार्गवस्थिता ।
भयदा भयहन्त्री च भवनाथा भयङ्करी ॥१२४॥
भीतिर्भी भयहन्त्री च भूताचारमयास्थिता ।
भाग्या भगवती भागी भाग्यदा भाग्यमालिनी ॥१२५॥
भगिनी भागिनी भागा भागानन्दा भगोदरी ।
भगदा भगरूपा च भवदात्री भवार्दिता ॥१२६॥
भूतिर्भूमिर्भ्रमी भ्राभूर्भुकुटीकुटिलेक्षणा ।
भ्रान्तिहा भ्रान्तिदा भ्रान्तिर्भाविनी भृगुवन्दिता ॥१२७॥
भरणा भवनाधारा भारवी भारधारिणी ।
भवापहा भवाधारा भवभारविनाशिनी ॥१२८॥
भुजभूर्भुजभाकारा भाविनी भवभाविनी ।
भगलक्ष्मीर्भगाधारा भगसारा भगाङ्गणा ॥१२९॥
भगमूर्तिर्भगप्रीतिर्भगभागवती भया ।

भुजङ्गहारकण्ठी च भुजङ्गाङ्गदशोभिता ॥१३०॥
भुजङ्गपाशहस्ता च भुजङ्गभोगमण्डिता ।
भोगदा भागदात्री च भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥१३१॥
भुजगी भुजगीयुक्ता भगभाग्यपरा भया ।
भक्तानुकम्पिनी भक्ता भक्तानुरक्तमानसा ॥१३२॥
भक्तिगम्या भक्तिसाध्या भक्तानामार्त्तिनशिनी ।
महामाया महाविद्या महायोगेश्वरेश्वरी ॥१३३॥
मानदा मानिनी मान्या माननीया महेश्वरी ।
महेश्वरी महावक्त्रा महापातकनाशिनी ॥१३४॥
महामान्या महामन्त्रा महाकिल्विषनाशिनी ।
महामान्या महादेवी महामन्त्रस्वरूपिणी ॥१३५॥
महारूपा महाकान्तिर्महालक्ष्मीर्महामतिः ।
महातुष्टिर्महापुष्टिर्महावृत्तिर्महाधृतिः ॥१३६॥
महाकीर्तिर्महापूर्तिर्महामूर्त्तिर्महामतिः ।
मया मायावती माता महामायास्वरूपिणी ॥१३७॥
मोहिनी मोदिनी मत्ता मधुपानपरायणा ।
मातङ्गी मत्तमातङ्गी मातङ्गकुलमण्डिता ॥१३८॥
मदालसा मदामत्ता मदघूर्णितलोचना ।
मधुरा मधुराङ्गी च मधुरोष्ठी मधुप्रिया ॥१३९॥
मधुरा मधुरावाचा मधुपानविहारिणी ।
मन्दोदरी च मन्दा च मन्दैकगतिलालसा ॥१४०॥
मन्दारदामभूषाङ्गी मन्दारवनचारिणी ।
मदना मदनाधारा मदनालसलोचना ॥१४१॥
मदनी मादिनी माना मदनान्तककामिनी ।
मञ्जुस्वरा मञ्जुवक्त्रा मञ्जुमञ्जीरधारिणी ॥१४२॥

माधवी माधवाधारा माधवानन्ददायिनी ।
मानदा मानशीला च मानमान्या मनस्विनी ॥१४३॥
मित्रदा मित्ररूपा च मित्रा मुक्तिस्वरूपिणी ।
मधुकरी मधुप्रीतिर्मधुमत्यमलस्वना ॥१४४॥
मधुहा मधुहन्त्री च मधुसूदनवन्दिनी ।
माहेन्द्री मोहनीया च माहेन्द्रवन्दिता मही ॥१४५॥
महिषघ्नी महामान्या महिषासुरमर्दिनी ।
मर्दिनी मालिनी मान्या मेनका मूर्त्तिरूपिणी ॥१४६॥
मृणाली कोमलाङ्गी च मृणालभुजवल्लरी ।
मृणालहारमाला च मरालमदगामिनी ॥१४७॥
माहिषी महिषारूढा मृत्युभीतिक्षयङ्करी ।
याज्ञसेनी यज्ञसेनी यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका ॥१४८॥
यज्ञमाता यज्ञभोक्त्री यज्ञेशी यज्ञरक्षिका ।
यामिनी यमुना याभ्या यया याया ययुर्यवा ॥१४९॥
यशस्विनी यशःपूर्णा यशोदा यशसाऽन्विता ।
यमुना यमदूती च यमरूपा यमोयमा ॥१५०॥
यमोद्धारा यमारातिर्यमामातार्यभाविता ।
यमीमया च यानाङ्गी यातायातस्वरूपिणी ॥१५१॥
यविनी यवरूपा च यवदा यवधारिणी ।
यवभोक्त्री यवावाणी यममूर्तिस्वरूपिणी ॥१५२॥
योगाद्या योगसंयुक्ता योगदा योगशालिनी ।
योनिरूपा योनियुक्ता योजनीया च योजनी ॥१५३॥
रतिरूपा रतिरामा रजनी राजनी रमा ।
रमणी रामणी रामा रतिरूपा रतिप्रिया ॥१५४॥
रक्ता नीरक्तचरणा रक्तानुरक्तमानसा ।

रसा रसवती रासा रसभोक्त्री रसस्वना ॥१५५॥
रसाङ्गी रसविस्तीर्णा रसना रसनावती ।
रूपिणी रूपसंयुक्ता रूपी रूपमती रतिः ॥१५६॥
रञ्जिनी रागिणी राज्ञी राजराजनिषेविता ।
रारञ्जी राजती राजी राजीवचारुलोचना ॥१५७॥
राजीवचारुवदना राजसी राजसोत्तमा ।
रजस्था रजसाधारा रजोमूर्ती रजोन्विता ॥१५८॥
रम्या रमणसम्पन्ना रघुनाथप्रियङ्करी ।
रामाराध्या रमामूर्ती रमणीया रमोत्तमा ॥१५९॥
रक्ताम्बरा च रक्ताक्षी रक्तपद्मविलोचना ।
रक्तपद्मस्थिता रक्ता रक्तपद्मनिवासिनी ॥१६०॥
रक्तपद्मधरा रक्तपद्मासननिवासिनी ।
रेवती रोहिणी रौद्री रुद्राणी रुद्रकामिनी ॥१६१॥
रुद्राक्षमालिनी रुद्रा रुद्रमूर्त्तिस्वरूपिणी ।
राध्या राध्यतमा राध्यराधिका रामवत्सला ॥१६२॥
रुचिरा रुचिराङ्गी च रुचा रुचिकरी रुचिः ।
रुरुनेत्रा रुचिराक्षी भैरवी चर्मवासिनी ॥१६३॥
रौरवान्तकरी ह्येषा रक्षा रक्षः स्वरूपिणी ।
लम्बोदरी च लम्बोष्ठी लम्बवक्त्रा च लम्बिनी ॥१६४॥
लम्बस्तनी लम्बहस्ता लम्बोदरनिषेविता ।
लक्ष्मीर्लक्ष्मीस्वरूपा च लक्ष्मीनाथप्रियङ्करी ॥१६५॥
लक्षणा लक्षणालक्ष्या लाक्षालोहितलोचना ।
लता च लतिका बाला लवङ्गी लोहितेक्षणा ॥१६६॥
लीला लीलावती लीला लालना लसनावती ।
लाङ्गली लाङ्गलाधारा लाङ्गरीपरिवन्दिता ॥१६७॥

लिपिर्लिपिमयी लेखा लिपिमूर्तिस्वरूपिणी ।
ललना ललनीलोला लङ्केश्वरनिषेविता ॥१६८॥
ललिता ललिताङ्गी च ललिता लकशालिनी ।
ललिता ललिताक्षी च ललनागणसेविता ॥१६९॥
लालसा लालिनी लास्या लयलास्यपरायणा ।
शान्तिः शान्तिकरी शान्ता शीता शीर्षशशीशिवा ॥१७०॥
शीतार्त्तशीतलरूपा शीतलाङ्गी शुभाशुभा ।
शाङ्करी शङ्करप्रीता शिवा शिवनितम्बिनी ॥१७१॥
शिवदा शिवरूपा च शिवोपरिनिषेदुषी ।
शाम्भवी शम्भुरूपा च शाश्वती च सरस्वती ॥१७२॥
शान्ता शान्तादरी शान्ता शान्तिः शान्तिप्रदायिनी ।
शारदा शरदा ज्योत्स्ना शारदीया शतानना ॥१७३॥
सीमन्ता सविनीशा च सामगानप्रकाशिनी ।
सामस्वती शतानन्दा शतानन्दातिनन्दिता ॥१७४॥
सीता सुवदना साध्वी शीतपानपरायणा ।
शर्वरी शर्वरीरूपा शिवाराधविनोदिनी ॥१७५॥
सीमन्तिनी च सीमन्तवीर्या सीमन्तसेविता ।
शैशवी शिवरूपा च शिशुभिः परिवेष्टिता ॥१७६॥
षण्मुखी षण्मुखीमाता षडाननिषेविता ।
षडङ्गयोगगम्या च षर्वा षर्वस्वरूपिणी ॥१७७॥
सुन्दरा सुन्दरी शुक्रा सुन्दरीगणसेविता ।
सुधाधारा सुधावाणी सुधामधुररूपिणी ॥१७८॥
सुरेश्वरी सुरानन्दा सुरासुरनिषेविता ।
सुरारिदलिनी सारा सौन्दर्यशालिनी सती ॥१७९॥
शुम्भहा शुम्भदलिनी सर्वमङ्गलमङ्गला ।

सर्वाणी सर्वदात्री च सर्वा सर्वस्वदायिनी ॥१८०॥
सर्वेशी सर्वजननी सर्वान्दस्वरूपिणी ।
सर्वसौन्दर्ययुक्ता च सर्वसौन्दर्यदायिनी ॥१८१॥
सर्वदुःस्वप्नशमनी सर्वमृत्युप्रणाशिनी ।
सर्वविघ्नविनाशा च सर्वमङ्गलदायिनी ॥१८२॥
सर्वकामप्रदा सर्वासर्वानन्दप्रदायिनी ।
सर्वैश्वर्यस्वरूपा च सर्वैश्वर्यप्रदायिनी ॥१८३॥
सर्वपापप्रशमनी सर्वपातकनाशिनी ।
सर्वज्ञानस्वरूपा च सर्वज्ञा सर्वदर्शना ॥१८४॥
सर्वार्थसाधिनी सिद्धा सिद्धचारणसेविता ।
सर्वदेवस्वरूपा च सर्वदेवमयी शुभा ॥१८५॥
सर्वाङ्गसुन्दरी सुश्रीः सर्वभौभाग्यदायिनी ।
सर्वकामप्रवीणा च सर्वकामप्रसाधिनी ॥१८६॥
सर्वकल्याणयुक्ता च सर्वाभरणभूषिता ।
सर्वभृङ्गारवेशाढ्या सर्वसम्पत्तिदायिनी ॥१८७॥
समारूपा शमीमूर्तिः शमीशमप्रवर्त्तिनी ।
सागरा सागरासाध्या सागरालवन्दिता ॥१८८॥
स्वरूपा सुस्वरूपा च सुकान्तिकुचमण्डला ।
सुमतिः सुमतिप्रख्या सुमतेर्दायिनी सुधा ॥१८९॥
सकला सकलाधारा सकलानन्ददायिनी ।
सुचिन्ता सुचरित्रा च सुपुण्याजनवन्दिता ॥१९०॥
सावित्री च संवित्री च सवितृमूर्त्तिपूजिता ।
सुमना सुमनाराध्या सुमनोगणवन्दिता ॥१९१॥
शामनी शमनी शामा सामान्यजनभाविता ।
स्वर्णप्रभा स्वर्णवर्णा स्वर्णाचलनिवासिनी ॥१९२॥

स्वर्गदा स्वर्गरूपा च स्वर्गभाग्यप्रदायिनी ।
स्मरारिप्राणदात्री च स्मरारिहृदयप्रिया ॥१९३॥
स्मृतिः स्मृतिस्वरूपा च स्मृतिगम्या स्मृतिप्रिया ।
स्मृतिगम्या स्मृतिप्राणा स्मृतिश्रुतिस्वरूपिणी ॥१९४॥
स्मररूपा स्मराराातिः स्मरजीवनदायिनी ।
स्मरणोन्मादिनी स्मारा स्मरांकुरितमानसा ॥१९५॥
सरसा सारसाङ्गी च सरसीभारसारिणी ।
सारसाचारसन्तुष्टय सारङ्गचारुलोचना ॥१९६॥
संसारसारसंसारा संसारभयहारिणी ।
संसारनिस्तारकर्मी संसारपापनाशिनी ॥१९७॥
संसारमूलशक्तिश्च संसारसाररूपिणी ।
सर्वसङ्ग्रामजयिनी सर्वशक्तिस्वरूपिणी ॥१९८॥
सुमुखी च सुवक्षोजा सुचारुकुटिलेक्षणा ।
सुभ्रूरुसुवचोवीची सुनासा सुविलोचना ॥१९९॥
सर्वव्याधिप्रशमनी सर्वविघ्नविनाशिनी ।
सर्वारम्भसमारम्भा सर्वसम्भाररूपिणी ॥२००॥
सालसाङ्गी सालकास्या महार्थार्थसुसाधिनी ।
सर्वमुक्तिस्वरूपा च सर्वरक्षास्वरूपिणी ॥२०१॥
हैमा हैमवती हैमी हिमाचलनिवासिनी ।
हिमाचलसुता हीरा हेमालङ्कारधारिणी ॥२०२॥
हिता हितार्थसंयुक्ता हितकर्मी हितार्थदा ।
हरधीश्च हराराध्या हरानन्दा हरोत्सुका ॥२०३॥
हारिणी हारसम्पन्ना हरिहारविभूषणा ।
हरिणी हररूपा च हरिराजनिवासिनी ॥२०४॥
हारस्था हरियुक्तिश्च हीङ्काराक्षररूपिणी ।

क्षमा क्षमावती क्षान्तिः क्षेत्रधर्मप्रवर्धिनी ॥२०५॥
क्षोणी क्षोभस्वरूपा च क्षुधाक्षीमूर्तिधारिणी ।
क्षयिणी क्षयकर्त्री च क्षयकरी क्षयङ्करी ॥२०६॥
क्षेमङ्करी क्षेममूर्त्तिः क्षमा क्षान्तिः क्षया क्षमा ।
इतीदं परमं गुह्यं नाम्नामष्टसहस्रकम् ॥२०७॥
गुह्येश्वर्या महाभाग शिवेनोक्तं घटोद्भव ।
एतस्य पठनाद्वापि धारणाद्वा विशेषतः ॥२०८॥
शिवतुल्यो भवेद्विप्र नात्र कार्या विचारणा ।
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति धनार्थी लभते धनम् ॥२०९॥
कन्या वरमवाप्नोति वरः कन्यामनुत्तमाम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां मुक्त्यर्थी मुक्तिमाप्नुयात् ॥२१०॥
बन्ध्यापि लभते पुत्रमेतस्य श्रवणाद्विज ।
राजानो राजपुत्राश्च वशमायन्ति दर्शनात् ॥२११॥
यः पठेत्पाठयेद्वापि शृंणुयाद्वापि यो नरः ।
प्रातः कालेऽथ मध्याह्ने सायंकालेऽथवा पुनः ॥२१२॥
निशीथे वापि पठनात् गुह्येशी सुप्रसीदति ।
इदं गुह्यतरं देव्याः शिववक्त्राद्विनिर्गतम् ॥२१३॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं न वक्तव्यं कदाचन ।
अत्यन्तगुरुभक्ताय दान्ताय सत्यवादिने ॥२१४॥
भक्तियुक्ताय दातव्य ब्राह्मणाय विशेषतः ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां भौमवासरे ॥२१५॥
एतस्य पठनाद्देवि रुद्रतुल्यो भवेन्नरः ॥२१६॥

॥ श्रीस्कन्दपुराणे हिमवत्खण्डे गुह्येश्वरीसहस्रनाममालामन्त्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

१२

॥ गुह्यकाल्याः सहस्रनामस्तोत्रम् ॥

महाकालसंहितायां

॥ पूर्वपीठिका ॥

देव्युवाच ॥

यदुक्तं भवता पूर्वं प्राणेश करुणावशात् ॥१॥
नाम्नां सहस्रं देव्यास्तु तदिदानीं वदप्रभो ।
श्री महाकाल उवाच ॥
अतिप्रीतोऽस्मि देवेशि तवाहं वचसामुना ॥२॥
सहस्रनामस्तोत्रं यत् सर्वेषामुत्तमोत्तमम् ।
सुगोपितं यद्यपि स्यात् कथयिष्ये तथापि ते ॥३॥
देव्याः सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं पापौघमर्दनम् ।
मह्यं पुरा भुवः कल्पे त्रिपुरघ्नेन कीर्तितम् ॥४॥
आज्ञप्तश्च तथा देव्या प्रत्यक्षङ्गतया तया ।
त्वयैतत्प्रत्यहं पाठ्यं स्तोत्रं परमदुर्लभम् ॥५॥
महापातकविध्वंसि सर्वसिद्धिविधायकम् ।
महाभाग्यप्रदं दिव्यं सङ्ग्रामे जयकारकम् ॥६॥
विपक्षदर्पदलनं विपदम्भोधितारकम् ।
कृत्याभिचारशमनं महाविभवदायकम् ॥७॥
मनश्चिन्तितकार्यैकसाधकं वाग्मिताकरम् ।

आयुरारोग्यजनकं बलपुष्टिप्रदं परम् ॥८॥
नृपतस्करभीतिघ्नं विवादे जयवर्धनम् ।
परशत्रुक्षयकरं कैवल्यामृतहैतुकम् ॥९॥
सिद्धिरत्नाकरं श्रेष्ठं सद्यः प्रत्ययकारकम् ।
नातः परतरं देव्याः अस्त्यन्यत् तुष्टिदं परमम् ॥१०॥
नाम्नां सहस्रं गुह्यायाः कथयिष्यामि ते प्रिये ।
यत्पूर्वं सर्वदिवानां मन्त्ररूपतया स्थितम् ॥११॥
दैत्यदानवयक्षाणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् ।
प्राणवत् कण्ठदेशस्थं यत्स्वप्नेऽप्यपरिच्युतम् ॥१२॥
देवर्षीणां मुनीनां च वेदवद्रसनागतम् ।
सार्वभौममहीपालैः प्रत्यहं यच्च पठ्यते ॥१३॥
मया च त्रिपुरघ्नेन जप्यते यद्दिने दिने ।
यस्मात् परं नो भविता स्तोत्रं त्रिजगतीतले ॥१४॥
वेदवन्मन्त्रवद् यच्च शिववक्त्रविनिर्गतम् ।
यन्नान्यतन्त्रागमेषु यामले डामरे न च ॥ १५॥
न चान्यसंहिताग्रन्थे नैव ब्रह्माण्डगोलके ।
संसारसागरं तर्तुमेतत् पोतवदिष्यते ॥१६॥
नानाविधमहासिद्धिकोषरूपं महोदयम् ।
या देवी सर्वदिवानां या माता जगदोकसाम् ॥१७॥
या सृष्टिकर्त्री देवानां विश्वावित्री च या स्मृता ।
या च त्रिलोक्याः संहर्त्री या दात्री सर्वसम्पदाम् ॥१८॥
ब्रह्माण्डं या च विष्टभ्य तिष्ठत्यमरपूजिता ।
पुराणोपनिषद्वेद्या या चैका जगदम्बिका ॥१९॥
यस्याः परं नान्यदस्ति किमपीह जगत्त्रये ।

सा गुह्यास्य प्रसादेन वशीभूतेव तिष्ठति ॥२०॥
अत एव महत्स्तोत्रमेतज्जगति दुर्लभम् ।
पठनीयं प्रयत्नेन परं पदमभीप्सुभिः ॥२१॥
किमन्यैः स्तोत्रविस्तारैर्नायं चेत् पठितोऽभवत् ।
किमन्यैः स्तोत्रविस्तारैरयं चेत् पठितो भवेत् ॥२२॥
दुर्वाससे नारदाय कपिलायात्रये तथा ।
दक्षाय च वसिष्ठाय संवर्ताय च विष्णवे ॥२३॥
अन्येभ्योऽपि देवेभ्योऽवदं स्तोत्रमिदं पुरा ।
इदानीं कथयिष्यामि तव त्रिदशवन्दिते ॥२४॥
इदं शृणुष्व यत्नेन श्रुत्वा चैवावधारय ।
धृत्वाऽन्येभ्योऽपि देहि त्वं यान् वै कृपयसे सदा ॥२५॥

॥ अथ विनियोगः ॥

ॐ अस्य श्रीगुह्यकालीसहस्रनामस्तोत्रस्य श्रीत्रिपुरघ्न ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । एकवक्त्रादिशतवक्त्रान्ता श्रीगुह्यकालीदेवता । फ्रूँ बीजम् । ख्रैँ शक्तिः । छ्रीँ ख्रीँ कीलकम् । पुरुषार्थचतुष्टयसाधनपूर्वकश्रीचण्डयोगेश्वरीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

अथ श्रीगुह्यकालीसहस्रनामस्तोत्रम् ।
ॐ फ्रें कराली चामुण्डा चण्डयोगेश्वरी शिवा ।
दुर्गा कात्यायनी सिद्धिविकराली मनोजवा ॥१॥
उल्कामुखी फेरुरावा भीषणा भैरवासना ।
कपालिनी कालरात्रिर्गौरी कङ्कालधारिणी ॥२॥
श्मशानवासिनी प्रेतासना रक्तोदधिप्रिया ।
योगमाता महारात्रिः पञ्चकालानलस्थिता ॥३॥
रुद्राणी रौद्ररूपा च रुधिरद्वीपचारिणी ।
मुण्डमालाधरा चण्डी बलवर्वरकुन्तला ॥४॥

मेधा महाडाकिनी च योगिनी योगिवन्दिता ।
कौलिनी कुरुकुल्ला च घोरा पिङ्गजटा जया ॥५॥
सावित्री वेदजननी गायत्री गगनालया ।
नवपञ्चमहाचक्रनिलया दारुणस्वना ॥६॥
उग्रा कपर्दिगृहिणी जगदाद्या जनाश्रया ।
कालकर्णी कुण्डलिनी भूतप्रेतगणाधिपा ॥७॥
जालन्धरी मसीदेहा पूर्णानन्दपतङ्गिनी ।
पालिनी पावकाभासा प्रसन्ना परमेश्वरी ॥८॥
रतिप्रिया रोगहरी नागहारा नगात्मजा ।
अव्यया वीतरागा च भवानी भूतधारिणी ॥९॥
कादम्बिनी नीलदेहा काली कादम्बरीप्रिया ।
माननीया महादेवी महामण्डलवर्तिनी ॥१०॥
महामांसाशनीशानी चिद्रूपा वागगोचरा ।
यज्ञाम्बुजामनादेवी दर्वीकरविभूषिता ॥११॥
चण्डमुण्डप्रमथनी खेचरी खेचरोदिता ।
तमालश्यामला तीव्रा तापिनी तापनाशिनी ॥१२॥
महामाया महादंष्ट्रा महोरगविराजिता ।
लम्बोदरी लोलजटा लक्ष्म्यालक्ष्मीप्रदायिनी ॥१३॥
धात्री धाराधराकारा धोरणी धावनप्रिया ।
हरजाया हराराध्या हरिवक्त्रा हरीश्वरी ॥१४॥
विश्वेश्वरी वज्रनखी स्वरारोहा बलप्रदा ।
घोणकी घर्घरारावा घोराघौघप्रणाशिनी ॥१५॥
कल्पान्तकारिणी भीमा ज्वालामालिन्यवामया ।
सृष्टिः स्थितिः क्षोभणा च कराला चापराजिता ॥१६॥

वज्रहस्तानन्तशक्तिर्विरूपा च परापरा ।
ब्रह्माण्डमर्दिनी प्रध्वंसिनी लक्षभुजा सती ॥१७॥
विद्युज्जिह्वा महादंष्ट्रा छायाध्वरसुताद्यहृत् ।
महाकालाग्निमूर्तिश्च मेघनादा कटङ्कटा ॥१८॥
प्रदीप्ता विश्वरूपा च जीवदात्री जनेश्वरी ।
साक्षिणी शर्वरी शान्ता शममार्गप्रकाशिका ॥१९॥
क्षेत्रज्ञा क्षेपणी क्षम्याऽक्षता क्षामोदरी क्षितिः ।
अप्रमेया कुलाचारकर्त्री कौलिकपालिनी ॥२०॥
माननीया मनोगम्या मेनानन्दप्रदायिनी ।
सिद्धान्तखनिरध्यक्षा मुण्डिनी मण्डलप्रिया ॥२१॥
बाला च युवती वृद्धा वयोतीता बलप्रदा ।
रत्नमालाधरा दान्ता दर्वीकरविराजिता ॥२२॥
धर्ममूर्तिर्ध्वान्तरुचिर्धरित्री धावनप्रिया ।
सङ्कल्पिनी कल्पकरी कलातीता कलस्वना ॥२३॥
वसुन्धरा बोधदात्री वर्णिनी वानरानरा ।
विद्या विद्यात्मिका वन्या बन्धनी बन्धनाशिनी ॥२४॥
गेया जटाजटरम्या जरती जाह्नवी जडा ।
तारिणी तीर्थरूपा च तपनीया तनूदरी ॥२५॥
तापत्रयहरा तापी तपस्या तापसप्रिया ।
भोगिभूष्या भोगवती भगिनी भगमालिनी ॥२६॥
भक्तिलभ्या भावगम्या भूतिदा भववल्लभा ।
स्वाहारूपा स्वधारूपा वषट्कारस्वरूपिणी ॥२७॥
हन्ता कृतिर्नमोरूपा यज्ञादिर्यज्ञसम्भवा ।
स्फ्यसूर्पचमसाकारा स्रक्स्रु वाकृतिधारिणी ॥२८॥

उद्गीथर्हिंकारदेहा नमः स्वस्तिप्रकाशिनी ।
ऋग्यजुः सामरूपा च मन्त्रब्राह्मणरूपिणी ॥२९॥
सर्वशाखामयी खर्वा पीवर्युपनिषद्बुधा ।
रौद्री मृत्युञ्जयाचिन्तामणिर्वैहायसी धृतिः ॥३०॥
तार्तीया हंसिनी चान्द्री तारा त्रैविक्रमी स्थितिः ।
योगिनी डाकिनी धारा वैद्युती विनयप्रदा ॥३१॥
उपांशुर्मानसी वाच्या रोचना रुचिदायिनी ।
सत्वाकृतिस्तमोरूपा राजसी गुणवर्जिता ॥३२॥
आदिसर्गादिकालीनभानवी नाभसी तथा ।
मूलाधारा कुण्डलिनी स्वाधिष्ठानपरायणा ॥३३॥
मणिपूरकवासा च विशुद्धानाहता तथा ।
आज्ञा प्रज्ञा महासंज्ञा वर्वरा व्योमचारिणी ॥३४॥
बृहद्रथन्तराकारा ज्येष्ठा चाथर्वणी तथा ।
प्राजापत्या महाब्राह्मी हूंहूङ्कारा पतङ्गिनी ॥३५॥
राक्षसी दानवी भूतिः पिशाची प्रत्यनीकरा ।
उदात्ताप्यनुदात्ता च स्वरिता निःस्वराप्यजा ॥३६॥
निष्कला पुष्कला साध्वी सा नुता खण्डरूपिणी ।
गूढा पुराणा चरमा प्राग्भवी वामनी ध्रुवा ॥३७॥
काकीमुखी साकला च स्थावरा जङ्गमेश्वरी ।
ईडा च पिङ्गला चैव सुषुम्णा ध्यानगोचरा ॥३८॥
सर्गा विसर्गा धमनी कम्पिनी बन्धनी हिता ।
सङ्कोचिनी भासुरा च निम्ना दृप्ता प्रकाशिनी ॥३९॥
प्रबुद्धा क्षेपणी क्षिप्ता पूर्णालस्या विलम्बिता ।
आवेशिनी घर्घरा च रूक्षा क्लिन्ना सरस्वती ॥४०॥

स्निग्धा चण्डा कुहूः पूषा वारणा च यशस्विनी ।
गान्धारी शङ्खिनी चैव हस्तिजिह्वा पयस्विनी ॥४१॥
विश्वोदरालम्बुषा च बिभ्रा तेजस्विनी सती ।
अव्यक्ता गालनी मन्दा मुदिता चेतनापि च ॥४२॥
द्रावणी चपला लम्बा भ्रामरी मधुमत्यपि ।
धर्मा रसवहा चण्डी सौवीरी कपिला तथा ॥४३॥
रण्डोत्तरा कर्षिणी च रेवती सुमुखी नटी ।
रजन्याप्यायनी विश्वदूता चन्द्रा कपर्दिनी ॥४४॥
नन्दा चन्द्रावत्ती मैत्री विशालापि च माण्डवी ।
विचित्रा लोहिनीकल्पा सुकल्पा पूतनापि च ॥४५॥
धोरणी धारणी हेला धीरा वेगवती जटा ।
अग्निज्वाला च सुरभी विवर्णा कृन्तनी तथा ॥४६॥
तपिनी तापिनी धूम्रा मरीचिर्ज्वालिनी रुचिः ।
तपस्विनी स्वप्नवहा संमोहा कोटरा चला ॥४७॥
विकल्पा लम्बिका मूला तन्द्रावत्यपि घण्टिका ।
अविग्रहा च कैवल्या तुरीया चापुनर्भवा ॥४८॥
विभ्रान्तिश्च प्रशान्ता च योगिनिः श्रेण्यलक्षिता ।
निर्वाणा स्वस्तिका वृद्धिर्निवृत्तिश्च महोदया ॥४९॥
बोध्याऽविद्या च तामिस्रा वासना योगमेदिनी ।
निरञ्जना च प्रकृतिः सत्तारव्या पारमार्थिकी ॥५०॥
प्रतिबिम्बनिराभासा सदसद्रूपधारिणी ।
उपशान्ता च चैतन्या कूटा विज्ञानमय्यपि ॥५१॥
शक्तिविद्या वासिता च मोदिनी मुदितानना ।
अनया प्रवहा व्याडी सर्वज्ञा शरणप्रदा ॥५२॥

वारुणी मार्जनीभाषा प्रतिमा बृहती खला ।
प्रतीच्छा प्रमितिः प्रीतिः कुहिका तर्पणप्रिया ॥५३॥
स्वस्तिका सर्वतोभद्रा गायत्री प्रणवात्मिका ।
सावित्री वेदजननी निगमाचारबोधिनी ॥५४॥
विकराला कराला च ज्वालाजालैकमालिनी ।
भीमा च क्षोभणानन्ता वीरा वज्रायुधा तथा ॥५५॥
प्रध्वंसिनी च मालङ्का विश्वमर्दिन्यवीक्षिता ।
मृत्युः सहस्रबाहुश्च घोरदंष्ट्रा वलाहकी ॥५६॥
पिङ्गा पिङ्गशता दीप्ता प्रचण्डा सर्वतोमुखी ।
विदारिणी विश्वरूपा विक्रान्ता भूतभावनी ॥५७॥
विद्राविणी मोक्षदात्री कालचक्रेश्वरी नटी ।
तप्तहाटकवर्णा च कृतान्ता भ्रान्तिभञ्जिनी ॥५८॥
सर्वतेजोमयी भव्या दितिशोककरी कृतिः ।
महाक्रुद्धा श्मशानस्था कपालस्रगलङ्कृता ॥५९॥
कालातिकाला कालान्तकरीतिः करुणानिधिः ।
महाघोरा घोरतरा संहारकरिणी तथा ॥६०॥
अनादिश्च महोन्मत्ता भूतधात्र्यसितेक्षणा ।
भीष्माकारा च वक्राङ्गी बहुपादैकपादिका ॥६१॥
कुलाङ्गना कुलाराध्या कुलमार्गरतेश्वरी ।
दिगम्बरा मुक्तकेशी वज्रमुष्टिर्निरिन्धनी ॥६२॥
सम्मोहिनी क्षोभकरी स्तम्भिनी वश्यकारिणी ।
दुर्धर्षा दर्पदलनी त्रैलोक्यजननी जया ॥६३॥
उन्मादोच्चाटनकरी कृत्या कृत्याविघातिनी ।
विरूपा कालरात्रिश्च महारात्रिर्मनोन्मनी ॥६४॥

महावीर्या गूढनिद्रा चण्डदोर्दण्डमण्डिता ।
निर्मला शूलिनी तन्त्रा वज्रिणी चापधारिणी ॥६५॥
स्थूलोदरी च कुमुदा कामुका लिङ्गधारिणी ।
धटोदरी फेरवी च प्रवीणा कालसुन्दरी ॥६६॥
तारावती डमरुका भानुमण्डलमालिनी ।
एकानङ्गा पिङ्गलाक्षी प्रचण्डाक्षी शुभङ्करी ॥६७॥
विद्युत्केशी महामारी सूची तूण्डी च जृम्भका ।
प्रस्वापिनी महातीव्रा वरणीया वरप्रदा ॥६८॥
चण्डचण्डा ज्वलद्देहा लम्बोदर्यग्निमर्दिनी ।
महादन्तोल्कादृगम्बा ज्वालाजालजलन्धरी ॥६९॥
माया कृशा प्रभा रामा महाविभवदायिनी ।
पौरन्दरी विष्णुमाया कीर्तिः पुष्टिस्तनूदरी ॥७०॥
योगज्ञा योगदात्री च योगिनी योगिवल्लभा ।
सहस्रशीर्षपादा च सहस्रनयनोज्वला ॥७१॥
पानकर्त्री पावकाभा परामृतपरायणा ।
जगद्गतिर्जगज्जेत्री जन्मकालविमोचिनी ॥७२॥
मूलावतंसिनी मूला मौनव्रतपराङ्मुखी ।
ललिता लोलुपा लोला लक्षणीया ललामधृक् ॥७३॥
मातङ्गिनी भवानी च सर्वलोकेश्वरेश्वरी ।
पार्वती शम्भुदयिता महिषासुरमर्दिनी ॥७४॥
चण्डमुण्डापहर्त्री च रक्तबीजनिकृन्तनी ।
निशुम्भशुम्भमथनी देवराजवरप्रदा ॥७५॥
कल्याणकारिणी काली कोलमांसास्रपायिनी ।
खड्गहस्ता चर्मिणी च पाशिनी शक्तिधारिणी ॥७६॥

खट्वाङ्गिनी मुण्डधरा भुशुण्डी धनुरन्विता ।
चक्रघण्टान्विता बालप्रेतशैलप्रधारिणी ॥७७॥
नरकङ्कालनकुलसर्पहस्ता समुद्गरा ।
मुरलीधारिणी बलिकुण्डिनी डमरुप्रिया ॥७८॥
भिन्दिपालास्त्रिणी पूज्या साध्या परिघिणी तथा ।
पट्टिशप्रासिनी रम्या शतशो मुसलिन्यपि ॥७९॥
शिवापोतधरादण्डाङ्कुशहस्ता त्रिशूलिनी ।
रत्नकुम्भधरा दान्ता छुरिकाकुन्तदोर्युता ॥८०॥
कमण्डलुकरा क्षामा गृध्राढ्या पुष्पमालिनी ।
मांसखण्डकरा बीजपूरवत्यक्षरा क्षरा ॥८१॥
गदापरशुयष्ट्यङ्का मुष्टिनानलधारिणी ।
प्रभूता च पवित्रा च श्रेष्ठा पुण्यविवर्धनो ॥८२॥
प्रसन्नानन्दितमुखी विशिष्टा शिष्टपालिनी ।
कामरूपा कामगवी कमनीय कलावती ॥८३॥
गङ्गा कलिङ्गतनया सिप्रा गोदावरी मही ।
रेवा सरस्वती चन्द्रभागा कृष्णा दृषद्वती ॥८४॥
वाराणसी गयावन्ती काञ्ची मलयवासिनी ।
सर्वदेवीस्वरूपा च नानारूपधरामला ॥८५॥
लक्ष्मीर्गौरी महालक्ष्मी रत्नपूर्णा कृपामयी ।
दुर्गा च विजया घोरा पद्मावत्यमरेश्वरी ॥८६॥
वगला राजमातङ्गी चण्डी महिषमर्दिनी ।
त्रिपुटोच्छिष्टचाण्डाली भारुण्डा भुवनेश्वरी ॥८७॥
राजराजेश्वरी नित्यक्लिन्ना च जयभैरवी ।
चण्डयोगेश्वरी राज्यलक्ष्मी रुद्राण्यरुन्धती ॥८८॥

अश्वारूढा महागुह्या यन्त्रप्रमथनी तथा ।
धनलक्ष्मीर्विश्वलक्ष्मीर्वश्यकारिण्यकल्मषा ॥८९॥
त्वरिता च महाचण्डभैरवी परमेश्वरी ।
त्रैलोक्यविजया ज्वालामुखी दिक्करवासिनी ॥९०॥
महामन्त्रेश्वरी वज्रप्रस्तारिण्यजनावती ।
चण्डकापालेश्वरी च स्वर्णकोटेश्वरी तथा ॥९१॥
उग्रचण्डा श्मशानोग्रचण्डा वार्ताल्यजेश्वरी ।
चण्डोग्रा च प्रचण्डा च चण्डिका चण्डनायिका ॥९२॥
वाग्वादिनी मधुमती वारुणी तुम्बुरेश्वरी ।
वागीश्वरी च पूर्णेशी सौम्योग्रा कालभैरवी ॥९३॥
दिगम्बरा च धनदा कालरात्रिश्च कुब्जिका ।
किराटी शिवदूती च कालसङ्कर्षणी तथा ॥९४॥
कुक्कुटी सङ्कटा देवी चपलभ्रमराम्बिका ।
महार्णवेश्वरी नित्या जयझङ्केश्वरी तथा ॥९५॥
शवरी पिङ्गला बुद्धिप्रदा संसारतारिणी ।
विज्ञा महामोहिनी च बाला त्रिपुरसुन्दरी ॥९६॥
उग्रतारा चैकजटा तथा नीलसरस्वती ।
त्रिकण्टकी छिन्नमस्ता बोधिसत्वा रणेश्वरी ॥९७॥
ब्रह्माणी वैष्णवी माहेश्वरी कौमार्यलम्बुषा ।
वाराही नारसिंही च चामुण्डेन्द्राण्योनिजा ॥९८॥
चण्डेश्वरी चण्डघण्टा नाकुली मृत्युहारिणी ।
हंसेश्वरी मोक्षदा च शातकर्णी जलन्धरी ॥९९॥
स्वरकर्णी ऋक्षकर्णी सूर्पकर्णा बलाबला ।
महानीलेश्वरी जातवेतसी कोकतुण्डिका ॥१००॥

गुह्येश्वरी वज्रचण्डी महाविद्या च बाभ्रवी ।
शाकम्भरी दानवेशी डामरी चर्चिका तथा ॥१०१॥
एकवीरा जयन्ती च एकानंशा पताकिनी ।
नीललोहितरूपा च ब्रह्मवादिन्ययन्त्रिता ॥१०२॥
त्रिकालवेदिनी नीलकोरङ्गी रक्तदन्तिका ।
भूतभैरव्यनालम्बा कामाख्या कुलकुट्टनी ॥१०३॥
क्षेमङ्करी विश्वरूपा मायूर्यावेशिनी तथा ।
कामाङ्कुशा कालचण्डी भीमादेव्यर्धमस्तका ॥१०४॥
धूमावती योगनिद्रा ब्रह्मविष्णुनिकृन्तनी ।
चण्डोग्रकापालिनी च बोधिका हाटकेश्वरी ॥१०५॥
महामङ्गलचण्डी च तोवरा चण्डखेचरी ।
विशाला शक्तिसौपर्णी फेरुचण्डी मदोद्धता ॥१०६॥
कापालिका चञ्चरीका महाकामध्रुवापि च ।
विक्षेपणी भूततुण्डी मानस्तोका सुदामिनी ॥१०७॥
निर्मूलिनी राङ्कविणी सद्योजाता मदोत्कटा ।
वामदेवी महाघोरा महातत्पुरुषी तथा ॥१०८॥
ईशानी शाङ्करी भर्गो महादेवी कपर्दिनी ।
त्र्यम्बकी व्योमकेशी च मारी पाशुपती तथा ॥१०९॥
जयकाली धूमकाली ज्वालाकाल्युग्रकालिका ।
धनकाली घोरनादकाली कल्पान्तकालिका ॥११०॥
वेतालकाली कङ्कालकाली श्रीनग्नकालिका ।
रौद्रकाली घोरघोरतरकाली तथैव च ॥१११॥
ततो दुर्जयकाली च महामन्थानकालिका ।
आज्ञाकाली च संहारकाली सङ्ग्रामकालिका ॥११२॥

कृतान्तकाली तदनु तिग्मकाली ततः परम् ।
ततो महारात्रिकाली महारुधिरकालिका ॥११३॥
शवकाली भीमकाली चण्डकाली तथैव च ।
सन्त्रासकाली च ततः श्रीभयङ्करकालिका ॥११४॥
विकरालकाली श्रीघोरकाली विकटकालिका ।
करालकाली तदनु भोगकाली ततः परम् ॥११५॥
विभूतिकाली श्रीकालकाली दक्षिणकालिका ।
विद्याकाली वज्रकाली महाकाली भवेत्ततः ॥११६॥
ततः कामकलाकाली भद्रकाली तथैव च ।
श्मशानकालिकोन्मत्तकालिका मुण्डकालिका ॥११७॥
कुलकाली नादकाली सिद्धिकाली ततः परम् ।
उदारकाली सन्तापकाली चञ्चलकालिका ॥११८॥
डामरी कालिका भावकाली कुणपकालिका ।
कपालकाली च दिगम्बरकाली तथैव च ॥११९॥
उद्दामकाली प्रपञ्चकाली विजयकालिका ।
क्रतुकाली योगकाली तपःकाली तथैव च ॥१२०॥
आनन्दकाली च ततः प्रभाकाली ततः परम् ।
सूर्यकाली चन्द्रकाली कौमुदीकालिका ततः ॥१२१॥
स्फुलिङ्गकाल्यग्निकाली वीरकाली तथैव च ।
रणकाली हूंहूङ्कारनादकाली ततः परम् ॥१२२॥
जयकाली विघ्नकाली महामार्तण्डकालिका ।
चिताकाली भस्मकाली ज्वलदङ्गारकालिका ॥१२३॥
पिशाचकाली तदनु ततो लोहितकालिका ।
खगकाली नागकाली ततो राक्षसकालिका ॥१२४॥

महागगनकाली च विश्वकाली भवेदनु ।
मायाकाली मोहकाली ततो जङ्गमकालिका ॥१२५॥
पुन स्थावरकाली च ततो ब्रह्माण्डकालिका ।
सृष्टिकाली स्थितिकाली पुनः संहारकालिका ॥१२६॥
अनाख्याकालिका चापि भासाकाली ततोऽप्यनु ।
व्योमकाली पीठकाली शक्तिकाली तथैव च ॥१२७॥
ऊर्ध्वकाली अधःकाली तथा चोत्तरकालिका ।
तथा समयकाली च कौलिकक्रमकालिका ॥१२८॥
ज्ञानविज्ञानकाली च चित्सत्ताकालिकापि च ।
अद्वैतकाली परमानन्दकाली तथैव च ॥१२९॥
वासनाकालिका योगभूमिकाली ततः परम् ।
उपाधिकाली च महोदयकाली ततोऽप्यनु ॥१३०॥
निवृत्तिकाली चैतन्यकाली वैराग्यकालिका ।
समाधिकाली प्रकृतिकाली प्रत्ययकालिका ॥१३१॥
सत्ताकाली च परमार्थकाली नित्यकालिका ।
जीवात्मकाली परमात्मकाली बन्धकालिका ॥१३२॥
आभासकालिका सूक्ष्मकालिका शेषकालिका ।
लयकाली साक्षिकाली ततश्च स्मृतिकालिका ॥१३३॥
पृथिवीकालिका वापि एककाली ततः परम् ।
कैवल्यकाली सायुज्यकाली च ब्रह्मकालिका ॥१३४॥
ततश्च पुनरावृत्तिकाली याऽमृतकालिका ।
मोक्षकाली च विज्ञानमयकाली ततः परम् ॥१३५॥
प्रतिबिम्बकालिका चापि एकपिण्डकाली ततः परम् ।
एकात्म्यकालिकानन्दमयकाली तथैव च ॥१३६॥

सर्वशेषे परिज्ञेया निर्वाणमयकालिका ।
इति नाम्नां सहस्रं ते प्रोक्तमेकाधिकं प्रिये ॥१३७॥
पठतः स्तोत्रमेतद्धि सर्वं करतले स्थितम् ।
सहस्रनाम्नः स्तोत्रस्य फलश्रुतिः ॥
नैतेन सदृशं स्तोत्रं भूतं वापि भविष्यति ॥१॥
यः पठेत् प्रत्यहमदस्तस्य पुण्यफलं शृणु ।
पापानि विलयं यान्ति मन्दराद्रिनिभान्यपि ॥२॥
उपद्रवाः विनश्यन्ति रोगाग्निनृपचौरजाः ।
आपदश्च विलीयन्ते ग्रहपीडाः स्पृशन्ति न ॥३॥
दारिद्र्यं नाभिभवति शोको नैव प्रबाधते ।
नाशं गच्छन्ति रिपवः क्षीयन्ते विघ्नकोटयः ॥४॥
उपसर्गाः पलायन्ते बाधन्ते न विषाण्यपि ।
नाकालमृत्युर्भवति न जाड्यं नैव मूकता ॥५॥
इन्द्रियाणां न दौर्बल्यं विषादो नैव जायते ।
अथादौ नास्य हानिः स्यात् न कुत्रापि पराभवः ॥६॥
यान् यान् मनोरथानिच्छेत् तांस्तान् साधयति द्रुतम् ।
सहस्रनामपूजान्ते यः पठेद् भक्तिभावितः ॥७॥
पात्रं स सर्वसिद्धीनां भवेत्संवत्सरादनु ।
विद्यावान् बलवान् वाग्मी रूपवान् रूपवल्लभः ॥८॥
अधृष्यः सर्वसत्वानां सर्वदा जयवान् रणे ।
कामिनीनां प्रियो नित्यं मित्राणां प्राणसन्निभः ॥९॥
रिपूणामशनिः साक्षाद्दाता भोक्ता प्रियंवदः ।
आकरः स हि भाग्यानां रत्नानामिव सागरः ॥१०॥
मन्त्ररूपमिदं ज्ञेयं स्तोत्रं त्रैलोक्यदुर्लभम् ।

एतस्य बहवः सन्ति प्रयोगाः सिद्धिदायिनः ॥११॥
तान् विधाय सुरेशानि ततः सिद्धीः परीक्षयेत् ।
ताररावौ पुरा दत्त्वा नाम चैकैकमन्तरा ॥१२॥
तच्च ङेऽन्तं विनिर्दिश्य शेषे हार्दमनुं न्यसेत् ।
उपरागे भास्करस्येन्दोर्वाप्यथान्यपर्वणि ॥१३॥
मालतीकुसुमैर्बिल्वपत्रैर्वा पायसेन वा ।
मधूक्षितद्राक्षया वा पक्वमोचाफलेन वा ॥१४॥
प्रत्येकं जुहुयात् नाम पूर्वप्रोक्तक्रमेण हि ।
एवं त्रिवारं निष्पाद्य ततः स्तोत्रं परीक्षयेत् ॥१५॥
यावत्यः सिद्धयः सन्ति कथिता यामलादिषु ।
भवन्त्येते न तावन्त्यो दृढविश्वासशालिनाम् ॥१६॥

(एतत्स्तोत्रस्य प्रयोगविधिवर्णनम्)

परचक्रे समायाते मुक्तकेशो दिगम्बरः ।
रात्रौ तदाशाभिमुखः पञ्चविंशतिधा पठेत् ॥१७॥
परचक्रं सदा घोरं स्वयमेव पलायते ।
महारोगोपशमने त्रिंशद्वारमुदीरयेत् ॥ १८॥
विवादे राजजनितोपद्रवे दशधा जपेत् ।
महादुर्भिक्षपीडासु महामारीभयेषु च ॥ १९॥
षष्टिवारं स्तोत्रमिदं पठन्नाशयति द्रुतम् ।
भूतप्रेतपिशाचादि कृताभिभवकर्मणि ॥२०॥
प्रजपेत् पञ्च दशधा क्षिप्रं तदभिधीयते ।
तथा निगडबद्धानां मोचने पञ्चधा जपेत् ॥ २१॥
बध्यानां प्राणरक्षार्थं शतवारमुदीरयेत् ।
दुःस्वप्नदर्शने वारत्रयं स्तोत्रमिदं पठेत् ॥२२॥

एवं विज्ञाय देवेशि महिमानममुष्य हि ।
यस्मिन् कस्मिन्नपि प्राप्ते सङ्कटे योजयेदिदम् ॥२३॥
शमयित्वा तु तत्सर्वं शुभमुत्पादयत्यपि ।
रणे विवादे कलहे भूतावेशे महाभये ॥२४॥
उत्पातराजपीडायां बन्धुविच्छेद एव वा ।
सर्पाग्निदस्युनृपतिशत्रुरोगभये तथा ॥२५॥
जप्यमेतन्महास्तोत्रं समस्तं नाशमिच्छता ।
ध्यात्वा देवीं गुह्यकालीं नग्नां शक्तिं विधाय च ॥२६॥
तद्योनौ यन्त्रमालिख्य त्रिकोणं बिन्दुमत् प्रिये ।
पूर्वोदितक्रमेणैव मन्त्रमुच्चार्य साधकः ॥२७॥
गन्धपुष्पाक्षतैर्नित्यं प्रत्येकं परिपूजयेत् ।
बलिं च प्रत्यहं दद्यात् चतुर्विंशतिवासरान् ॥२८॥
स्तोत्राणामुत्तमं स्तोत्रं सिद्ध्यन्त्येतावताप्यदः ।
स्तम्भने मोहने चैव वशीकरण एव च ॥२९॥
उच्चाटने मारणे च तथा द्वेषाभिचारयोः ।
गुटिकाधातुवादादियक्षिणीपादुकादिषु ॥३०॥
कृपाणाञ्जनवेतालान्यदेहादिप्रवेशने ।
प्रयुञ्ज्यादिदमीशानि ततः सर्वं प्रसिद्ध्यति ॥३१॥
सर्वे मनोरथास्तस्य वशीभूता करे स्थिताः ।
आरोग्यं विजयं सौख्यं विभूतिमतुलामपि ॥३२॥
त्रिविधोत्पातशान्तिञ्च शत्रुनाशं पदे पदे ।
ददाति पठितं स्तोत्रमिदं सत्यं सुरेश्वरि ॥३३॥
स्तोत्राण्यन्यानि भूयांसि गुह्यायाः सन्ति पार्वति ।
तानि नैतस्य तुल्यानि ज्ञातव्यानि सुनिश्चितम् ॥३४॥

इदमेव तस्य तुल्यं सत्यं सत्यं मयोदितम् ।
नाम्नां सहस्रं यद्येतत् पठितु नालमन्वहम् ॥ ३५॥

(सहस्रनाम्नः पाठाशक्तौ वक्ष्यमाणपाठस्य निदेशः)

तदैतानि पठेन्नित्यं नामानि स्तोत्रपाठकः ।
चण्डयोगेश्वरी चण्डी चण्डकापालिनी शिवा ॥३६॥
चामुण्डा चण्डिका सिद्धिकराली मुण्डमालिनी ।
कालचक्रेश्वरी फेरुहस्ता घोराट्टहासिनी ॥३७॥
डामरी चर्चिका सिद्धिविकराली भगप्रिया ।
उल्कामुखी ऋक्षकर्णी बलप्रमथिनी परा ॥३८॥
महामाया योगनिद्रा त्रैलोक्यजननीश्वरी ।
कात्यायनी घोररूपा जयन्ती सर्वमङ्गला ॥३९॥
कामातुरा मदोन्मत्ता देवदेवीवरप्रदा ।
मातङ्गी कुब्जिका रौद्री रुद्राणी जगदम्बिका ॥४०॥
चिदानन्दमयी मेधा व्रह्मरूपा जगन्मयी ।
संहारिणी वेदमाता सिद्धिदात्री बलाहका ॥ ४१॥
वारुणी जगतामाद्या कलातीता चिदात्मिका ।
नाभान्येतानि पठता सर्वं तत् परिपठ्यते ॥४२॥
इत्येतत् कथितं नाम्नां सहस्रं तव पार्वति ।
उदीरितं फलं चास्य पठनाद् यत् प्रजायते ॥४३॥
निःशेषमवधार्य त्वं यथेच्छसि तथा कुरु ।
पठनीयं न च स्त्रीभिरेतत् स्तोत्रं कदाचन ॥४४॥

॥ इति महाकालसंहितायां विश्वमङ्गलकवचान्तं पूजापद्धतिप्रभूतिकथनं नाम दशमः पटलान्तर्गतं गुह्यकालिसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

१३

॥ श्रीगुह्येश्वरीस्तोत्रम् ॥

राजोवाच ॥

कालेश्वर्यै नमो देव्यै भिन्नाञ्जनचयत्विषे ।
नमस्ते कालिके भद्रे गुह्येश्वर्यै नमो नमः ॥१॥
दशास्यपद्मसुन्दर्यै भद्रकाल्यै नमो नमः ।
अष्टोत्तरशताष्टार्धकरायै सततं नमः ॥२॥
सर्वायुधोज्वले देवि मुण्डमालाविभूषिते ।
त्रिँशल्लोचनदीप्तास्ये विद्युज्जिह्वे नमोऽस्तुते ॥३॥
नानाभरणभूषाढ्ये सुकुण्डलोत्तमानने ।
मुक्तामालोत्तमाङ्गिन्यै व्याघ्रचर्मोज्ज्वले नमः ॥४॥
नमस्ते भीमद्रंष्ट्रिन्यै नमोऽसिचर्मधारिणि ।
श्मशाननिलये मातर्विविधास्यैर्विभूषिते ॥५॥
क्षतजैरुक्षितास्यायै पीतासृक्क्लिन्नजिह्विके ।
शवैर्विभूषितायै च शवस्थायै नमो नमः ॥६॥
ब्रह्मामृतैः परैः पुष्पैर्ब्रह्मादिभिः प्रपुजिते ।
ब्रह्मानन्दपदं मोक्षं ददत्यै सेविने नमः ॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरीन्द्राणी कौमारी वैष्णवी परा ।
चामुण्डा शिवदूती च वाराह्येताभिराश्रिते ॥८॥
रुद्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका ।
चण्डा चण्डवती चण्डी चण्डिका ताभिराश्रिते ॥९॥
ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राद्यैर्नित्यं प्रसेविते परे ।
भक्तेप्सितप्रदे देवि गुप्तकाली नमोऽस्तुते ॥१०॥

॥ श्रीस्कन्दपुराणे हिमवत्खण्डे पाशुपतक्षेत्रवर्णनप्रकरणे श्रीगुह्येश्वरीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

१४

॥ श्रीगुह्यकालीस्तोत्रम् ॥

ॐ नमः श्रीगुह्यकालिकायै ॥

श्रीईश्वरउवाच ॥

अथ वक्ष्य महादेव्या स्तोत्रं सर्वज्ञ भाषितं ।
पठनाद्भक्ति युक्तेन शक्रस्यैश्वर्यमाप्नुयात् ॥०॥
ब्रह्मणा ब्रह्मशब्देन स्तुतात्वं परमेश्वरि ।
इच्छाशक्तिं परां मायां गुह्यकालीं नमाम्यहम् ॥१॥
पालनाय जगद्देवी विष्णुनात्वं परापरां ।
संस्तुताज्ञानशब्देन गुह्यकालीं नमाम्यहम् ॥२॥
अपरां कालरुद्रेन संहारार्थं स्तुता शिवे ।
त्वां क्रियां रुद्रशब्देन गुह्यकालीं नमाम्यहम् ॥३॥
ईश्वरेनलयार्थत्वां स्तुतासिचित्कलेव्यये ।
कलातीतां महामायां गुह्यकालीं नमाम्यहम् ॥४॥
सदाशिवेन सततं स्तुतात्वं परमेश्वरि ।
अनुग्रहाय लोकानां गुह्यकालीं नमाम्यहम् ॥५॥
इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु भक्तियुक्तेन चेतसा ।
तस्मैदद्यात् गुह्यकाली सर्वसिद्धिर्न संशयः ॥६॥
यः श्लोकपञ्चकं देवी नित्यं मनसि धारयेत् ।
सर्वज्ञत्वं लभेद्देवि गुह्यकाली प्रसादतः ॥७॥

यामासाद्य मया देवि प्राप्तासिद्धिरनेकधा ।
ब्रह्मापि सृष्टिकर्त्तात्वं विष्णुः स्यात् पालको भवेत् ॥८॥
संहार कृत्कालरुद्र ईश्वरोलय कृत्सदा ।
वहुनात्र किमुक्तेन सा देवी ध्यान मात्रत ॥९॥
सजीवन्नेव मुक्तिः स्या सत्य सत्यं मयोदितम् ॥१०॥

॥ श्रीगुह्यकालीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

१५

॥ श्रीगुह्यकालीक्रमस्तवः ॥

क्रमस्तवं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ! ।
ब्राह्मये मुहूर्ते उत्थाय गुरुदेवान्नमेत् सदा ॥१॥
वारुणीमुखमाश्रित्य नमस्कुर्यादुपर्य्यधः ।
गुरुभ्योऽपि नमो नित्यं नमस्तत्पादुकाय च ॥२॥
परं परेभ्यश्च परापरेभ्यः परात्परेभ्योऽपि नमोऽस्तुते च ।
आधारशक्तिं नमस्कृत्य कुलाचलान्नमस्कुर्य्यात् ॥३॥
धर्म्मकर्म्मणे नमस्कृत्य कूर्म्मराजाय वै नमः ।
अनन्ताय नमो नित्यं वराहाय नमो नमः ॥४॥
पृथिव्यै च नमो नित्यं कुलाचलेभ्यो नमो नमः ।
समुद्रेभ्यो नमो नित्यं सरत्नैरमृतैर्जलैः ॥५॥
कुलवृक्षेभ्यो नमो नित्यं कल्पवृक्षेभ्यो नमो नमः ।
स्वर्णसिंहासनेभ्यश्च मणिवेद्यै नमो नमः ॥६॥
चतुर्दिशि नमस्कुर्य्यात् सर्वदेवान् नमस्ततः ।
वेदेभ्योऽपि नमो नित्यं वेदार्थेभ्यो नमो नमः ॥७॥
शाखाभ्यस्तस्य वै नित्यं तत्पादेभ्यो नमो नमः ।
तद्वर्णेभ्यो नमो नित्यं वर्णार्थेभ्यो नमो नमः ॥८॥
असंस्कारपदेभ्यश्च नमो वै परमात्मने ।
विद्याभ्योऽपि नमो नित्यमविद्याभ्यो नमो नमः ॥९॥
शास्त्रेभ्योऽपि नमो नित्यमशास्त्रेभ्यो नमो नमः ।
धर्मेभ्योऽपि नमो नित्यमधर्मेभ्यो नमो नमः ॥१०॥
भागवतेभ्यो नमो नित्यं विद्याभ्योऽपि नमो नमः ।

श्रुतिभ्योऽपि नमो नित्यं श्रुत्यर्थेभ्यो नमो नमः ॥११॥
श्रीरामभागवतेभ्यश्च दण्डवत् प्रणमेत् सदा ।
भागवतेभ्यो नमो नित्यं भागवतार्थेभ्यो नमो नमः ॥१२॥
तत्त्वार्थेभ्यो नमो नित्यं तत्त्वेभ्योऽपि नमो नमः ।
योगेभ्योऽपि नमो नित्यं योगार्थेभ्यो नमो नमः ॥१३॥
संहिताभ्यो नमो नित्यं तदर्थेभ्यो नमो नमः ।
मातृकाभ्यो नमो नित्यं तदर्थेभ्यो नमो नमः ॥१४॥
कलाभ्योऽपि नमो नित्यं शक्तिभ्योऽपि नमो नमः ।
स्वरेभ्योऽपि नमो नित्यं रागेभ्योऽपि नमो नमः ॥१५॥
रागिणीभ्यो नमो नित्यं तदर्थेभ्यो नमो नमः ।
अस्त्रेभ्योऽपि नमो नित्यं शस्त्रेभ्योऽपि नमो नमः ॥१६॥
जीवेभ्योऽपि नमो नित्यं बीजेभ्योऽपि नमो नमः ।
भूचरेभ्यो नमो नित्यं खेचरेभ्यो नमो नमः ॥१७॥
योगेभ्योऽपि नमो नित्यं करणेभ्यो नमो नमः ।
मुहूर्तेभ्यो नमो नित्यं यामेभ्योऽपि नमो नमः ॥१८॥
ऋतुभ्योऽपि नमो नित्यं वत्सरेभ्यो नमो नमः ।
डाकिनीभ्यो नमो नित्यं रुद्रेभ्योऽपि नमो नमः ॥१९॥
भूतेभ्योऽपि नमो नित्यं प्रेतेभ्योऽपि नमो नमः ।
यक्षेभ्योऽपि नमो नित्यं विघ्नेभ्योऽपि नमो नमः ॥२०॥
भूतेभ्योऽपि नमो नित्यं महाभूतेभ्यो नमो नमः ।
आचार्येभ्यो नमो नित्यं शङ्करेभ्यो नमो नमः ॥२१॥
वैष्णवेभ्यो नमो नित्यं ये च मायाविमोहिताः ।
मायायै प्रणमेन्नित्यं प्रत्त्वेभ्योऽपि नमो नमः ॥२२॥
शरीरेभ्यो नमो नित्यं व्यापकेभ्यो नमो नमः ।
मन्त्रेभ्योऽपि नमो नित्यं यन्त्रार्थेभ्यो नमो नमः ॥२३॥
नमो वर्णात्मिकाभ्यश्च देवताभ्यो नमो नमः ।
तत्पदेभ्यो नमो नित्यं सत्पदेभ्यो नमो नमः ॥२४॥

भावनाभ्यो नमो नित्यं भावशास्त्रेभ्य एव च ।
स्तवेभ्यः कवचेभ्यश्च नामभ्योऽपि नमो नमः ॥२५॥
आगमेभ्यो नमो नित्यं तदर्थेभ्यो नमो नमः ।
तत्क्रियाभ्यो नमो नित्यं श्रेष्ठशास्त्रेति कीर्त्त्यते ॥२६॥
रसेभ्योऽपि नमो नित्यं गन्धेभ्योऽपि नमो नमः ।
पीठेभ्योऽपि नमो नित्यं तत्स्थेभ्योऽपि नमो नमः ॥२७॥
सत्त्वेभ्योऽपि नमो नित्यं राजसेभ्यो नमो नमः ।
तामसेभ्यो नमो नित्यं गुणेभ्योऽपि नमो नमः ॥२८॥
सर्वविद्यावतारेभ्यः सिद्धेभ्योऽपि नमो नमः ।
आनन्दकन्दाय नमस्कृत्य कन्दनाय नमो नमः ॥२९॥
सर्वतत्त्वात्मकमलाय प्रकृतिपत्रेभ्य एव च ।
सिद्धपीठाय सत्त्वस्य शवरूपशिवाय च ॥३०॥
त्रिपञ्चाराय चक्राय नमो नित्यं नमो नमः ।
तत्रस्थायै कालिकायै गुह्यायै कामरूपिण्यै ॥३१॥
गुरुकुलादिशक्तिभ्यः कालिकायै नमो नमः ।
नमो नमो नमस्तेऽस्तु परापराभ्यो नमो नमः ॥३२॥
विशालनेत्रां सुरसङ्घवन्दितां सुरासुराभ्यर्च्चितपादपद्माम् ।
नृमुण्डमालाकलिताशताङ्गैः परावरेते प्रभवन्ति सिद्धाः ॥३३॥
स्थूले केचित् प्रवदन्ति सिद्धाः सूक्ष्मेति केचिन्मुनयो वदन्ति ।
तामम्बिकां नौमि विशालनेत्रसुमङ्गलं धेहि मदीयदेहे ॥३४॥
त्वदीयपादाम्बुजमेवमेतत् निषेव्य सिद्धाः प्रभवं प्रयान्ति ।
मातस्तवायं पापात् सर्वशोकदुःखाज्जगज्जनरम्ये ।
ये त्वा ध्यायेयुर्मनसि विधानाः सर्वे ते सकलफलाः ॥३५॥

॥ श्रीविश्वसारतन्त्रे षष्टपटले गुह्यकाल्याःक्रमस्तवः सम्पूर्णम् ॥

१६

॥ श्रीगुह्यकालीमुक्तावलीस्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीमहाकालोवाच ॥

कालिकादक्षिणायास्तु सर्वस्तोत्रतमंपरम् ।
महादुखहरं श्रेष्ठं शृणुष्व कमलानाने ॥१॥
आदिर्आद्या भवाशान्ति अनिरुद्धसरस्वती ।
प्रत्यङ्गिरा शिवा भद्रा भद्रकाली भव प्रिया ॥२॥
पूर्णेश्वरी निशेशि च कुब्जिका सिद्धिकालिका ।
सिद्धिलक्ष्मीर्हाटकेशी महात्रिपुरसुन्दरी ॥३॥
भैरवी बगला चण्डी धुमावत्याम्बिका ध्रुवा ।
वाग्वादिनि चोग्रतारा तथा महिषमर्दिनि ॥४॥
कात्यायनी तुम्बुरेशी सुमुखी श्वेतकालिका ।
उग्रचण्डी छिन्नमस्ता षोडशी कौलिनी तथा ॥५॥
बाला च त्रिपुरा लक्ष्मी पार्वती सर्वमङ्गला ।
दुर्गा च भुवनेशी च तथा नीलसरस्वती ॥६॥
पिङ्गला मङ्गला धन्या भ्रामरी भद्रिका तथा ।
उल्का सिद्धा सङ्कटा च विकटा गर्भपालिका ॥७॥
सुभद्रा द्रौपती तीव्रा रुक्मिणी वनकालिका ।
मातृका च चषकरूपा वरुणा महाबला ॥८॥

मुक्तावलि महस्तोत्रं महागोप्यं वरानने ।
वर्णितुनैव शक्नोमि फलं पुण्यं च चाद्रिजे ॥९॥
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
गोपनीयं सदा भक्त्या पठयते दिने दिने ॥१०॥ ॥

॥ श्रीमहाकालसंहितायां गुह्यकालीमुक्तावलीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

१७

॥ श्रीगुह्यकाल्यामहामायास्तवम् ॥

खफ्रैं नमस्तुते जगन्माते महामायास्वरूपिणी ।
या सान्तकाग्नि कुहरोदुस्थिता तेजरूपिणी ॥१॥
फेत्कारनिलयादेवि फेत्काररावरूपिणी ।
फेत्कारज्वलनासस्था ततः फेत्कारमातरः ॥२॥
सूक्ष्मदेहे निरालम्बे परापरतरे शिवे ।
एकाकिनी विश्वमाते नमो निर्वाणदायिनी ॥३॥
महाकुण्डलिनी भिन्ने प्राणाधारस्वरूपिणी ।
षट्चक्रभेदि व्याप्ते त्वं मङ्गलायै नमो नमः ॥४॥
वह्निमण्डलसंस्थाने सूर्यमण्डलभेदिनि ।
सोममण्डलसंस्थाने नमो मङ्गलमङ्गले ॥५॥
एकाकिनी विश्वमाते कालिमण्डलसंस्थिते ।
कालि पञ्चक्रमे नित्ये विश्वलक्ष्मी नमोस्तुते ॥६॥
ह्रीङ्कारेकारिणी नित्ये हूङ्कारपरिनाट्टते ।
फ्रेङ्कारनादसम्भूते नमस्ते कालनाशिनि ॥७॥
जय मङ्गले माता मे जय कालान्तकालहते ।
जय लक्ष्मी जयोद्भूते जय कालि नमोऽस्तुते ॥८॥
गजवक्त्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते वटुकाय च ।
क्षेत्रपाल नमस्तेऽस्तु कालासन नमोऽस्तुते ॥९॥
रक्तकाली नमस्तेऽस्तु श्वेतकाली नमोऽस्तुते ।
महाकाली नमस्तेऽस्तु मृत्युकाली नमोऽस्तुते ॥१०॥

भद्रकाली नमो नित्यं पराकाली नमोऽस्तुते ।
मार्तण्डकालिका देवी रुद्रकाली नमोऽस्तुते ॥११॥
हंसकाली नमस्तेऽस्तु कालकाली नमोऽस्तुते ।
व्योमकाली सूर्यकाली नमस्ते जय कालिके ॥१२॥
सृष्टिकाली नमस्तेऽस्तु स्थितिकाली नमोऽस्तुते ।
संहारकालिका देवी नमः फट्काररूपिणी ॥१३॥
अनाख्यायै नमस्तेऽस्तु भासाकाली नमोऽस्तुते ।
गुह्यकाली नमस्तेऽस्तु नमस्ते विश्वमातरः ॥१४॥
अतितेजजगन्माते सिद्धिदायै नमोऽस्तुते ।
नववक्त्रा महाकाली नीलजीमूतसन्निभे ॥१५॥
अष्टोत्तरशतार्धश्च दोर्दण्डेरूपशोभिते ।
सप्तविंशतिमुण्डस्थे नानाशस्त्रैः सुशोभिते ॥१६॥
सिंहफेरूकपित्रृक्षतार्क्षोमकरदन्तिनम् ।
हयन्नरमुखैः काली सर्वाम्नायैः सुपूजिते ॥१७॥
मकारे मालिनीसंस्था एकारे ईश्वरी स्थिता ।
निर्वाणेशी खमारूढा फट्काररेतिकालिका ॥१८॥
मकारे तु महामाया मकारे मोहिनीस्मृता ।
हाकारे चर्चिका देवी चङ्कारे चण्डघण्टिका ॥१९॥
णकारे णीलनी प्रोक्ता डकारे डामरीस्मृताः ।
यकारे वायुकाली च औङ्कारे वेदमातृका ॥२०॥
गकारे गगनेशि च एङ्कारे ऐन्द्रमातृका ।
शकारे शवरी पूज्या वकारे वारुणी स्मृता ॥२१॥
रिकारे सिद्धिदा सेव्या कालिचक्रप्रकाशिनी ।
गणनाथे नक्षत्रेण वटुकेन समन्विता ॥२२॥
ब्राह्मी माहेश्वरी स्कान्दी वैष्णवी दीर्घनासिका ।

वज्रिणी चर्चिका लक्ष्मी पञ्चचक्रे व्यवस्थिता ॥२३॥
भक्षयन्त्या जगत्सर्वमतृप्ताकामरूपिणी ।
या सान्तकारिणी काली कालसङ्कर्षणीं नमः ॥२४॥
या समस्ताज्वद्रूपा नानाकारोमहोल्बणा ।
सा कालग्रासरसिका कालसङ्कर्षणीं नमः ॥२५॥
लेलीह्यमान सुभृशं भीषणा या सुभैरवी ।
तां कालग्रासरसिकां कालसङ्कर्षणीं नमः ॥२६॥
अलात् चक्रवद्विश्वं क्रीडार्थं भ्राम्यते यया ।
तां कालग्रासरसिकां कालकालीं नमाम्यहम् ॥२७॥
ब्रह्माण्डकोटिलक्षाणि भस्मसात्कुरुते यया ।
तां कालग्रासरसिकां गुह्यकालीं नमाम्यहम् ॥२८॥
नौमि काली करालस्या प्रधानाचारिभक्षणिम् ।
क्रीडार्थं या करोच्चित्रां ब्रह्माण्डार्बुदमालिकाम् ॥२९॥

॥ श्रीगुह्यकाल्यामहामायास्तवं सम्पूर्णम् ॥

कृतिरियं कालिकानन्दनाथपादानाम् ॥

जगतजननी श्रीगुह्यकाली

पुस्तक परिचय

प्राचीन काल से भारत भूमि पर शक्ति उपासना का प्रचलन रहा है। प्रबल कलिकाल में महाशक्ति के काली स्वरूप की उपसना प्रशस्त है। भगवती काली के नाना वपुषों में 'गुह्यकाली' का प्राधान्य है। माता गुह्यकाली पौलस्त्य रावण, भगवान रामचन्द्र, भरत जी आदि की ईष्टदेवी हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ अथर्व वेद से सम्बद्ध हाहारावतन्त्र के आधार पर गुह्यकाली उपासना का सांगोपांग विवेचन करता है। ग्रन्थ में हाहारावतन्त्र के अनुसार मण्डपप्रवेश, न्यास, भूतशुद्धि, त्रिपात्र स्थापन, सप्तविंशती पीठपूजा, षोडशावरणपूजा, बलिदान, मन्त्रजप, होमपद्धति तथा उद्वासन पर्यन्त गुह्यकालीपूजा का सविस्तार वर्णन किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए मन्त्रभाग 'संस्कृत' में तथा व्याख्या-निर्देश 'हिन्दी' में दिये गये है। सुकुमार साधकों के हितार्थ लघुपूजाविधि का संकलन किया गया है। विविध मातृकाओं के आधार पर ग्रन्थ में अप्रकाशित कई दुर्लभ स्तोत्रों का संकलन किया गया है।

लेखक परिचय

लेखक आगमशास्त्र के अध्येता, शोधकर्ता, ब्लॉगर एवं वक्ता है जो तन्त्रागम की गौरवशाली गुरुपरम्परा से अपना सम्बन्ध रखते है। इन्होनें गुरुपम्परा से वेद तथा तन्त्र का अध्ययन विविध गुरूजनों की निश्रा में किया है। लौकिक शिक्षा, अभियान्त्रिकी, पुरातत्त्व तथा परामनोविज्ञान विषय में ग्रहण की है। आगमशास्त्र एवं आगमिक परम्परा के संरक्षण हेतु इन्हें वर्ष 2024 में 'युवाविप्र परिषद्', उज्जयिनी द्वारा 'आगमाचार्य' की उपाधि से अलंकृत किया गया है। लेखक के द्वारा पूर्व में 02 मूलपुस्तकों का लेखन, दुर्लभ मातृकाओं के आधार पर 08 पद्धतिग्रन्थों का संपादन तथा 25 से अधिक शोधपत्रों का प्रकाशन किया गया है।

Follow for more: @iChaukhambha

चौखम्भा
क्लासिका

WhatsApp Scan
to Order Books

₹ 395.00

ISBN 978-93-91730-78-9
9 789391 730789